सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 92, नई दिल्ली, बुधवार 11 जून 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 आयुष्मान योजना के लागू होने से अब तक लगभग 1000 से अधिक...
06 विकास के समांतर चुनौतियों की राह
08 सपनों के लिए अतीत से फरेब दुखत है

पिछले कई दिनों से परिवहन विभाग की आनलाइन आवेदन सेवा में परेशानी

दिल्ली परिवहन विभाग भारत देश का पहला आनलाइन आवेदन प्रक्रिया और फेस फ्री कार्यप्रणाली सेवा शुरू करने वाला राज्य।

संजय बाटला

नई दिल्ली। आप सभी उस बात से तो परिचित ही होंगे पर आप इस बात से परिचित नहीं होंगे की किस दिन से यह प्रक्रिया शुरू हुई है उस दिन से आज तक व्यवसायिक वाहन मालिकों को शांति और समयानुसार सेवा उपलब्ध नहीं हो पाई है।

पिछले 10 दिनों से परिवहन विभाग की आनलाइन आवेदन प्रक्रिया द्वारा एचपीसी के जमा किए गए आवेदन पेंडिंग पड़े हैं और शिकायतों के बाद भी ठीक नहीं किया जा रहा।

पिछले चार दिनों से सभी ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया ठप पड़ी है और कोई ठीक करने को तैयार नहीं।

फिटनेस प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए आनलाइन अपॉइंटमेंट भी समय पर उपलब्ध नही

और आटो शाखा का डीटीओ आनलाइन वाहन पर वाहन स्क्रैप सर्टिफिकेट की जांच किए बिना ही नए

वाहन खरीदने की एलओआई जाती किए जा रहा है

और डीटीओ हेडक्वार्टर सड़को पर चलने की शर्तों के अनुसार वाहन नहीं होने पर भी वाहन पंजीकृत किए जा रहा हैं।

कैसा है ना परिवहन विभाग दिल्ली और उसकी ऑनलाइन फेस फ्री आवेदन प्रक्रिया और यहां की कर रहे डीटीओ और कार्यवाही नहीं करने वाले आला अधिकारी ?

दिल्ली सरकार के विरूद्ध ऑटो-टैक्सी संगठनों का विरोध प्रदर्शन 18 को...

दिल्ली में ऑटो और टैक्सी चालक संगठन 18 जून को सचिवालय के पास विरोध प्रदर्शन करेंगे। उनकी मांग है कि सरकार ऑटो चालक कल्याण बोर्ड का गठन करे और चालकों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करे। संगठनों ने बाइक टैक्सी और अन्य अवैध वाहनों पर भी रोक लगाने की मांग की है। चालकों का कहना है कि सरकार ने चुनाव के दौरान किए गए वादे पूरे नहीं किए हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार के विरूद्ध ऑटो-टैक्सी चालक संगठनों ने 18 जून को सचिवालय के नजदीक विरोध प्रदर्शन की घोषणा की है। जिसमें सत्तारूढ़ भाजपा सरकार से विधानसभा चुनाव के दौरान किए गए ऑटो चालक कल्याण बोर्ड के गठन तथा चालकों को सामाजिक सुरक्षा के लाभ से जोड़ने के संकल्पों को पूरा करने की मांग की जाएगी।

दिल्ली ऑटो रिक्शा संघ व दिल्ली टैक्सी यूनियन की महामंत्री राजेंद्र सोनी ने बताया कि मुख्यमंत्री तथा परिवहन मंत्री को छह बार मांगपत्र भेजी गई है तथा उनसे संकल्पों को पूरा करने का आग्रह किया गया है।

इसी तरह, बाइक टैक्सी में अवैध रूप से चलते निजी नंबरों की बाइकों, कैब सेवा में दूसरे राज्यों की कारों तथा जुगाड़ रिक्शा पर भी रोक लगाने की मांग की गई है, लेकिन उनकी मांगों पर सरकार की ओर से सकारात्मक रूख नहीं आया है, जिसके बाद प्रदर्शन का निर्णय लेना पड़ा है।

आगे उन्होंने कहा कि दिल्ली में 27 वर्ष बाद भाजपा की सरकार लाने में ऑटो-टैक्सी चालकों ने बड़ा योगदान दिया है, इसलिए वह लोग टकराव नहीं चाहते हैं, लेकिन सरकार को भी अपने संकल्पों पर ईमानदारी दिखानी होगी।

इस विरोध प्रदर्शन में दिल्ली ऑटो रिक्शा संघ, दिल्ली प्रदेश टैक्सी यूनियन, टैक्सी ऑटो रिक्शा ड्राइवर्स संघर्ष समिति, प्रगतिशील ऑटो रिक्शा ड्राइवर्स यूनियन समेत कुछ अन्य संगठनों के टैक्सी ऑटो चालक शामिल होंगे।

कनॉट प्लेस की बदलेगी सूरत, इन तीन सड़कों का होगा कायाकल्प; जल्द शुरू होगा काम

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) ने दिल्ली के दिल कनॉट प्लेस को सुधारने का काम शुरू कर दिया है। कनॉट प्लेस की तीनों मुख्य सड़कों का नवीनीकरण होगा टूटे फुटपाथ और ग्रेनाइट पत्थर ठीक किए जाएंगे। पर्यटकों को बेहतर अनुभव कराने के लिए एनडीएमसी सार्वजनिक इलाकों का सुधार करेगी और दुकान मालिकों से अपनी संपत्तियाँ ठीक कराने का अनुरोध करेगी।

नई दिल्ली। दिल्ली का दिल कहे जाने वाले कनॉट प्लेस की हालत सुधारने के लिए नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) ने काम शुरू कर दिया है।

जल्द ही कनॉट प्लेस के अंदर के मौजूद तीनों प्रमुख सड़कों को पुनः बनाया जाएगा तो वहीं, जगग-जगह टूटे पड़े फुटपाथ और ग्रे नाइट पत्थर को भी ठीक किया जाएगा।

एनडीएमसी अलग-अलग तरीके से इसको सुधारने के लिए काम कर रही है। कनॉट प्लेस के इनर, मीडिल और आउटर सर्किल को पुनः बनाने के लिए टेंडर जारी कर चुका है जल्द ही इस पर काम शुरू होने की उम्मीद है।

कनॉट प्लेस से है दिल्ली की विश्व में पहचान

एनडीएमसी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि कनॉट प्लेस की पहचान केवल दिल्ली ही नहीं देश के विभिन्न राज्यों के साथ ही विदेश तक है। इसलिए दिल्ली में आने वाले देश-विदेश के पर्यटक कनॉट प्लेस जरूर घूमने आते हैं।

इसकी वजह से यहां पर अक्सर चहल-पहल नजर आती है। चूंकि पर्यटकों को अच्छा अनुभव हो इसलिए एनडीएमसी ने इसकी दशा सुधारने का निर्णय लिया है।

कनॉट प्लेस में रीगल के सामने टूटी पड़ी फुटपाथ पर लगी जालियां। हरीश कुमार

इसमें हम सड़कों की स्थिति को ठीक करेंगे ही साथ ही फुटपाथ से लेकर गलियारे में पगे ग्रेनाइट पत्थर और जगह-जगह लगीं बेंच, कूड़ेदानों और पौधों के आस-पास के इलाके को ठीक किया जाएगा।

अधिकारी ने आगे बताया कि कुछ जगह पर ग्रेनाइट पत्थर टूट गया है तो कई जगह फुटपाथ की टाइलें भी जर्जर हो गई है। जिन्हें जरुरत के हिसाब से बदला जाएगा। वहीं, कई स्थानों पर मरम्मत भी की जाएगी।

दुकानदारों से भी कराया जाएगा संपत्तियों को ठीक

कनॉट प्लेस में जो दुकानें हैं वह निजी संपत्तियां हैं। इसलिए उनकी मरम्मत को तकनीकी रूप से एनडीएमसी नहीं कर सकती है। इसलिए एनडीएमसी कनॉट प्लेस की स्थिति सुधारने के लिए सार्वजनिक इलाके को ठीक कर रही है।

वहीं, कुछ स्थानों पर दुकानों व शोरूम की स्थिति ठीक नहीं है उसे भी संपत्ति मालिकों से ठीक कराया जाएगा। ताकि कनॉट प्लेस की स्थिति ठीक लगे।

एनडीएमसी के एक अधिकारी ने बताया कि एनडीएमसी के एक्ट में यह प्रविधान है कि जर्जर और खराब इमारतों को ठीक कराने के लिए संपत्ति मालिकों को नोटिस दे सकती है और उसको मरम्मत कराने के लिए बाध्य कर सकती है।

फिर से विरोध प्रदर्शन का आह्वान; मांगों पर ध्यान न दिए जाने पर 8 जुलाई से ड्राइवर्स यूनियन अनिश्चित काल के लिए कार्य बंद

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : ड्राइवर्स यूनियन ने फिर से स्टीयरिंग हड़ताल की चेतावनी दी है। ड्राइवर्स यूनिटी फोरम ने छह मांगों को लेकर हड़ताल का आह्वान किया है। अगर मांगें पूरी नहीं होती हैं तो ड्राइवर्स यूनिटी फोरम 8 जुलाई से अनिश्चितकालीन स्टीयरिंग हड़ताल करेगा।ड्राइवर्स एसोसिएशन 8 जुलाई से अनिश्चितकालीन हड़ताल करेगी।छह सूत्री मांगें हैं: ऑटो चालकों को ओडिशा मोटर ट्रांसपोर्ट चालक एवं श्रमिक कल्याण बोर्ड में शामिल किया जाए। जनाक्रोश का शिकार चालक समुदाय की सुरक्षा के लिए विशेष कानून बनाया जाए। पेशेवर चालकों को 60 वर्ष की आयु के बाद विशेष भत्ता दिया जाए। हर 100 किलोमीटर के अंतराल पर वाहनों के लिए पार्किंग तथा चालकों के आराम के लिए विश्राम गृह एवं शौचालय की व्यवस्था की जाए। ओडिशा की हर खदान एवं फैक्ट्री में 70 प्रतिशत नौकरियां ओडिशा के चालकों को दी जाएं।

नीचे मेट्रो, ऊपर दो फ्लाईओवर; पटना को मिलेगा बिहार का पहला डबल डेकर पुल

पटना में पहली बार तीन लेयर में बुधवार से गाड़ियां दौड़ेगी। 11 जून को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार डबल डेकर पुल का उद्घाटन करेंगे। जिससे अशोक राजपथ, पीएमसीएच, पटना विश्वविद्यालय और साइंस कॉलेज के क्षेत्र में यातायात दबाव को कम करेगा।

पटना। राजधानी पटना को बुधवार को बड़ी सौगात मिलने जा रही है। 11 जून को मुख्यमंत्री पटना के पहले डबल डेकर पुल जनता को समर्पित करने वाले हैं। इसके पूर्ण होने से अशोक राजपथ पर यातायात की व्यवस्था सुगम होगी। परियोजना पूर्ण होने के पाश्चात्य यह आवागमन के लिए खुलने वाला बिहार का पहला डबल-डेकर पुल होगा। इससे शहरवासियों को तीन लेयर में यात्रा करने की सुविधा मिलेगी। वहीं मेट्रो प्रोजेक्ट के साथ डबल डेकर पुल की कनेक्टिविटी शहर की ट्रैफिक प्रबंधन को और मजबूत करेगी।

इससे पहले अशोक राजपथ में निर्माणाधीन डबल डेकर पुल का पथ निर्माण मंत्री नितिन नवीन ने निरीक्षण किया। उन्होंने साइंस कॉलेज से पीएमसीएच होते हुए गांधी मैदान स्थित कारगिल चौक तक बन रहे एलिवेटेड कॉरिडोर के निर्माण कार्यों को देखा। मंत्री ने बताया कि पटना कॉलेज मेन गेट से बीएन कॉलेज मेन गेट तक 1.45 किलोमीटर का निचला डेक (टियर-1) तथा कारगिल चौक से पटना विश्वविद्यालय गेट (शताब्दी द्वार) तथा पटना सायंस कॉलेज तक 2.2 किलोमीटर का ऊपरी डेक (टियर-2) का काम पूरा हो गया है। इसके साथ ही उपलब्ध भूमि पर सर्विस रोड का 90 प्रतिशत निर्माण कार्य भी पूर्ण कर लिया गया है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

अवैध ई-रिक्शा चार्जिंग स्टेशन बने जानलेवा, लोग पूछ रहे ये सवाल

पूर्वी दिल्ली में अवैध ई-रिक्शा चार्जिंग स्टेशन धड़ल्ले से चल रहे हैं जिससे शॉर्ट-सर्किट और बैटरी फटने से कई जानें जा चुकी हैं। ब्रह्मपुरी सीलमपुर जैसे इलाकों में घरेलू बिजली कनेक्शन का उपयोग करके चार्जिंग स्टेशन चलाए जा रहे हैं लेकिन पुलिस और प्रशासन की ओर से कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। स्थानीय लोगों में इस लापरवाही के प्रति आक्रोश है।

दिल्ली। यमुनापार में धड़ल्ले से अवैध रूप से ई-रिक्शा चार्जिंग स्टेशन चल रहे हैं। शायद ही कोई क्षेत्र ऐसा होगा जहां पर अवैध चार्जिंग स्टेशन न हों। पिछले एक माह में अवैध चार्जिंग स्टेशन में शॉर्ट-सर्किट व चार्जिंग के दौरान बैटरी फैटने से पांच लोगों की जान चुकी है।

मजाल है पुलिस, निगम व जिला प्रशासन पर रत्तीभर भी कोई फर्क पड़ा हो। हादसे के बाद भी विभाग सोए हुए हैं और हादसे थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। सत्ता में बैठे उन जनप्रतिनिधियों से भी लोग सवाल पूछ रहे हैं कि आखिर इन पर अवैध चार्जिंग स्टेशनों पर लगाम लगेगी भी या नहीं।

ब्रह्मपुरी, चौहान बांगर, जाफराबाद, सीलमपुर, करतार नगर, उस्मानपुर गांव, मौजपुर गांव, बाबरपुर, नूर ए इलाही, घोंडा, भजनपुरा, खजूरी, हर्ष विहार, सबोली, कोंडली, त्रिलोकपुरी, विश्वास नगर, भीक्म सिंह कालोनी, ताहिरपुर, नंद नगरी, सुंदर नगरी, चांदबाग, मुस्तफाबाद, सोनिया विहार, सभापुर, कांति नगर, गांधी नगर, कृष्णा नगर, शाहदरा, राम नगर, सीमापुरी, कल्याणपुरी, शकरपुर, लक्ष्मी नगर, खुरेजी समेत कई क्षेत्रों में अवैध चार्जिंग स्टेशन चल रहे हैं।

स्थानीय लोगों ने बताया कि चार्जिंग स्टेशन चलाने वाले लोग किसी बड़े मकान का भू-तल किराये पर लेते हैं। घरेलू बिजली कनेक्शन पर ही चार्जिंग स्टेशन शुरू कर देते हैं। चार्जिंग के लिए अलग-अलग प्वाइंट नहीं बनाएं जाते हैं, तार भी खुले पड़े रहते हैं। कई बार उन तारों में शॉर्ट-सर्किट होता है और यह आग की वजह बनता है। कोई विभाग यह झांकने नहीं जाता कि अवैध चार्जिंग स्टेशन कब से चल रहा है और किसकी शह पर चल रहा है।

स्थानीय लोगों ने बताया कि चार्जिंग स्टेशन चलाने वाले लोग किसी बड़े मकान का भू-तल किराये पर लेते हैं। घरेलू बिजली कनेक्शन पर ही चार्जिंग स्टेशन शुरू कर देते हैं। चार्जिंग के लिए अलग-अलग प्वाइंट नहीं बनाएं जाते हैं, तार भी खुले पड़े रहते हैं।

भैरव अपने भक्तों को भयानक शत्रुओं, लालच, वासना और क्रोध से बचाता है ..

भैरव शब्द की उत्पत्ति भैरु से हुई है, जिसका अर्थ है ₹भयभीत₹।

भैरव का अर्थ है ₹बहुत भयावह रूप₹। इसे भय को नष्ट करने वाले या भय से परे रहने वाले के रूप में भी जाना जाता है। सही व्याख्या यह है कि वह अपने भक्तों को भयानक शत्रुओं, लालच, वासना और क्रोध से बचाता है।

भैरव अपने भक्तों को इन दुश्मनों से बचाता है। ये दुश्मन खतरनाक हैं क्योंकि ये इंसानों को कभी भी भगवान की तलाश नहीं करने देते। इसलिए वह परम या परम हो जाता है।

एक विचारधारा है जो कहती है कि शिव ने स्वयं भैरव की रचना की। दहुरासुर नाम से एक राक्षस था जिसे एक वरदान मिला था कि उसे केवल एक महिला द्वारा ही मारा जा सकता है। पार्वती द्वारा उन्हें मारने के लिए काली का आह्वान किया गया था। काली के क्रोध ने राक्षस को मार डाला।

दानव को मारने के बाद, उसका क्रोध एक बच्चे के रूप में बदल गया। काली ने बच्चे को अपना दूध पिलाया। शिव ने काली और बच्चे दोनों को अपने साथ मिला लिया। शिव के इस विलीन रूप से, भैरव अपने आठ रूपों (अष्टांग भैरव) में प्रकट हुए। चूँकि भैरव को शिव ने बनाया था, इसलिए उन्हें शिव के पुत्रों में से एक कहा जाता है।

पुराण भी भैरव के विभिन्न संस्करण देते हैं। इस संस्करण में, देवताओं और राक्षसों के बीच युद्ध हुआ। राक्षसों को मिटाने के लिए, शिव ने काल भैरव की रचना की, जिनसे अष्टांग भैरव बनाए गए। इन अष्ट भैरवों का विवाह अष्ट मातृकाओं से हुआ। इन अष्ट भैरवों और अष्ट मातृकाओं के भयानक रूप हैं। इन अष्ट भैरवों और अष्ट मातृकाओं में से, 52 भैरव और 64 योगिनियाँ बनाई गईं।

आमतौर पर शिव मंदिरों में, भैरव की मूर्तियाँ उत्तर दिशा में, दक्षिणी दिशा की ओर स्थित होती हैं। उन्हें कृष्णपाल भी कहा जाता है। वह चार हाथों के साथ एक स्थायी स्थिति में दिखाई देता है। उनके हथियार एक ड्रम, पाशा, त्रिशूल और खोपड़ी हैं। भैरव के कुछ रूपों में, चार से अधिक हाथ हैं। वह बिना ड्रेस और डॉग के दिखाई देता है। उसके हथियार, कुत्ते, उभरे हुए दाँत, भयानक रूप और लाल फूलों वाली एक माला सभी उसे भयावह रूप देते हैं।

सभी शिव मंदिरों में, नियमित पूजा (श्रद्धा) अनुष्ठान सूर्य से शुरू होता है और भैरव के साथ समाप्त होता है। भैरव को घी स्नान (अभिषेक), लाल फूल, घी का दीपक, अखंड नारियल, शहद, उबला हुआ भोजन, रेशेदार फल आदि पसंद हैं, यदि भैरव मूर्ति पश्चिम की ओर मुंह करके बैठती है, तो यह अच्छा है; दक्षिण का सामना करना पड़ मध्यम है; पूर्व का सामना करना अच्छा नहीं है।

भैरवी की प्रार्थना करने का सही समय आधी रात है। आधी रात को कहा जाता है कि भैरव और उनकी पत्नी भैरवी अपने भक्तों को दर्शन (दर्शन) देंगे। शुक्रवार मध्यरात्रि सबसे उपयुक्त समय है। अर्चना (अर्चन।) में भैरव के लिए आठ प्रकार के फूलों और पत्तियों का उपयोग किया जाता है।

भैरव प्रकट रूप या शुद्ध ₹मैं₹ चेतना का अंतिम रूप है। इस रूप को स्वर्णकार भैरव कहा जाता है। उसके पास लाल या नीला रंग है और वह एक सुनहरी पोशाक पहने हुए है। उसके सिर पर चंद्रमा है। उसके चार हाथ हैं, जिनमें से एक में वह एक स्वर्ण पात्र रखता है। वह धन और समृद्धि देता है।

मंगलवार के दिन पूजा करने से शीघ्र फल मिलता है। कुछ प्राचीन ग्रंथों में, उन्हें बत्तीस हाथ, एक पक्षी का आकार, सुनहरा रंग, भयानक दांत और कूल्हे के ऊपर एक मानव रूप कहा गया है। उसकी पूजा करने से शत्रुओं का नाश होता है।

भैरव के कुछ रूप आठ कार्डिनल बिंदुओं के संरक्षक हैं। 64 भैरव हैं। इन 64 भैरवों को 8 श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है और प्रत्येक श्रेणी का नेतृत्व एक प्रमुख भैरव द्वारा किया जाता है। प्रमुख आठ भैरवों को अष्टांग भैरव कहा जाता है। अष्ट भैरव इस ब्रह्मांड की 8 दिशाओं को नियंत्रित करते हैं। प्रत्येक भैरव के अधीन सात उप-भैरव हैं, कुल 108 भैरव हैं।

संत कबीर जयंती आज

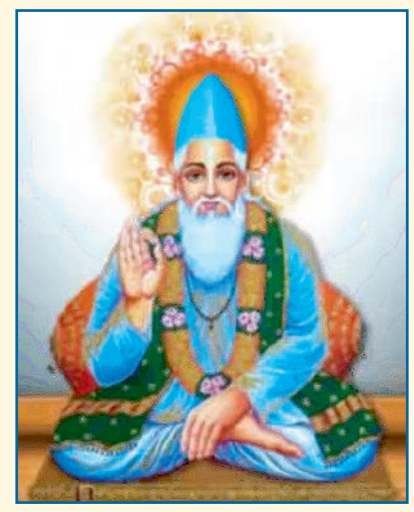

संत कबीर जयंती संत कबीर दास के सम्मान में मनाई जाती है, जो उत्तर भारत में एक रहस्यवादी संत और कवि थे। कबीर का जन्म बनारस (तत्कालीन वाराणसी) में मुस्लिम माता-पिता के घर हुआ था, जो बहुत कम उम्र में ही अध्यात्म और धर्म की ओर मुड़ गए थे। संत कबीर जयंती कबीर को समर्पित एक शुभ दिन के रूप में मनाई जाती है। संत कबीर जयंती भारत में 15वीं शताब्दी के एक प्रमुख कवि-संत और समाज सुधारक संत कबीर की जयंती को समर्पित एक उत्सव है। उनकी शिक्षाओं में ईश्वर की भक्ति, कर्मकांडों की अस्वीकृति और विभिन्न धार्मिक समुदायों की एकता के महत्व पर जोर दिया गया था। 15वीं शताब्दी के हिंदू रहस्यवादी गुरु गुरु रामानंद की शिक्षाओं का पालन करने के बाद उनके जीवन में एक बड़ा बदलाव आया, जिन्होंने कबीर दास नाम गढ़ा। हालाँकि, कबीर दास के बारे में सबसे कठिन बात यह है कि उन्हें ब्राह्मण, सूफी या वैष्णव के रूप में वर्गीकृत करना असंभव है। कबीर दास कभी खुद को अल्लाह का बच्चा और कभी राम का बच्चा बताते थे। यह त्यौहार हिंदू महीने ज्येष्ठ की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है, जो आमतौर पर जून में पड़ता है।

कबीर दास ने अपने पूरे जीवन में किसी भी धर्म का पालन न करने की ऐसी अनूठी परंपरा को बनाए रखा कि लोगों के बीच उन्हें हिंदू या मुसलमान कहने में भ्रम की स्थिति पैदा हो गई। हालांकि, उन्हें अपनी कलात्मक तीक्ष्णता के लिए श्रेय दिया जाता है, जिसके साथ वे शब्दों की सुंदर व्यवस्था के साथ दिव्य भावनाओं को व्यक्त करते थे। पेशे से, संत कबीर दास एक बुनकर थे जो अपना अधिकांश समय करघे पर बिताते थे, लेकिन जिस तरह से उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों के पारंपरिक क्षेत्रों में समान रूप से जादू बुना था, वह कुछ ऐसा है जिसे कभी भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

संत कबीर दास की किंवदंतियाँ

==========

संत कबीर दास 1518 में गोरखपुर के पास मगहर में भगवान के निवास पर पहुँचे। हालाँकि, उनके अंतिम संस्कार कैसे किए जाएँ, इस बारे में तुरंत विवाद शुरू हो गया। ऐसा माना जाता है कि हिंदू और मुसलमान दोनों ने ही अंतिम संस्कार करने के लिए शव पर दावा किया था। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब कबीर दास ने खड़े होकर उनसे अपने शव को उठाने और नीचे देखने के लिए कहा। वहाँ फूलों की एक सुंदर कतार के अलावा कुछ नहीं था। भक्त और उनके अनुयायी अवाक रह गए जब हिंदुओं ने कुछ फूलों के साथ वाराणसी की ओर प्रस्थान किया और बाकी फूलों को मुसलमान मगहर ले गए। संत कबीर एक कवि-संत थे जिनके काम ने हिंदू और मुस्लिम परंपराओं को जोड़ा। उनके भजन और दोहे भक्ति, समानता और आध्यात्मिकता के विषयों को संबोधित करते हैं, जो उन्हें भक्ति आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति बनाते हैं। कबीर दास अपने जीवन में कई घटनाओं से प्रभावित हुए, जिसने उन्हें और भी लोकप्रिय बना दिया। उनके आध्यात्मिक मार्ग को तोड़ने के लिए, उनके पास एक खूबसूरत वेश्या भेजी गई थी, लेकिन कोई प्रभावी परिणाम नहीं मिला। इसी तरह, उन्हें सिकंदर लोदी के दरबार में ले जाया गया, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि उनके पास कुछ जादुई शक्तियाँ हैं। आखिरकार, उन्हें वर्ष 1495 में वाराणसी शहर छोड़ने के लिए मजबूर किया गया, जिसके बाद वे कभी वापस नहीं लौटे। अपने जीवन के इस दौर में, कबीर ने पूरे उत्तर भारत का दौरा किया और लोगों में एकता का संदेश फैलाया। कबीर दास के रहस्यमयी गीतों ने उन्हें 15वीं शताब्दी के दौरान एक प्रतिष्ठित चरित्र बना दिया। परिपक्व सोच का प्रदर्शन करते हुए, उन्हें लोगों के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर में उनके अनोखे अंदाज़ में कहे गए कुछ एक-लाइनरों के लिए सबसे ज़्यादा याद किया जाता है। उदाहरण के लिए, उन्होंने अपनी भावनाओं को खूबसूरती से शब्दों में व्यक्त किया जैसे कि "पुराण और कुरान केवल शब्द हैं" और भगवान "न तो काबा में हैं और न ही कैलाश में"। अपने पूरे जीवन में, कबीर ने सक्रिय रूप से मंदिरों और मस्जिदों दोनों की निंदा की और कहा कि भगवान सभी में हैं और हर जगह मौजूद हैं।

संत कबीर का इतिहास

==========

संत कबीर 15वीं सदी के भारतीय कवि-संत, दार्शनिक और रहस्यवादी थे, जिनकी शिक्षाओं का भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं पर स्थायी प्रभाव पड़ा है। उनका जीवन और कार्य विभिन्न समुदायों के लोगों को प्रेरित करते रहते हैं। यहाँ उनके इतिहास पर एक विस्तृत नज़र डाली गई है:

प्रारंभिक जीवन

जन्म: माना जाता है कि कबीर का जन्म 1440 ई. में भारत के उत्तर प्रदेश के एक शहर वाराणसी में हुआ था। उनकी सटीक जन्म तिथि और वर्ष विभिन्न व्याख्याओं के अधीन हैं, लेकिन आमतौर पर जून को उनके जन्म का महीना माना जाता है।

पृष्ठभूमि: कबीर का जन्म जुलाहों (जुलाहा) के परिवार में हुआ था और कहा जाता है कि उनका पालन-पोषण एक मुस्लिम परिवार में हुआ था। हालाँकि, वे उस समय की आध्यात्मिक शिक्षाओं से बहुत प्रभावित थे और किसी एक धार्मिक परंपरा का सख्ती से पालन नहीं करते थे।

आध्यात्मिक यात्रा

==========

प्रभाव: कबीर भक्ति आंदोलन से प्रभावित थे, जो कर्मकांडों के बजाय ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध पर जोर देता था। वे हिंदू और सूफी दोनों परंपराओं से भी परिचित थे, और उन्होंने अपनी शिक्षाओं में दोनों के तत्वों का मिश्रण किया।

शिक्षाएँ: कबीर का दर्शन एक सर्वोच्च ईश्वर के विचार और सांप्रदायिक विभाजन की अस्वीकृति पर केंद्रित था। उन्होंने कर्मकांडों की तुलना में भक्ति के विचार को बढ़ावा दिया और जाति व्यवस्था और संगठित धर्म की आलोचना की। उनकी शिक्षाएँ उनकी कविताओं के माध्यम से व्यक्त की गईं, जिसमें ईश्वर के प्रत्यक्ष अनुभव और जीवन जीने के नैतिक और नैतिक तरीके पर जोर दिया गया।

साहित्यिक योगदान

कविता: कबीर की कविताएँ, जिन्हें कबीर के दोहे (कबीर के दोहे) और कबीर ग्रंथावली (कबीर की रचनाओं का संग्रह) के नाम से जाना जाता है, में भक्ति भजन और दार्शनिक प्रवचन शामिल हैं। उनकी कविताएँ बोलचाल की भाषा में लिखी गई हैं, जिससे उनकी शिक्षाएँ आम लोगों तक पहुँचती हैं।

विषयवस्तु: उनकी कविताएँ ईश्वरीय प्रेम, मानवीय समानता और कर्मकांडीय पूजा की निरर्थकता के विषयों को संबोधित करती हैं। वे अक्सर गहन आध्यात्मिक सत्य को व्यक्त करने के लिए सरल, रोज़मर्रा की भाषा और रूपकों का इस्तेमाल करते थे।

परंपरा

==========

प्रभाव: कबीर की शिक्षाओं का भक्ति आंदोलन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, जो भारतीय आध्यात्मिकता में एक भक्ति प्रवृत्ति थी, जिसका उद्देश्य सांप्रदायिक विभाजन से ऊपर उठकर ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत भक्ति पर ध्यान केंद्रित करना था।

अनुयायी: उनके कई शिष्य और अनुयायी थे जिन्होंने उनकी मृत्यु के बाद भी उनके संदेश का प्रचार-प्रसार जारी रखा। उनके अनुयायियों में विभिन्न पृष्ठभूमि के लोग शामिल थे, जो उनकी शिक्षाओं की समावेशीता को दर्शाता है।

संत कबीर दास: कबीर को अक्सर संत कबीर दास के नाम से जाना जाता है, जिसमें ₹संत₹ का अर्थ ₹संत₹ और ₹दास₹ का अर्थ विनम्रता या सेवाभाव है। उनके भजन और दोहे विभिन्न ग्रंथों में संकलित किए गए हैं और उनके अनुयायियों द्वारा उनका पाठ और आदर किया जाता है।

स्मरणोत्सव

==========

संत कबीर जयंती: संत कबीर जयंती उनके अनुयायियों द्वारा प्रार्थना, उनके भजनों के पाठ और सामुदायिक समारोहों के माध्यम से मनाई जाती है। यह उनकी शिक्षाओं और उनके द्वारा प्रचारित प्रेम, एकता और भक्ति के मूल्यों पर चिंतन करने का समय है।

जीवन में बहुत सी घटनाएं घटतीं हैं, उनके समाधान होते हुए भी, हम परिस्थिति के अनुकूल सही समाधान ढूंढ नहीं पाते।

यदि पता भी चल जाये तो उपयुक्त समय पर उपयुक्त समाधान अपना नहीं पाते। जैसे कभी-कभी किसी व्यक्ति को बोलते समय गले में 'खिच खिच' हो जाती है। तब ठीक से शब्दों का उच्चारण नहीं हो पाता। व्यक्ति शब्दों को स्पष्ट नहीं बोल पाता। ऐसी स्थिति में हम कहते हैं कि यह शहद की गोली/कंठ शोधक औषधि चूस लो इससे आपके गले की यह 'खिच खिच' ठीक हो जाएगी। इसी प्रकार कभी-कभी लोग आपस में क्रोधवश कठोर भाषा बोल देते हैं। एक दूसरे के सम्मान का ध्यान नहीं रखते, ऐसी स्थिति में आपस में 'किच-किच' हो जाती है। उसको दूर करने के लिए मीठी/सम्मानजनक भाषा का प्रयोग करने से आपस की 'किच-किच' दूर हो जाती है। और फिर से परस्पर प्रेम बढ़ जाता है। ध्यान रहे कि यदि गले में 'खिच खिच' हो तो कंठ शोधक औषधि का सेवन कर लें और यदि आपस में 'किच-किच' हो गई हो तो मीठी भाषा का प्रयोग कर लें तो दोनों समस्याएं दूर हो जाएंगी और जीवन को आनंददायक बना जाएंगी।

भुने चने

भुने चने खाने से हमारे शरीर को बहुत लाभ होता है! वही जब भुने चने के साथ गुड़ का सेवन किया जाता है तो इसका फायदा कई गुना अधिक हो जाता है! खासकर पुरुषों के लिए इसे खाना काफी फायदेमंद होता है! अक्सर पुरुष बॉडी बनाने के लिए जिम जाकर घंटों पसीने बहाते हैं! ऐसे में उन्हें गुड़ और चने का सेवन करना चाहिए! इसके सेवन करने से मसल्स मजबूत होते हैं और शरीर को नई ऊर्जा प्राप्त होती है!

भुने चने और गुड़ खाने के फायदे जानकर चौंक जाएंगे, लड़के जरूर पढ़ें...

चलिए जानते हैं भुने चने और गुड़ खाने से फायदे-

1. मसल्स-

गुड़ और चने में प्रचुर मात्रा में प्रोटीन मौजूद होता है जो मसल्स को मजबूत बनाने में मददगार होता है! इसलिए यदि आप मसल्स को मजबूत बनाना चाहते हैं तो प्रतिदिन आपको गुड और भुने चने का सेवन करना चाहिए!

2. चेहरा-

गुड़ और भुने चने का सेवन करने से चेहरे की चमक बढ़ती है क्योंकि इसमें जिंक मौजूद होता है जो त्वचा पर निखार लाने का काम करता है और नियमित इसके कुछ दिनों तक सेवन करने से आप पहले से ज्यादा स्मार्ट लगने लगते हैं!

3. मोटापा-

यदि आप मोटापे को कम करना चाहते हैं तो गुड़ और चना आपके लिए बेहतर साबित हो सकता है! कई लोग वजन कम करने के लिए जिम जाकर एक्सरसाइज करते हैं! उन्हें गुड़ और चना का सेवन करना चाहिए! क्योंकि गुड़ और चने एक साथ खाने से शरीर का मेटाबॉलिज्म आता है जो मोटापा को कम करने में मददगार होता है!

4. कब्ज-

गुड़ और चने में फाइबर प्रचुर मात्रा में होता है जो पाचन शक्ति को ठीक रखता है और कब्ज, गैस, एसिडिटी की समस्या से राहत दिलाता है!

5. दिमाग होता है तेज-

गुड़ और चने का सेवन एक साथ करने से याददाश्त शक्ति तेज होती है क्योंकि इसमें विटामिन बी6 प्रचुर मात्रा में होता है जो याददाश्त को बढ़ाता है!

6. दांतो के लिए-

इसमें फास्फोरस होता है जो दांतों के लिए काफी लाभदायक होता है! इसकी नियमित सेवन करने से दांत मजबूत होते हैं और जल्दी नहीं टूटते हैं!

7. हड्डियों के लिए-

गुड़ और चने में कैल्शियम की मात्रा अधिक होती है जो हड्डियों के लिए बहुत लाभदायक होता है! यह हड्डियों को मजबूत बनाता है और इसके सेवन से हड्डियों से जुड़ी बीमारियों से राहत मिलता है!

चंद्रमा की 16 कलाओं का उल्लेख, भारतीय पौराणिक साहित्य के अनुसार क्या है एवं मोक्षदायिनी सप्तपुरियां कौन कौन सी हैं आओ जानें

इन कलाओं को ₹ कला ₹ के रूप में चंद्रमा के विभिन्न रूपों और स्थितियों से जोड़ा गया है। ये कलाएँ चंद्रमा के क्षय-वृद्धि के विभिन्न चरणों (कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष) को दर्शाती हैं। हर कला का अपना महत्व है और यह चंद्रमा के पूर्णता और अर्धचंद्राकार स्थितियों के बीच के चरणों को परिभाषित करती हैं।

चंद्रमा की 16 कलाएँ इस प्रकार हैं

1. अमृता – यह कला जीवन शक्ति और अमरत्व का प्रतीक मानी जाती है।

2. मनदा – इस कला का संबंध मन को स्थिर रखने और मन की चंचलता को नियंत्रित करने से है।

3. पुष्यी – यह कला विकास और उन्नति का प्रतीक है, विशेषकर मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य से।

4. तुष्टि – संतोष और तृप्ति की कला, जो जीवन में संतुलन और संतोष का अनुभव कराती है।

5. पुष्टि – शारीरिक बल और समृद्धि प्रदान करने वाली कला।

6. रति – प्रेम और आकर्षण की कला, जो संबंधों और भावनाओं में मधुरता लाती है।

7. धृति – धैर्य और आत्म-नियंत्रण की कला, जो कठिन परिस्थितियों में भी संतुलन बनाए रखती है।

8. शशिनी – यह कला चंद्रमा की सुंदरता और शीतलता का प्रतीक मानी जाती है।

9. चंद्रिका – यह कला चंद्रमा के शीतल प्रकाश और उसके सौंदर्य से जुड़ी है।

10. कांता – आकर्षण और मोहकता की कला, जो व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में आकर्षण पैदा करती है।

11. ज्योत्सना – यह कला चंद्रमा के प्रकाश की शीतल और सुकून देने वाली विशेषताओं का प्रतीक है।

12. श्री – समृद्धि, वैभव, और सौंदर्य की कला, जो संपन्नता और विकास को दर्शाती है।

13. प्रभा – यह कला आभा और प्रकाश का प्रतीक है, जो आंतरिक और बाहरी रूप से उज्ज्वलता प्रदान करती है।

14. विभूति – ऐश्वर्य, शक्ति, और महानता का प्रतीक, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व में विभूति लाती है।

15. संध्या – संध्या समय की कला, जो दिन और रात के मिलन का प्रतीक है।

16. पूर्णा – पूर्णता की कला, जो संपूर्णता और उपलब्धि का प्रतीक है। यह कला चंद्रमा की पूर्णिमा का प्रतिनिधित्व करती है।

चंद्रमा की ये 16 कलाएँ प्राकृतिक संतुलन, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य, प्रेम, शांति, और समृद्धि से जुड़ी हैं। इनका उल्लेख आध्यात्मिक और ज्योतिषीय दृष्टिकोण से भी किया जाता है, और ये मानव जीवन पर चंद्रमा के प्रभाव को दर्शाती हैं।

आचार्य BP आध्यात्मिक Astrology Emperor के बारे में जानें

₹आचार्य जी धार्मिक विषयों और रेमेडियल ज्योतिष पर 20 साल से भी अधिक समय से काम कर रहे हैं। वेद पुराण, वैदिक ज्योतिष पूजा पाठ हवन यज्ञ, शादी विवाह, संगीतमय कथा प्रवचन, भजन संध्या आध्यात्मिक कथा धार्मिक आयोजनों के लिए, अंक ज्योतिष, पासा और आर्थिक करियर राशिफल पर इन्होंने गहराई छोटी उम्र से गुरुकुल से अध्ययन किया है और अपने ज्ञान से यह प्रतिकूल ग्रह दशाओं और परेशानी में चल रहे लोगों को उचित सलाह देकर उन्हें संकट से निकलने में मदद करते हैं। खाली समय में समाचार पत्रों मै धर्म ज्ञान चर्चा त्योहारों से जुडी जानकारी पर लेख लिखते हैं और धार्मिक विषयों पर अध्ययन और चिंतन करना आचार्य जी को बहुत पसंद है, देश विदेश की महान हस्तियों से सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। शोर शराबे की बजाय एकांत में ध्यान करना भी पसंद है, इसलिए जब कभी भी आचार्य जी को खाली एकांत समय मिलता है, आत्मचिंतन भजन सुमिरन करते हैं और धार्मिक कहानी एवं भजन लिखते हैं, आचार्य जी द्वारा सभी भक्तों क़ो व सभी व्ट्सप ग्रुपों डेली पंचांग और त्योहारों से जुडी धार्मिक जानकारी सभी ग्रुप मै व परसनल भेजी जाती है यदि आप भी आचार्य जी के साथ जुड़ना चाहते हैं तो व्ट्सप नंबर अपने ग्रुप मै जोड़ सकते हैं या अपना नाम पता हमें भेज सकते हैं।₹

मोक्षदायिनी सप्तपुरियां कौन कौन सी हैं

सप्तपुरी पुराणों में वर्णित सात मोक्षदायिका पुरियों को कहा गया है। इन पुरियों में 'काशी', 'कांची' (कांचीपुरम), 'माया' (हरिद्वार), 'अयोध्या', 'द्वारका', 'मथुरा' और 'अवंतिका' (उज्जयिनी) की गणना की गई है।

'काशी कांची चमायाख्यातवयोध्याद्वारवतयपि, मथुराऽवन्तिका चैताः सप्तपुर्योऽत्र मोक्षदाः'; 'अयोध्या-मथुरामायाकाशीकांचीत्वन्तिका, पुरी द्वारावतीचैव सप्तैते मोक्षदायिकाः।'

पुराणों के अनुसार इन सात पुरियों या तीर्थों को मोक्षदायक कहा गया है। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

1. अयोध्या

अयोध्या उत्तर प्रदेश प्रान्त का एक शहर है। दशरथ अयोध्या के राजा थे। श्रीराम का जन्म यहीं हुआ था। राम की जन्म-भूमि अयोध्या उत्तर प्रदेश में सरयू नदी के दाएँ तट पर स्थित है। अयोध्या हिन्दुओं के प्राचीन और सात पवित्र तीर्थस्थलों में से एक है। अयोध्या को अथर्ववेद में ईश्वर का नगर बताया गया है और इसकी संपन्नता की तुलना स्वर्ग से की गई है।

रामायण के अनुसार अयोध्या की स्थापना मनु ने की थी। कई शताब्दियों तक यह नगर सूर्य वंश की राजधानी रहा। अयोध्या एक तीर्थ स्थान है और मूल रूप से मंदिरों का शहर है। यहाँ आज भी हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम और जैन धर्म से जुड़े अवशेष देखे जा सकते हैं। जैन मत के अनुसार यहाँ आदिनाथ सहित पाँच तीर्थंकरों का जन्म हुआ था।

2. मथुरा

पुराणों में मथुरा के गौरवमय इतिहास का विषद विवरण मिलता है। अनेक धर्मों से संबंधित होने के कारण मथुरा में बसने और रहने का महत्त्व क्रमशः बढ़ता रहा। ऐसी मान्यता थी कि यहाँ रहने से पाप रहित हो जाते हैं तथा इसमें रहने करने वालों को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

वराह पुराण में कहा गया है कि इस नगरी में जो लोग शुध्द विचार से निवास करते हैं, वे मानव के रूप में साक्षात देवता हैं।[3] श्राद्ध कर्म का विशेष फल मथुरा में प्राप्त होता है। मथुरा में श्राद्ध करने वालों के पूर्वजों को आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है।उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव ने मथुरा में तपस्या कर के नक्षत्रों में स्थान प्राप्त किया था।

पुराणों में मथुरा की महिमा का वर्णन है। पृथ्वी के यह पूछने पर कि मथुरा जैसे तीर्थ की महिमा क्या है? महावराह ने कहा था- ₹मुझे इस वसुंधरा में पाताल अथवा अंतरिक्ष से भी मथुरा अधिक प्रिय है। वराह पुराण में भी मथुरा के संदर्भ में उल्लेख मिलता है, यहाँ की भौगोलिक स्थिति का वर्णन मिलता है।यहाँ मथुरा की माप बीस योजन बतायी गयी है।

इस मंडल में मथुरा, गोकुल, वृन्दावन, गोवर्धन आदि नगर, ग्राम एवं मंदिर, तड़ाग, कुण्ड, वन एवं अनगणित तीर्थों के होने का विवरण मिलता है। इनका विस्तृत वर्णन पुराणों में मिलता है। गंगा के समान ही यमुना के गौरवमय महत्त्व का भी विशद विवरण किया गया है। पुराणों में वर्णित राजाओं के शासन एवं उनके वंशों का भी वर्णन प्राप्त होता है।

3. हरिद्वार

हरिद्वार उत्तराखंड में स्थित भारत के सात सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में एक है। भारत के पौराणिक ग्रंथों और उपनिषदों में हरिद्वार को मायापुरी कहा गया है। गंगा नदी के किनारे बसा हरिद्वार अर्थात हरि तक पहुंचने का द्वार है। हरिद्वार को धर्म की नगरी माना जाता है। सैकडों सालों से लोग मोक्ष की तलाश में इस पवित्र भूमि में आते रहे हैं।

इस शहर की पवित्र नदी गंगा में डुबकी लगाने और अपने पापों का नाश करने के लिए साल भर श्रद्धालुओं का आना जाना यहाँ लगा रहता है। गंगा नदी पहाड़ी इलाकों को पीछे छोड़ती हुई हरिद्वार से ही मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है। उत्तराखंड क्षेत्र के चार प्रमुख तीर्थस्थलों का प्रवेश द्वार हरिद्वार ही है। संपूर्ण हरिद्वार में सिद्धपीठ, शक्तिपीठ और अनेक नए पुराने मंदिर बने हुए हैं।

4. काशी

वाराणसी, काशी अथवा बनारस भारत देश के उत्तर प्रदेश का एक प्राचीन और धार्मिक महत्ता रखने वाला शहर है। वाराणसी का पुराना नाम काशी है। वाराणसी विश्व का प्राचीनतम बसा हुआ शहर है। यह गंगा नदी किनारे बसा है और हज़ारों साल से उत्तर भारत का धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र रहा है।

दो नदियों वरुणा और असि के मध्य बसा होने के कारण इसका नाम वाराणसी पडा। बनारस या वाराणसी का नाम पुराणों, रामायण, महाभारत जैसे अनेकानेक ग्रन्थों में मिलता है। संस्कृत पढने प्राचीन काल से ही लोग वाराणसी आया करते थे। वाराणसी के घरानों की हिन्दुस्तानी संगीत में अपनी ही शैली है।

5. कांचीपुरम

कांचीपुरम तीर्थपुरी दक्षिण की काशी मानी जाती है, जो मद्रास से 45 मील की दूरी पर दक्षिण–पश्चिम में स्थित है। कांचीपुरम को कांची भी कहा जाता है। यह आधुनिक काल में कांचीवरम के नाम से भी प्रसिद्ध है। ऐसी अनुश्रुति है कि इस क्षेत्र में प्राचीन काल में ब्रह्मा जी ने देवी के दर्शन के लिये तप किया था।

मोक्षदायिनी सप्त पुरियों अयोध्या, मथुरा, द्वारका, माया (हरिद्वार), काशी और अवन्तिका (उज्जैन) में इसकी गणना की जाती है। कांची हरिहरात्मक पुरी है। इसके दो भाग शिवकांची और विष्णुकांची हैं। सम्भवतः कामाक्षी अम्मान मंदिर ही यहाँ का शक्तिपीठ है।

6. अवंतिका

उज्जयिनी का प्राचीनतम नाम अवन्तिका, अवन्ति नामक राजा के नाम पर था।[9] इस जगह को पृथ्वी का नाभिदेश कहा गया है। महर्षि सान्दीपनि का आश्रम भी यहीं था।

उज्जयिनी महाराज विक्रमादित्य की राजधानी थी। भारतीय ज्योतिष शास्त्र में देशान्तर की शून्य रेखा उज्जयिनी से प्रारम्भ हुई मानी जाती है। इसे कालिदास की नगरी के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ हर 12 वर्ष पर सिंहस्थ कुंभ मेला लगता है। भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में एक महाकाल इस नगरी में स्थित है।

7. द्वारका

द्वारका का प्राचीन नाम है। पौराणिक कथाओं के अनुसार महाराजा रैवतक के समुद्र में कुश बिछाकर यज्ञ करने के कारण ही इस नगरी का नाम कुशस्थली हुआ था।

बाद में त्रिविकम भगवान ने कुश नामक दानव का वध भी यहीं किया था। त्रिविक्रम का मंदिर द्वारका में रणछोड़जी के मंदिर के निकट है। ऐसा जान पड़ता है कि महाराज रैवतक (बलराम की पत्नी रेवती के पिता) ने प्रथम बार, समुद्र में से कुछ भूमि बाहर निकाल कर यह नगरी बसाई होगी।

हरिवंश पुराण के अनुसार कुशस्थली उस प्रदेश का नाम था जहां यादवों ने द्वारका बसाई थी। विष्णु पुराण के अनुसार, अर्थात आनर्त के रेवत नामक पुत्र हुआ जिसने कुशस्थली नामक पुरी में रह कर आनर्त पर राज्य किया।

विष्णु पुराण से सूचित होता है कि प्राचीन कुशावती के स्थान पर ही श्रीकृष्ण ने द्वारका बसाई थी-'कुशस्थली या तव भूप रम्या पुरी पुराभूदमरावतीव, सा द्वारका संप्रति तत्र चास्ते स केशवांशो बलदेवनामा'।

मुझे खुशी हो रही है कि आयुष्मान योजना के लागू होने से अब तक लगभग 1000 से अधिक लोगों ने इसका लाभ उठाया है : रेखा गुप्ता

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली: प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार की संकल्प से सिद्धि यात्रा के 11 सफल वर्ष पूरे होने पर आज दिल्ली की मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता एवं दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने एक संयुक्त प्रेस कांफ्रेंस को सम्बोधित कर कहा की भारत के इतिहास में यह पहली सरकार है जिसको लेकर जन जन का विश्वास है की ₹मोदी है तो मुमकिन है₹ यानि यह सरकार असम्भव को भी सम्भव बना सकती है।

संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम की दिल्ली संयोजक सांसद कमलजीत सहरावत की मंच उपस्थिती में प्रेस कान्फ्रेंस का संयोजन मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर ने किया।

इस अवसर पर अपने सम्बोधन में दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा की प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश को नया शासकीय मूल मंत्र दिया है - रिफॉर्म, परफॉर्म एवं ट्रांसफॉरम - जो नये भारत को विकास के नये नये आयाम दे रहा है।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा की समाजिक संवेदना एवं दृढ़संकल्प के साथ काम करती मोदी सरकार वो सरकार बनी है जिसके चलते अभूतपूर्व विज्ञान विकास जिसका प्रमाण है चंद्रयान यात्रा, आर्थिक विकास अब भारत विकसित पांच अर्थव्यवस्था में एक है, गरीब एवं महिलाओ के सम्मान के प्रति संवेदनशील बिन मांगे इज्जत घर देना हो या फिर मुफ्त राशन, देश का मजबूत रक्षा चक्र जिसका ताज़ा प्रमाण दुनिया ने मई 2025 में फिर देखा जब भारत ने पाकिस्तान को घर में घुसकर मारा और खेल एवं सांस्कृतिक विकास जो अंतराष्ट्रीय खेलों में और अयोध्या, काशी, उज्जैन में साफ दिखता है आज सरकार की नई पहचान बने हैं।

दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष ने कहा की प्रधान मंत्री मोदी का मासिक ₹मन की बात₹ कार्यक्रम जहां शायद दुनिया का सबसे लोकप्रिय एवं लम्बा चलने वाला देश उत्थान पर जन चर्चा का कार्यक्रम बन गया है तो वहीं ₹मोदी हैं तो मुमकिन₹ का जन जन का विश्वास हर असम्भव समाजिक सोच परिवर्तन बन रहा है। आज के भारत में आम नागरिक स्वच्छता, विकास, विज्ञान, राष्ट्र सुरक्षा पर प्रधान मंत्री की ₹मन की बात₹ को राष्ट्र सम्मान से जोड़ कर देखता है।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा की जहां राष्ट्र हित में मोदी सरकार ने धारा 370 हटाने का बड़ा निर्णय लिया तो वहीं अल्पसंख्यक समाज विशेषकर उनकी महिलाओं को बेहतर जीवन देने के लिए नया वक्फ कानून एवं तीन तलाक जैसे बड़े निर्णय भी लिए।

पीएम मोदी का ₹मन की बात₹ संवाद भारत तक सीमित नही आज पीएम मोदी के नये भारत संकल्प का डंका पूरे भारत में पिट रहा और जी-20 का भारत में होना उसकी परिकषठा रही।

मोदी सरकार ने सी.ए.ए. लाकर पाकिस्तान जैसे इस्लामिक मुल्क में उत्पीड़न के शिकार हिन्दुओं को राहत दी तो 33% महिला आरक्षण ला कर महिला सम्मान के प्रति सम्मान दर्शाया।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा की जहां 11 वर्ष मेंपीएम मोदी की सरकार ने देश को सैकड़ों विकास योजनाएं देने की साकारात्मक राजनीति की तो वहीं हाल ही में दिल्ली में चुनाव हारी अरविंद केजरीवाल सरकार ने केन्द्र की विकास योजनाओं को दिल्ली में लागू होने से रोकने की

नकारात्मक राजनीति की है।

यह अलग बात है की केजरीवाल की सारी नकारात्मकता के बावजूद आज मोदी सरकार की बनाई सड़क परियोजनाएं हों या फेम इलैक्ट्रिक बसें सब दिल्ली की लाइफलाइन है। कोविडकाल में जब केजरीवाल ने दिल्ली को असहाय छोड़ दिया था तब मोदी सरकार ने दिल्ली को सम्भाला था।

इसके आलावा सेंट्रल विस्टा, भारत मंडपम, यशोभूमी, वार मैमोरियल, कर्तव्यपथ, प्रधान मंत्री संग्रहालय, रैपिड रेल, टनल रोड़ और हाई वे का जाल बुन कर हम दिल्ली वालों को गौरवांवित किया है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है दिल्ली में हाल ही में चुनी गई भाजपा की रेखा गुप्ता सरकार ने दिल्ली में शासन परिवर्तन के सफल सुशासन के 100 दिन पूरे करते हुए आयुष्मान भारत योजना को दिल्ली में तेज़ी से लागू कर सभी केन्द्रीय योजनाओं से लाभ का रास्ता दिल्ली वालों के लिए खोला है जिसको विस्तार से दिल्ली की मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता दिल्ली वालों के समक्ष रखेंगी।

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि जिस स्थिति में दिल्ली की जनता ने अपने 11 साल काटे हैं वह अपने आप में काफी दुखदायी था। कोविड काल में जिस प्रकार से तत्कालीन दिल्ली सरकार ने सिर्फ 97 लोगों को डेथ सर्टिफिकेट दिया है जबकि हम सब ने दिल्ली में देखा कि किस प्रकार से पूरी दिल्ली के शमसान भरे हुए थे। खेदपूर्ण है की दिल्ली सरकार ने उन मौतों को रिकॉर्ड पर भी नहीं लिया और उस वक्त अगर किसी ने हाथ थामा तो वह केन्द्र की मोदी सरकार ने थामा था।

सीएम रेखा गुप्ता ने कहा कि जितना हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर दिल्ली में राज्य सरकार का है पर उससे कहीं अधिक बड़ा हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर दिल्ली में केन्द्र सरकार का है। आज सिर्फ एम्स ही दिल्ली से जुड़ी 5 लाख ओपीडी सलाना करता है जिसके कारण दिल्ली के अस्पतालों पर कम भार पड़ता है। हेल्थ को लेकर भ्रष्टाचार पूरी तरह से पिछली सरकार में व्याप्त था जिसे बंद किया गया है और 1500 नर्सों की नियुक्ति पक्की करी गई है ताकि स्टाफ के कारण जो इन्फ्रांस्ट्रक्चर की कमी थी उसको पूरा किया जा रहा है। इतना ही नहीं मुझे खुशी हो रही है कि आयुष्मान योजना के लागू होने से अब तक लगभग 1000 से अधिक लोगों ने इसका लाभ उठाया है।

1100 आरोग्य मंदिर नए बनाने का काम शुरु किया गया था जिसमें से 34 आरोग्य मंदिर हम लगभग तैयार कर चुके हैं और उनका उद्घाटन 14 जून को करने जा रहे हैं।

दिल्ली की मुख्यमंत्री ने कहा कि मेट्रो में पूरा योगदान केन्द्र सरकार की है और दिल्ली में सरपट दौड़ने वाली मेट्रो अगर नहीं होती तो दिल्ली कैसे चल पाती। इसके साथ ही दिल्ली में केन्द्र सरकार के कॉलेज और स्कूल दिल्ली के एजुकेशन क्षेत्र में बड़ी उपलब्धी हैं। दिल्ली के बच्चों के भविष्य को आगे ले जाने का कोई भी काम पिछली सरकार ने नहीं किया था लेकिन आज के.जी. से पी.जी. तक की शिक्षा बेस्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर के साथ उनकी शिक्षा हो, उस दिशा में लगातार हम काम कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में लगभग 3 लाख गर्भवती महिलाओं को पांच हजार रुपये प्रति माह प्रधानमंत्री मातृ वंदन योजना के तहत और उज्जवला योजना के तहत लगभग 2.5 लाख महिलाओं को मुफ्त गैस सिलेंडर बांटे गए।

मुख्य मंत्री ने कहा की मुद्रा योजना के तहत 20,000 करोड़ रुपये के ऋण केन्द्र सरकार द्वारा दिल्लीवालों को बांटे गए और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत 75 लाख दिल्लीवालों को मुफ्त राशन देने का काम भी केन्द्र सरकार कर रही है।

उन्होंने कहा कि 1731 कॉलोनियों का नियमितिकरण करना एक बड़ी उपलब्धी है और साथ ही दिल्ली ग्रामोदय योजना के तहत 960 करोड़ रुपये की योजना दिल्ली देहात के विकास के लिए आवंटित की गई है। दिल्ली के 12000 किसानों को 6000 रुपये की सम्मान निधि और 2 लाख स्ट्रीट वेंडर को 300 करोड़ रुपये का ऋण केन्द्र सरकार द्वारा देने का काम किया गया।

केजरीवाल सरकार कूड़े के पहाड़ों को हटाने के झूठे वायदें करती रही आज जनता ने उन्हें दिल्ली से हटा दिया है और तीनों कूड़े के पहाड़ जिनकी हाइट 60-65 मीटर की थी आज उनको 30-40 मीटर तक लेकर आए हैं और मार्च 2026 तक ओखला वाले कूड़े के पहाड़ को समाप्त कर देंगे बाकियों का भी निस्तारण समयबद्ध तरीके से कर लिया जाएगा।

श्याम लाल कॉलेज के बाहर एसैप ने सीएम के खिलाफ नारेबाजी कर पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने की मांग की

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली के नेहरू विहार में 9 साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म और हत्या मामले को लेकर आम आदमी पार्टी के छात्र संगठन एसैप ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। दिल्ली के श्याम लाल कॉलेज में सीएम रेखा गुप्ता आने वाली थीं, उनके आगमन से पहले एसैप से जुड़े छात्रों ने कॉलेज के बाहर जमकर नारेबाजी की। एसैप ने सीएम से मांग की कि पीड़िता के परिवार को आर्थिक मदद दी जाए और आरोपियों को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर उनको कड़ी से कड़ी सजा दी जाए, ताकि पीड़ित परिवार को न्याय मिल सके।

विरोध प्रदर्शन के दौरान एसैप ने एक महिला मुख्यमंत्री होने के नाते रेखा गुप्ता को उनकी जिम्मेदारी याद दिलाई। एसैप ने कहा कि दिल्ली की मुख्यमंत्री एक महिला हैं और वह एक मां भी हैं। उनको एक बेटी की सुरक्षा की चिंता होनी चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं दिख रहा है। एसैप ने कहा कि दिल्ली की महिलाओं को लगता था कि अब वो सुरक्षित रहेंगी, क्योंकि उनकी मुख्यमंत्री भी एक महिला हैं, लेकिन महिलाओं का यह भ्रम तीन महीने में ही टूट गया। एक

महिला मुख्यमंत्री होने के बावजूद महिलाएं और बच्चियां सुरक्षित माहौल में सांस नहीं ले सकती हैं।

एसैप ने कहा कि अब तो दिल्ली में भाजपा की चार इंजन की सरकार है। केंद्र, राज्य और एमसीडी में भाजपा की सरकार होने के अलगाव एलजी भी भाजपा के ही हैं। पुलिस-प्रशासन सबकुछ भाजपा के हाथ में है। इसके बाद भी अपराधियों के हौसले इतने बुलंद है। नेहरू विहार में मासूम बच्ची के साथ हुई दरिंगदी दिल को झकझोर देने वाली है। इस घटना ने दिल्ली की जनता को बता दिया कि भाजपा सरकार में महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। भाजपा की चार इंजन की सरकार दिल्ली को सुरक्षित माहौल देने में पूरी तरह विफल साबित हुई है। हमारी मांग है कि इस घटना के पीड़ित परिवार को जल्द से जल्द न्याय दिया जाए और आरोपियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए।

एसबीआई कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड के सौजन्य से सफदरजंग अस्पताल को सुलभ शौचालय का तोहफा

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। डॉ. संदीप बंसल चिकित्सा अधीक्षक वीएमएमसी एंड एसजेएच और श्री मुकुल मोदी, कार्यकारी उपाध्यक्ष और श्री एस के अरोड़ा सीनियर उपाध्यक्ष एसबीआई सीएपीएस की अगुवाई में सीएसआर टीमों की मौजूदगी में सफदरजंग अस्पताल में सुलभ शौचालय सुविधाओं का उद्घाटन किया गया। एसबीआई कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड द्वारा अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रम के हिस्से के रूप में वित्त पोषित यह पहल विकलांग व्यक्तियों (पीडब्ल्यूडी) के लिए समावेशी स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढांचे के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करती है।

इस परियोजना का नेतृत्व प्रोफेसर और सलाहकार प्रो. अमिता साहनी ने किया, जो स्वयं एक विकलांग व्यक्ति हैं। प्रो. साहनी ने स्वास्थ्य सेवा संस्थानों में बुनियादी सुविधाओं तक पहुँचने में पीडब्ल्यूडी के सामने आने वाली दैनिक चुनौतियों और कठिनाइयों को पहले से समझने के बाद पहल की। इस पहल को अनुप्रयास एनजीओ द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, जो सुलभ बुनियादी ढाँचा समाधान बनाने में माहिर है। डॉ. संदीप बंसल ने कहा, ₹यह उद्घाटन केवल सुलभ सुविधाओं के उद्घाटन से कहीं अधिक है।यह सम्मान और समावेश के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। स्वास्थ्य सेवा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए, चाहे उनकी शारीरिक क्षमताएँ कुछ भी हों।कार्यकारी उपाध्यक्ष सुश्री मुकुल मोदी ने कहा, ₹एसबीआई कैपिटल मार्केट्स में, हम मानते हैं कि सच्ची कॉर्पोरेट जिम्मेदारी का मतलब उन कमियों को दूर करना है जिन्हें समाज अक्सर अनदेखा कर देता है। ये सुलभ शौचालय केवल बुनियादी ढाँचा नहीं हैं।ये विकलांग व्यक्तियों के लिए सम्मान और स्वतंत्रता का पुल हैं। हमें स्वास्थ्य सुविधाओं को और अधिक समावेशी बनाने में योगदान देने पर गर्व है।सुलभ शौचालय सुविधाओं को विकलांग व्यक्तियों की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया है, जो सुलभता मानकों के अनुपालन को सुनिश्चित करते हैं और सभी उपयोगकर्ताओं के लिए एक सुरक्षित, सम्मानजनक अनुभव प्रदान करते हैं। एसबीआई कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड की यह सीएसआर पहल एक समावेशी समाज बनाने के लिए कंपनी की प्रतिबद्धता को दर्शाती है,जहाँ बुनियादी ढाँचे की बाधाएँ किसी को भी आवश्यक सेवाओं तक पहुँचने से नहीं रोकती हैं।यह परियोजना अस्पताल सीएसआर समिति, कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में अनुप्रयास एनजीओ और एसबीआई कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड टीम के बीच सहयोगात्मक प्रयासों के माध्यम से विकसित की गई थी, जो सार्थक सामाजिक परिवर्तन को आगे बढ़ाने में साझेदारी की शक्ति को प्रदर्शित करती है।

स"अजयः द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ ए योगी" 1 अगस्त को रिलीज़ होगी

मुख्य संवाददाता

सम्राट सिनेमैटिक्स ने अपनी आगामी फिल्म "*अजयः द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ ए योगी" की वर्ल्डवाइड थिएट्रिकल रिलीज़ डेट की घोषणा कर दी है। यह फिल्म 1 अगस्त 2025 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। यह घोषणा योगी आदित्यनाथ के जन्मदिवस के विशेष अवसर पर की गई, साथ ही फिल्म का शक्तिशाली फर्स्ट लुक पोस्टर भी रिलीज़ किया गया जिसमें अभिनेता अनंतविजय जोशी मुख्य भूमिका में नजर आ रहे हैं*

पोस्टर में भगवा वस्त्रों में नायक की छवि दिखाई गई है जो आध्यात्मिक शक्ति, संकल्प और नेतृत्व का प्रतीक है। उनका तीव्र दृष्टिकोण और प्रभावशाली मुद्रा एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो कर्तव्य और सिद्धांतों से प्रेरित है।

शांतनु गुप्ता द्वारा लिखित प्रसिद्ध पुस्तक "द मोंक हू बिकेम चीफ मिनिस्टर" से प्रेरित, अजय एक ऐसे साधु की असाधारण यात्रा को पर्दे पर लाता है, जिसने सांसारिक मोह त्यागकर भारत के सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक के रूप में उभर कर एक ऐतिहासिक मुकाम हासिल किया।

निर्माता रितु मेंगी ने कहा, "इस विशेष दिन पर रिलीज़ डेट की घोषणा करना योगीजी के असाधारण जीवन को एक सच्ची श्रद्धांजलि है

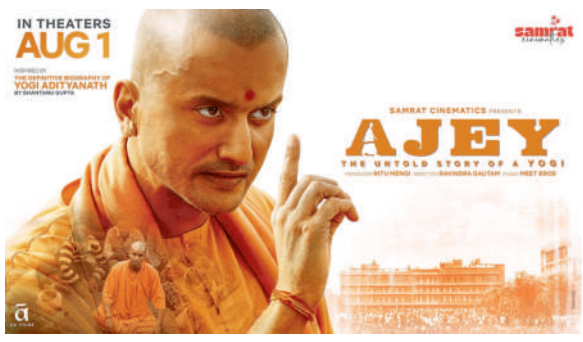

— एक ऐसा जीवन जो लाखों लोगों को प्रेरित करता है। 'अजय' मूलतः त्याग, कर्तव्य और धर्म से प्रेरित परिवर्तन की कहानी है।"

फिल्म में अनंतविजय जोशी के साथ परेश रावल, दिनेशलाल यादव 'निरहुआ', अजय मेंगी, राजेश खट्टर, पवन मल्होत्रा, और गरिमा विक्रांत सिंह प्रमुख भूमिकाओं में नजर आएंगे।

फिल्म का निर्देशन रवींद्र गौतम ने किया है और इसे रितु मेंगी ने प्रोड्यूस किया है। पटकथा दिलिप बच्चन झा और प्रियांक दुबे ने लिखी है, और संगीत दिया है मीट ब्रदर्स ने। एसोसिएट प्रोड्यूसर हैं बी-लाइव प्रोडक्शंस (सूरज सिंह), छायांकन (DOP) किया है विष्णु राव ने, और प्रोडक्शन डिज़ाइनर हैं उदय प्रकाश सिंह।

फिल्म के पैन-इंडिया वितरण के लिए अनिल थडानी की AA Films को जोड़ा गया है, जिससे इसे एक मजबूत कमर्शियल बढ़त मिलेगी। अजय 1 अगस्त को पूरे विश्व में रिलीज़ होगी और एक ऐसी अनकही कहानी को दर्शाएगी जिसमें अनुशासन, सेवा और राजनीतिक उत्कर्ष की भावना है।

भारतीय भाषा समिति द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय के महर्षि कणाद सभागार में ऑपरेशन सिंदूर पर परिचर्चा एवं काव्यगोष्ठी का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय की भारतीय भाषा समिति द्वारा 'राष्ट्र-प्रथम' के अंतर्गत ₹शक्ति-शांति-समृद्धि₹ विषयक परिचर्चा एवं काव्यगोष्ठी का आयोजन दिल्ली विश्वविद्यालय के महर्षि कणाद भवन सभागार में किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय की भारतीय भाषा समिति द्वारा पहलगाम हमले के प्रतिकार स्वरूप हुए ऑपरेशन सिंदूर के तहत हुई सैन्य कार्यवाही के समर्थन में परिचर्चा एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सशक्त मार्गदर्शन में हमारी सेनाओं द्वारा चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का अभिनंदन करने के क्रम में यह अपने आप में एक अनूठा कार्यक्रम था।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रमेश अग्रवाल, अध्यक्ष, सेवा भारती, दिल्ली प्रांत ने अंतरराष्ट्रीय भू-राजनीति पर चर्चा करते हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' को भारत का एक सशक्त कदम बताया। उन्होंने कहा कि भारत माता की जय बोलने के साथ-साथ हमें पुरूषार्थ करने की आवश्यकता है। हमें एक मज़बूत वैचारिक आंदोलन का संकल्प लेकर आगे बढ़ने की जरूरत है तभी भारत अपने उच्च वैभव को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तर्ज़ पर बुद्धिजीवियों से प्रोफेशनल सोशल रिस्पांसिबिलिटी चलाने का आह्वान किया ।जिसमें राष्ट्र जागरण अभियान

चलाया जाए।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक परिषद के अध्यक्ष एवं जनसंपर्क अधिकारी श्री अनूप लाठर ने कहा कि राष्ट्र की सुरक्षा केवल सैनिक ही नहीं करते हैं; बल्कि हम सब साथ मिलकर उन्हें सशक्त करते हैं। हमारी संस्कृति सदा परिवर्तनशील रही है और यही संस्कृति के सातत्य का कारण रही है। आज हमारा राष्ट्र उस मोड़ पर है जहाँ से यह नई उड़ान भर सकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. बलराम पाणी, अधिष्ठाता, महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय ने ऑपरेशन सिंदूर की सार्थकता पर चर्चा करते हुए कहा कि राष्ट्र रक्षा सबसे बड़ा पुण्य कार्य, सबसे बड़ा धर्म और सबसे बड़ा यज्ञ है। राष्ट्र की अस्मिता के कारण ही हमारी अस्मिता है। अनेकता में एकता हमारी सबसे बड़ी ताकत है। उन्होंने 'राष्ट्र प्रथम' जैसे कार्यक्रमों की महत्ता को सामने रखते हुए भारतीय एकता को बरकरार रखने के लिए हरसंभव प्रयास करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं अध्यक्ष, भारतीय भाषा समिति, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रो. निरंजन कुमार ने प्रो. स्टीफ़न मार्टिन वॉल्ट को उद्धृत करते हुए कहा कि 'राष्ट्रवाद दुनिया की सबसे मज़बूत शक्ति है।' राष्ट्र और राष्ट्रीयता को लेकर तरह तरह की भ्रांतियां हैं। जिन्हें दूर करने की जरूरत है। 'राष्ट्र प्रथम' जैसे कार्यक्रम ऐसी वैचारिक प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करते हैं।

कार्यक्रम के अगले चरण में विविध भारतीय भाषाओं में गणमान्य युवा कवियों द्वारा 'राष्ट्र-प्रथम' विषयक काव्य प्रस्तुतियाँ दी गईं।

आयोजन में विश्वविद्यालय के विभिन्न डीन, विभागाध्यक्ष, प्राचार्य, संकाय सदस्य, शिक्षक, शोधार्थी, छात्र और समाज के अन्य संस्कृति और साहित्य प्रेमी शामिल हुए।

खुल गई पोल, भाजपा ने ही "आप" पार्षदों को तोड़कर बनवाया आईबीपी-

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। एक महीने के अंदर ही भा भजपा द्वारा चुपके से किए गए ऑपरेशन लोटस की पोल खुल गई है। दिल्ली नगर निगम के जोन चुनाव में इंद्रप्रस्थ विकास पार्टी (आईवीपी) के चेयरमैन प्रत्याशी को वोट नहीं देने पर अपने एक पार्षद को पार्टी से निकाल कर भाजपा ने साबित कर दिया कि उसके इशारे पर ही आम आदमी पार्टी से अलग होकर कुछ पार्षदों ने तथाकथित नई पार्टी बनाई थी। ''आप'' के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने भाजपा पर हमला बोलते हुए कहा कि ऑपरेशन लोटस के आरोप से बचने के लिए ही भाजपा ने यह नई पार्टी बनवाई, लेकिन आईवीपी का कोई प्रत्याशी जोन चुनाव नहीं जीत पाया और पूरा प्लान चौपट हो गया।

सौरभ भारद्वाज ने भाजपा के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा के निर्देश पर रोहिणी जोन

की पार्षद सुमन टिंकू राजौरा को पार्टी से निकाले जाने के आदेश को एक्स पर साझा करते हुए कहा कि भाजपा एक्सपोज हो गई। भाजपा ने अपने एक पार्षद को इसलिए निकाल दिया क्योंकि उसने एक नई तथाकथित पार्टी (आईवीपी) के चेयरमैन कैंडिडेट को जोन चुनाव में वोट नहीं दिया। आईवीपी का कोई कैंडिडेट ज़ोन चुनाव नहीं जीता, पूरा प्लान चौपट हो गया। इससे साफ़ हो जाता है कि भाजपा ने ही आईवीपी को बनवाया, मगर उसपर ऑपरेशन लोटस का आरोप ना लगे, इसलिए नई तथाकथित पार्टी बनवाई गई

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि इसी तरह से मंत्री राज कुमार आनंद पर ईडी का छापा मारने के बाद उसको बीएसपी में भेजा गया ताकि वॉशिंग मशीन और ऑपरेशन लोटस का आरोप ना लगे और फिर भाजपा के टिकट पर राज कुमार आनंद को विधानसभा चुनाव लड़वाया गया और वे हार गए। आज भाजपा का चाल चरित्र और चेहरा सबके सामने बेनकाब है।

संत कबीर जयंती: विचारों की क्रांति का महापर्व

शब्दों में क्रांति, विचारों में आग — यही है कबीर

संत कबीरदास—एक ऐसी चिंगारी, जो सदियों बाद भी अंधेरे को भस्म करती है, एक ऐसी वाणी, जो पाखंड की बेड़ियों को तोड़ती है, और एक ऐसा दर्शन, जो मानवता को सत्य और प्रेम की राह दिखाता है। जब भारतीय संत परंपरा का जिक्र होता है, तो कबीर का नाम तूफान की तरह गूँजता है—न झुकने वाला, न थमने वाला। वे न राजसत्ताओं के गुलाम थे, न धर्मों के ठेकेदार। उनकी हर साखी, हर दोहा, हर शब्द एक हथौड़ा है, जो अज्ञान, जातिवाद और ढोंग की दीवारों को चूर-चूर करता है। उनकी जयंती, ज्येष्ठ पूर्णिमा, जो 11 जून 2025 को देश के कोने-कोने में उत्साह के साथ मनाई जाएगी, केवल एक तिथि नहीं, बल्कि एक क्रांति का शंखनाद है—सत्य, समानता और करुणा की चेतना का महापर्व। यह वह दिन है, जब कबीर की आवाज हमें झकझोरती है—जागो, बंदे! पाखंड छोड़ो, सत्य को गले लगाओ।

कबीर का जन्म 15वीं शताब्दी में माना जाता है, हालांकि उनके जन्मकाल को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं। कुछ स्रोत 1398 को उनका जन्मवर्ष बताते हैं, तो कुछ 1440 के आसपास। उनकी जन्मकथा रहस्य से भरी है—कहा जाता है कि वे काशी (आधुनिक वाराणसी) में एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से प्रकट हुए, जिन्हें स्वामी रामानंद का आशीर्वाद प्राप्त था। उनका पालन-पोषण नीरू और नीमा, एक जुलाहा दंपति ने किया। निम्न मानी जाने वाली जाति में जन्मे कबीर ने कभी सामाजिक भेदों को स्वीकार नहीं किया। उनका जीवन इस सत्य का जीवंत प्रमाण है कि आत्मा की शुद्धता और विचारों की ऊँचाई ही मानव की सच्ची पहचान है। कबीर ने निर्गुण भक्ति का मार्ग चुना, जिसमें ईश्वर निराकार, सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान है। उन्होंने मंदिर-मस्जिद के आडंबरों को

ठुकराया और ईश्वर को हृदय में खोजने का संदेश दिया। उनका दोहा—"मोको कहाँ ढूँढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में। ना मैं मंदिर, ना मैं मस्जिद, ना मैं काबे कैलास में।"—न केवल उनकी आध्यात्मिक गहराई को उजागर करता है, बल्कि धार्मिक पाखंडों पर करारा प्रहार भी करता है।

कबीर की रचनाएँ—दोहे, साखियाँ और शब्द—भाषा की सरलता और विचारों की तीक्ष्णता का अनुपम संगम हैं। उनकी रचनाएँ अवधी, भोजपुरी और हिंदी के मिश्रण में हैं, जो आम जन की जुबान थीं। उनका एक और प्रसिद्ध दोहा—"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय। ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।"—यह सिखाता है कि सच्चा ज्ञान वह नहीं जो शास्त्रों में कैद हो, बल्कि वह जो प्रेम, करुणा और मानवीयता को जागृत करे। कबीर ने धार्मिक गुरुओं, पंडितों और मुल्लाओं की खोखली विद्वता पर तीखे व्यंग्य किए। उनकी वाणी में जीवन का हर पहलू—सामाजिक असमानता, धार्मिक ढोंग, नैतिकता और आत्म-जागरूकता—स्पष्ट रूप से उभरता है। उनकी रचनाएँ 'बीजक', 'साखी', 'शबद' और 'रमैनी' जैसे संग्रहों में संकलित हैं, जो आज भी भक्ति और दर्शन के साधकों के लिए मार्गदर्शक हैं।

कबीर एक गृहस्थ संत थे। उन्होंने लोई नामक महिला से विवाह किया और उनके बच्चे—कमाल और कमाली—थे। गृहस्थ जीवन जीते हुए भी उनका जीवन सादगी, वैराग्य और सत्यनिष्ठा का प्रतीक था। वे समाज में रहकर उसे सुधारने का साहस रखते थे। उनकी शिक्षाओं ने संत रैदास, धन्ना, पीपा जैसे अनुयायियों को प्रेरित किया, और कबीरपंथ आज भी उनके विचारों को जीवित रखता है। कबीर ने नारी को सम्मान दिया और हर रिश्ते को आध्यात्मिकता से जोड़ा। उनका यह विश्वास—"जात न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान। मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।"—सामाजिक भेदभाव को नकारता है और ज्ञान को सर्वोपरि मानता है।

कबीर जयंती का उत्सव केवल धार्मिक आयोजन तक सीमित नहीं है। इस दिन देशभर में कीर्तन, भजन, सत्संग और उनके दोहों पर आधारित गोष्ठियाँ होती हैं। हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों में यह पर्व विशेष उत्साह के साथ मनाया जाता है। लेकिन कबीर जयंती का असली मर्म उनके विचारों को आत्मसात करने में है। आज का समाज फिर से जातिवाद, धार्मिक कट्टरता और नैतिक पतन की बेड़ियों में जकड़ा है। ऐसे में कबीर का यह दोहा—"चलती चाकी देख के, दिया कबीरा रोय। दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय।"—हमें याद दिलाता है कि समाज की क्रूर व्यवस्था में हर व्यक्ति पीस रहा है। कबीर इस व्यवस्था को तोड़ने और सत्य, प्रेम व समानता का समाज बनाने के पक्षधर थे। कबीर ने कभी तलवार नहीं उठाई, पर उनके शब्दों में वह शक्ति थी जो राजसत्ताओं और धार्मिक ठेकेदारों को चुनौती दे सके। उनकी वाणी—"मन का साँच झूठे से ऊँचा, साँच बिना सब सून।"—हमें सिखाती है कि सत्य के बिना जीवन निरर्थक है। आज जब हम कबीर जयंती मनाते हैं, तो यह केवल परंपरा नहीं, बल्कि आत्मपरीक्षण का अवसर है। क्या हम अब भी धर्म और जाति के नाम पर बँटे हैं? क्या हम अब भी सत्य को छोड़कर आडंबरों में जी रहे हैं? कबीर की शिक्षाएँ हमें प्रेम और करुणा का मार्ग दिखाती हैं, जो मानवता को एकजुट कर सकता है।

कबीरदास एक शाश्वत ज्योति हैं, एक ऐसी गूँज जो सदियों बाद भी थमती नहीं। उनकी जयंती हमें पुकारती है—उठो! ढोंग की परतें उतारो, प्रेम की राह अपनाओ, और सच्चा इंसान बनो। यह पर्व केवल एक दिन की श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि हर दिन को कबीरमय बनाने का संकल्प है। उनकी वाणी हमारे अंतर्मन को झकझोरती है, हमें अपने भीतर झाँकने को मजबूर करती है। कबीर की विरासत वह चेतना है, जो हमें समाज के छल और समय की सीमाओं से परे ले जाती है। इस जयंती पर कबीर के विचारों को न केवल याद करें, बल्कि उन्हें अपने जीवन में उतारें। यह वही सच्ची पूजा होगी, जो कबीर के सपनों को साकार करेगी—एक ऐसा समाज, जहाँ न जाति हो, न धर्म का झगड़ा, केवल प्रेम और सत्य का राज हो। कबीर की आवाज आज भी गूँज रही है, और यह हम पर है कि हम उस पुकार को सुनें और उसका अनुसरण करें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

उत्तराखंड स्वाभिमान मोर्चा जनता की आवाज़ बुलंद कर रहा: नीरू बिष्ट

परिवहन विशेष न्यूज

- महिलाओं की दृढ़ भागीदारी के साथ उत्तराखंड स्वाभिमान मोर्चा की सहसपुर कार्यकारिणी का विस्तार

बिलासपुर। उत्तराखंड स्वाभिमान मोर्चा की पछवादून इकाई की एक महत्वपूर्ण बैठक अध्यक्ष निरंजन सिंह चौहान की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस कार्यक्रम में क्षेत्र की लगभग 100 महिलाओं ने भाग लिया और 5 से 6 दर्जन महिलाओं ने औपचारिक रूप से मोर्चा की सदस्यता ग्रहण की।

इस अवसर पर क्षेत्र की सक्रिय समाजसेविका नीरू बिष्ट ने कहा कि आज उत्तराखंड में स्वाभिमान मोर्चा जनता की आवाज़ को बुलंद कर रहा है। वहीं, गैर-सरकारी संस्था संचालिका नीलम नेगी ने मोर्चे की सदस्यता लेते हुए कहा कि यह मोर्चा उत्तराखंड की जनता के सपनों को साकार करने वाला सशक्त विकल्प है।

अन्य प्रमुख महिलाओं में आशा रावत, पूनम देवी, वीर चौहान आदि ने भी अपने विचार रखते हुए यह स्पष्ट किया कि अब तीसरा विकल्प ही मजबूत उत्तराखंड की दिशा में एकमात्र समाधान है।

सहसपुर ब्लॉक महिला कार्यकारिणी का गठन

बैठक में उत्तराखंड महिला स्वाभिमान मोर्चा की सहसपुर ब्लॉक नई कार्यकारिणी का सर्वसम्मति से गठन किया गया, जिसमें निम्न पदाधिकारी चुनी गईं:

अध्यक्ष: नीरू बिष्ट

उपाध्यक्ष: पूनम देवी, मनीषा बिष्ट

महासचिव: कुमारी अंबिका (सबसे युवा पार्षद)।

सचिव: आशा रावत

उपसचिव: विद्यासाही

कोषाध्यक्ष: मिनी रावत

प्रचारक: नीलम नेगी

कार्यकारिणी सदस्य: कलावती देवी, वंदना देवी, बीरा चौहान, उमा पंवार, सरोज भट्ट, सुनीता शर्मा, जसोदा देवी।

इस बैठक में विशेष रूप से लीना गुरुंग, ज्योति चौहान, संगीता, संजीता गुसाईं, आनंदी गोदियाल, जसोदा बिष्ट, नीता देवी सहित कई सक्रिय महिलाएं मौजूद रहीं।

उत्तराखंड स्वाभिमान मोर्चा के पछवादून के अध्यक्ष निरंजन चौहान ने कहा कि यह महिला विंग न केवल संगठन को जमीनी स्तर तक मजबूत करेगा बल्कि समाज में नारी शक्ति की भूमिका को भी मजबूती से स्थापित करेगा।

सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के तहत यदि मांगी गई सूचना सरकारी वित्तपोषण या सार्वजनिक ट्रस्ट से संबंधित हो तो दी जानी अनिवार्य

नरेश गुणपाल

बॉम्बे उच्च न्यायालय की नागपुर पीठ की पूर्ण पीठ के समक्ष प्रश्न महाराष्ट्र पब्लिक ट्रस्ट अधिनियम 1950 के तहत पंजीकृत एक सार्वजनिक ट्रस्ट के दायित्वों को निर्धारित करने से संबंधित था, जो सूचना का अधिकार अधिनियम- 2005 के तहत राज्य अनुदान प्राप्त करने वाली संस्था का संचालन करता है। याचिकाकर्ता महाराष्ट्र पब्लिक ट्रस्ट एक्ट 1950 के तहत पंजीकृत एक पब्लिक ट्रस्ट है। प्रतिवादी पब्लिक ट्रस्ट की गतिविधियों से संबंधित जानकारी चाहने वाले व्यक्ति हैं। पब्लिक ट्रस्ट एक संस्था संचालित करता है, संभवतः एक शैक्षणिक या धर्मार्थ संस्था, जिसे राज्य से अनुदान प्राप्त होता है। ये अनुदान सरकार द्वारा पब्लिक ट्रस्ट द्वारा प्रशासित संस्था के कामकाज और गतिविधियों का समर्थन करने के लिए प्रदान किए जाते हैं।

दोनों पक्षों के बीच प्राथमिक विवाद सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 की व्याख्या और पब्लिक ट्रस्ट पर इसकी प्रयोज्यता के इर्द-गिर्द घूमता है। प्रतिवादी का तर्क है कि चूंकि पब्लिक ट्रस्ट एक ऐसी संस्था है जिसे राज्य से अनुदान प्राप्त होता है, इसलिए यह सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के तहत ₹सार्वजनिक प्राधिकरण₹ के रूप में योग्य है। इसलिए, अधिनियम के प्रावधानों के तहत अनुरोध किए जाने पर जानकारी प्रदान करना उसके लिए बाध्य होना चाहिए।

मामले के तथ्य : विचाराधीन मामला महाराष्ट्र पब्लिक ट्रस्ट एक्ट 1950 के तहत पंजीकृत सार्वजनिक ट्रस्टों के संदर्भ में सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 की व्याख्या के इर्द-गिर्द घूमता है। मुख्य मुद्दा यह है कि क्या राज्य से अनुदान प्राप्त करने वाली संस्था का संचालन करने वाला सार्वजनिक ट्रस्ट आरटीआई अधिनियम के तहत जानकारी प्रदान करने के लिए बाध्य है। यह प्रश्न इस बात के निर्धारण पर टिका है कि क्या सार्वजनिक ट्रस्ट आरटीआई अधिनियम के तहत ₹सार्वजनिक प्राधिकरण₹ के रूप में योग्य है, इस प्रकार यह अधिनियम द्वारा अनिवार्य प्रकटीकरण आवश्यकताओं के अधीन है।

उच्च न्यायालय का निर्णय

इसके विपरीत, पब्लिक ट्रस्ट का प्रतिनिधित्व करने वाला याचिकाकर्ता इस व्याख्या का विरोध करता बैंक लिमिटेड बनाम केरल राज्य, [(2013) 16 एससीसी 82] का हवाला सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 की प्रयोज्यता निर्धारित करने में राज्य वित्तपोषण के महत्व को रेखांकित करने के लिए दिया गया है। ये कानूनी सिद्धांत पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं जिसके खिलाफ न्यायालय को दोनों पक्षों द्वारा प्रस्तुत तर्कों का आकलन करना चाहिए और एक तर्कसंगत निर्णय पर पहुंचना चाहिए। पीपल वेलफेयर सोसाइटी बनाम राज्य सूचना आयुक्त के मामले में बॉम्बे उच्च न्यायालय की नागपुर की पूर्ण पीठ के समक्ष प्रश्न महाराष्ट्र पब्लिक ट्रस्ट अधिनियम 1950 के तहत पंजीकृत एक सार्वजनिक ट्रस्ट के दायित्वों को निर्धारित करने से संबंधित था, जो सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के तहत राज्य अनुदान प्राप्त करने वाली संस्था का संचालन करता है। पीठ में न्यायमूर्ति अविनाश जी. घरोटे, अनिल एस. किलोर और उर्मिला जोशी-फाल्के शामिल थे, और फैसला सुनाया गया।

कानपुर में 20 हजार की रिश्वत लेते गिरफ्तार दरोगा के खिलाफ विभागीय जांच भी शुरू : सस्पेंड

- विवेचना में नाम निकालने के नाम पर मांगे थे 20000

सुनील बाजपेई

कानपुर। पुलिस की रिश्वतखोरी के मामले लगता बढ़ते जा रहे हैं,जिसको लेकर सबसे ज्यादा बदनाम विवेचना अधिकारी सब इंस्पेक्टर हो रहे हैं। ऐसे ही एक दरोगा को विवेचना में नाम निकालने के नाम पर ₹20000 की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार करने के बाद उसके खिलाफ विभागीय जांच भी शुरू कर दी गई है। सूत्रों ने बताया कि इसके तहत दरवाजा को सस्पेंड भी कर दिया गया है। रिश्वतखोरी से पुलिस विभाग की छवि खराब होने का यह मामला पहला नहीं है। इसके पहले भी कई पुलिस कर्मचारी सब इंस्पेक्टर आदि रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया जा चुके हैं।

दरोगा द्वारा रिश्वतखोरी का यह मामला नौबस्ता थाना क्षेत्र का है ,जहां एंटी करप्शन टीम ने तैनात दरोगा को रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार किया है। जानकारी के मुताबिक पुराने जमीनी विवाद की जांच कर रहे दरोगा अभिनव चौधरी ने एक नामजद आरोपी का नाम हटाने लिए 20 हजार रुपए की रिश्वत मांगी थी। युवक ने इसकी शिकायत एंटी करप्शन टीम से की। इसके बाद टीम ने जाल बिछाकर दरोगा को रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। उसने रिश्वत देने वाले पीड़ित को श्री राम चौक बुलाया था ,जहां उसे गिरफ्तार करने के लिए एंटी करप्शन की टीम पहले से ही तैयार बैठी थी। घटना के विवरण में बताया गया कि इसी साल 14 जनवरी को नौबस्ता थाने में होजरी कारोबारी त्रिपुरेश मिश्रा ने प्रत्युष कुमार सहित चार लोगों पर जालसाजी और रंगदारी मांगने समेत अन्य धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। आरोप लगा कि नौबस्ता के मछरिया में मौजूद पुस्तैनी मकान को प्रत्युष द्वारा कागजों में हेर-फेर करके कब्जा करने का प्रयास किया गया। मामले में नामजद एफआईआर दर्ज कराई गई थी। इस मुकदमे की विवेचना दरोगा अभिनव चौधरी कर रहे थे। जिसके लिए ही उन्होंने पीड़ित का नाम निकालने के लिए ₹20000 की रिश्वत मांगी थी।

अंतरराष्ट्रीय खेल दिवस 11 जून 2025-बच्चों के खेलने से उनका शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक विकास तेज़ी से होता है

अंतरराष्ट्रीय खेल दिवस का उद्देश्य खेलों को संरक्षित रखना, बढ़ावा देनां व विशेष रूप से बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करना है

भारतीय खेलों गिल्ली-डंडा,ख़ो- ख़ो,लंगडी, कांचे सहित अनेको पारंपरिक खेलों को राष्ट्रीय परिपेक्ष में लाकर फिर अंतरराष्ट्रीय मंच के लक्ष्य का संज्ञान लेना ज़रूरी-

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत क़ी संस्कृति और सभ्यता जिसमें बच्चों के पारंपरिक खेलों को भी शामिल किया गया है, को हजारों लाखों वर्षों पुरानी होने की बातें प्रिंट मीडिया में चलती रहती है, स्वाभाविक रूप से गिली-डंडा ख़ो-ख़ो, लंगडी, कांचे सहित अनेकों पारंपरिक खेल जो हमने अपने बचपन में खेले थे,वे कई पीढियां से चलते आ रहे हैं,जो आदि अनादि काल का ही होंगे। परंतु आज इनका वजूद शायद मिटने की ओर, यानें विलुप्तता की ओर बढ़ चला है, हालांकि कबड्डी व ख़ो-ख़ो को कुछ हद तक प्रतिसाद मिलते रहते हैं परंतु बाकी खेलों को शायद नहीं मिलता। मेरा मानना है कि जब हमारे माननीय पीएम व गृहमंत्री, आज जब मेडिकल से लेकर इंजीनियरिंग तक पढ़ाई मातृभाषाओं में लागू कर दिया है जिसका उल्लेख माननीय गृहमंत्री ने 9 जून 2025 को तमिलनाडु में एक संबोधन में भी किया। बोलचाल, उनकी लिपियों को संरक्षित रखने की शानदार शुरुआत कर चुके हैं तो, मेरी इस आर्टिकल के माध्यम से अपील है कि अनेकों पौराणिक खेलों की सूची बनाकर उनमें से उचित खेलों को राष्ट्रीय परिपेक्ष में कन्वर्ट करने का संज्ञान लेना समय की मांग है। वर्तमान डिजिटल युग में हम अपनी परंपराओं पौराणिक खेलो सभ्यता की विलुप्तता महसूस कर रहे हैं। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि पूरी दुनियाँ 11 जून 2025 को अंतरराष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मना रही है, यह दिवस दुनिया भर में बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखने का प्रतीक है,क्योंकि खेल केवल मनोरंजन नहीं होता, बल्कि यह बच्चों को सहयोग,नेतृत्व,समस्या समाधान और रचनात्मकता जैसे जीवन के आवश्यक कौशल सिखाता है ।तकनीक के बढ़ते प्रभाव और पढ़ाई के बढ़ते दबाव के कारण बच्चों का खेल समय सीमित होता जा रहा है। ऐसे में यह दिन सभी को याद दिलाता है कि खेल बच्चों के समग्र विकास के लिए उतना ही जरूरी है जितना कि शिक्षा। बच्चों को खेलने के लिए प्रोत्साहन देने उनको सुरक्षित करने इन खेलों का लाभ देने के लिए मनाया जाता है,जिससे बच्चों को शारीरिक मानसिक सामाजिक विकास पूरी गति के साथ हो सके इन पुराने खेलों को सुरक्षित कर उन्हें बढ़ावा देने के लिए एक सरकारी प्लेटफार्म बनाया जाए ताकि उनका लाभ बच्चों को दिया जा सके इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, बच्चों के खेलने से उनके शारीरिक मानसिक तथा सामाजिक विकास में तेजी से बढ़ावा होता है।

साथियों बात अगर हम बच्चों के जीवन में खेलों के महत्व की करें तो,अंतर्राष्ट्रीय खेल दिवस हर वर्ष 11 जून को मनाया जाता है। यह दिवस बच्चों के खेल के महत्व को उजागर करने और उनके शारीरिक,मानसिक तथा सामाजिक विकास में खेल की भूमिका को पहचानने के उद्देश्य से मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित यह दिन बच्चों को उनके बचपन का मूल अधिकार, खेल सुनिश्चित करने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है ।खेल एक बेहतर दुनिया बनाता है ।11 जून 2025 को मनाए जा रहे अंतर्राष्ट्रीय खेल दिवस, खेल को संरक्षित करने, बढ़ावा देने और प्राथमिकता देने के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, ताकि सभी लोग, विशेष रूप से बच्चे, इसके लाभों का लाभ उठा सकें और अपनी पूरी

क्षमता तक पहुंच सकें ।महज मनोरंजन से परे, खेल सभी उम्र के लोगों द्वारा बोली जाने वाली एक सार्व भौमिक भाषा है, जो राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और सामाजिक- आर्थिक सीमाओं से परे है। यह साझा जुनून समुदाय और राष्ट्रीय गौरव की भावना को बढ़ावा देता है ।यह व्यक्तियों में लचीलापन, रचनात्मकता और नवाचार को भी बढ़ावा देता है। विशेष रूप से बच्चों के लिए, खेल संबंध बनाने और नियंत्रण में सुधार करने, आघात से उबरने और समस्या- समाधान में मदद करता है। यह बच्चों को संज्ञानात्मक,शारीरिक, रचनात्मक, सामाजिक और भावनात्मक कौशल विकसित करने में मदद करता है, जिनकी उन्हें तेजी से बदलती दुनिया में पनपने के लिए आवश्यकता होती है ।खेलने के अवसरों को सीमित करना सीधे तौर पर बच्चे की भलाई और विकास में बाधा डालता है। शैक्षिक सेटिंग्स में, खेल-आधारित शिक्षा को छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए एक प्रभावी दृष्टिकोण के रूप में मान्यता दी गई है। यह सीखने को अधिक आनंददायक और प्रासंगिक बनाने में मदद करता है, जिससे प्रेरणा और जानकारी को बनाए रखने में वृद्धि होती है ।इसके अलावा, खेल को सहिष्णुता, लचीलापन को बढ़ावा देने और सामाजिक समावेशन ,संघर्ष की रोकथाम और शांति निर्माण को सुविधाजनक बनाने पर सकारात्मक प्रभाव डालने वाला माना जाता है । इसे मान्यता देते हुए, बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन ने अनुच्छेद 31 के तहत खेल को हर बच्चे के मौलिक अधिकार के रूप में सुनिश्चित किया है ।यह अंतर्राष्ट्रीय दिवस वैश्विक, राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर खेल के महत्व को बढ़ाने के लिए एक एकीकृत क्षण बनाता है। यह दुनिया भर में शिक्षा और सामुदायिक सेटिंग्स में खेल को एकीकृत करने के लिए नीतियों, प्रशिक्षण और वित्तपोषण के लिए आह्वान करता है।

साथियों बात अगर हम खेलों का बच्चों के जीवन में अतिमहत्वपूर्ण स्थान होने की करें तो, बच्चे खेल के माध्यम से सबसे अच्छा सीखतेहैं ।खेल विकासके सभी क्षेत्रोंबौद्धिक सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक - में शक्तिशाली सीखने के अवसर पैदा करते हैं। खेल के माध्यम से, बच्चे दूसरों के साथ संबंध बनाना, नेतृत्व कौशल की एक विस्तृत श्रृंखला का निर्माण करना, लचीलापन विकसित करना, रिश्तों और सामाजिक चुनौतियों का सामना करना और साथ ही अपने डर पर विजय प्राप्त करना सीखते हैं। जब बच्चे खेलते हैं, तो वे सुरक्षित महसूस करते हैं। बच्चे अपने आस-पास की दुनिया को समझने के लिए खेलते हैं ।आम तौर पर,खेल बच्चों को कल्पना और रचनात्मकता को व्यक्त करने और विकसित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है, जो कि प्रौद्योगिकी-संचालित और अभिनव दुनिया के लिए महत्वपूर्ण कौशल हैं जिसमें हम रहते हैं ।चंचल बातचीत माता-पिता, देखभाल करने वालों और बच्चों के कल्याण और सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य में योगदान देती है। जब मानवीय संकट बच्चे की दुनिया को उलट-पुलट कर देते हैं, तो खेल के ज़रिए ही बच्चे प्रतिकूल अनुभव से सुरक्षा और राहत पा सकते हैं, साथ ही दुनिया के साथ अपने अनुभवों का पता लगाने और उन्हें संसाधित करने में भी सक्षम हो सकते हैं। जब बच्चों को युद्ध, संघर्ष और विस्थापन के कारण उनके घरों से निकाल दिया जाता है, तो माता-पिता/देखभाल करने वालों और साथियों के साथ पोषण संबंधों तक पहुँच हिंसा, संकट और अन्य प्रतिकूल अनुभवों के प्रभावों से महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच होती है। खेल बच्चों को आराम और सुकून देते हैं ।माता-पिता/देखभालकर्ताओं और बच्चों के बीच खेलपूर्ण बातचीत को प्रोत्साहित करने के लिए, सरकारों और अन्य हितधारकों को एक अनुकूल वातावरण बनाने की आवश्यकता है।

साथियों बात अगर हम खेलों का महत्व व 2025 की थीम की करें तो, विज्ञानसतह पर, खेल ऐसा लग सकता है कि यह केवल मनोरंजन के लिए है, लेकिन शिशुओं और नन्हे बच्चों के लिए यह उससे कहीं ज़्यादा है। यह महत्वपूर्ण जीवन कौशल सीखने और विकसित करने के बारे में है, समस्या समाधान से लेकर विचारों को व्यक्त करने तक, भारतीय पौराणिक खेलों के बारे में कुछ उदाहरण: कुश्ती:कुश्ती एक प्राचीन भारतीय खेल है जो महाभारत काल से जुड़ा हुआ है। रथ दौड़:रथ दौड़ एक प्राचीन भारतीय खेल था जो विभिन्न राजाओं और राजकुमारों के बीच होता था। तीरंदाजी:तीरंदाजी भी एक प्राचीन भारतीय खेल है जो महाभारत काल से जुड़ा हुआ है। बाँस वाली छड़ी का खेल:यह खेल भी महाभारत काल से जुड़ा हुआ है और इसे ₹बाँस वाली छड़ी₹ के रूप में जाना जाता, भारतीय पौराणिक खेलों के बारे में कुछ उदाहरण: कुश्ती:कुश्ती एक प्राचीन भारतीय खेल है जो महाभारत काल से जुड़ा हुआ है ।रथ दौड़:रथ दौड़ एक प्राचीन भारतीय खेल था जो विभिन्न राजाओं और राजकुमारों के बीच होता था ।तीरंदाजी:तीरंदाजी भी एक प्राचीन भारतीय खेल है जो महाभारत काल से जुड़ा हुआ है ।बाँस वाली छड़ी का खेल:यह खेल भी महाभारत काल से जुड़ा हुआ है और इसे ₹बाँस वाली छड़ी₹ के रूप में जाना जाता,अंतर्राष्ट्रीय खेल दिवस 2025 का विषय क्या है? इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय खेल दिवस का विषय है ₹खेल चुनें - हर दिन₹। यह विषय हम सभी को - सरकारों, व्यवसायों, स्कूलों और परिवारों को - याद दिलाता है कि हमें ऐसे निर्णय लेने चाहिए जो बच्चों के लिए खेल को अपनाएँ और उन्हें प्राथमिकता दें।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अंतरराष्ट्रीय खेल दिवस 11 जून 2025- बच्चों के खेलने से उनका शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक विकास तेज़ी से होता है।अंतरराष्ट्रीय खेल दिवस का उद्देश्य खेलों को संरक्षित रखना,बढ़ावा देनां व विशेष रूप से बच्चों को इसकालाभ उठाने के लिए प्रेरित करना है,भारतीय खेलों गिल्ली - डंडा, ख़ो-ख़ो, लंगडी, कांचे सहित अनेको पारंपरिकखेलों को राष्ट्रीय परिपेक्ष में लाकर फिर अंतरराष्ट्रीय मंच केलक्ष्य का संज्ञान लेना ज़रूरी।

डुकाटी स्क्रैम्बलर 1100 ग्लोबल बाजार में हुई बंद, इन बेहतरीन फीचर्स से थी लैस

परिवहन विशेष न्यूज

डुकाटी स्क्रैम्बलर1100 को ग्लोबल बाजार से हटा दिया गया है जिसका असर भारत में भी दिख रहा है। डुकाटी इंडिया ने पुष्टि की है कि मोटरसाइकिल को वेबसाइट से हटा दिया गया है क्योंकि यह यूरो5+ उत्सर्जन मानकों को पूरा नहीं करती। 2018 में लॉन्च हुई इस बाइक में 1079 cc का एल-ट्विन इंजन था। कंपनी 803cc स्क्रैम्बलर की बिक्री जारी रखेगी।

नई दिल्ली। डुकाटी स्क्रैम्बलर 1100 को ग्लोबल बाजार से हटा दिया गया है, जिसका असर भारत में भी देखने के लिए मिल रहा है। डुकाटी इंडिया ने इसकी पुष्टि की है और इस मोटरसाइकिल को अपनी वेबसाइट से भी हटा दिया है। इसे आगामी यूरो5+ उत्सर्जन मानकों को पूरा करने के लिए अपग्रेड नहीं किया गया, जो यूरोप के लिए लागू होने वाले हैं। जिससे सीधा पता चल रहा है कि यह भारत के BS6.2 मानकों का भी पालन नहीं कर पाएगी। डुकाटी स्क्रैम्बलर 1100 को भारत में 7 साल के सफर के बाद बंद किया गया है।

2018 में हुई थी लॉन्च

Ducati Scrambler 1100 को पहली बार 2018 में लॉन्च किया गया था। इस बाइक 1,079 cc एल-ट्विन इंजन दिया गया था, जो 85 bhp और 88 Nm का टॉर्क जनरेट करता था। इसके इंजन को 6-स्पीड गियरबॉक्स और स्लिपर क्लच के साथ जोड़ा गया था। इस इंजन का इस्तेमाल 2009 से किया जा रहा है, तब इसे हाइपरमोटार्ड और मॉन्स्टर 1100 में लगाया जा चुका है।

2018 में स्क्रैम्बलर 1100 को को कई अपडेट दिए गए थे, जिनमें ऑयल-कूलिंग सिस्टम, राइड-बाय-वायर और कई सेफ्टी फीचर्स शामिल थे। अपडेटेड इंजन के साथ यह बाइक तब से बिक्री की जा रही थी।

Scrambler 1100 क्यों हुई बंद?

Ducati Scrambler हमेशा से ही एक नीश ऑफरिंग रही है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 13.40 लाख से 16 लाख रुपये के बीच थी। इसकी कीमत के हिसाब से यह सबसे ज्यादा पावरफुल ऑप्शन में नहीं आती थी। इस बाइक के बंद होने के बाद यह देखना होगा कि क्या कंपनी आने वाले वर्षों में ज्यादा मॉडर्न इंजन के साथ कोई नई ज्यादा पावरफुल स्क्रैम्बलर लॉन्च करती है या नहीं।

भले ही Scrambler 1100 को ग्लोबल बाजार में बंद कर दिया गया है, लेकिन कंपनी अपनी 803 सीसी स्क्रैम्बलर को बेचना जारी रखेगी। इसका इंजन 72 बीएचपी और 65 एनएम का पीक टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 6-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 9.97 लाख रुपये से शुरू होकर 12.60 लाख रुपये तक जाती है।

वोक्सवैगन ताइगुन और वर्टिस अब तक का सबसे बड़ा डिस्काउंट, 2.70 लाख रुपये की मिल रही छूट

परिवहन विशेष न्यूज

वोक्सवैगन इंडिया जून 2025 में Virtus सेडान और Taigun SUV के कुछ मॉडलों पर आकर्षक डिस्काउंट दे रही है। यह ऑफर बिक्री बढ़ाने और इन्वेंटरी खाली करने के लिए है। Virtus के स्पोर्ट्स वेरिएंट पर 1.20 लाख रुपये तक और क्रोम वेरिएंट पर 2.20 लाख रुपये तक की छूट मिल रही है। Taigun स्पोर्ट्स वेरिएंट पर 1.15 लाख और क्रोम वेरिएंट पर 2.70 लाख रुपये तक की छूट है।

नई दिल्ली। वोक्सवैगन इंडिया ने अपनी पॉपुलर मॉडल्स Virtus सेडान और Taigun SUV के कुछ वेरिएंट पर जून 2025 में शानदार डिस्काउंट ऑफर कर रही है। कंपनी यह डिस्काउंट ऑफर अपनी गाड़ियों की बिक्री को बढ़ाने और इन्वेंटरी को क्लियर करने के लिए लेकर आई है। Volkswagen की गाड़ियों पर मिल रहे ऑफर शहर और डीलरशिप के हिसाब से अलग-अलग हो सकती है। इसलिए सटीक जानकारी के लिए अपनी नजदीकी डीलरशिप पर जाकर जरूर संपर्क करें। आइए जानते हैं कि Volkswagen Taigun पर Virtus पर कितना डिस्काउंट मिल रहा है?

Volkswagen Virtus पर डिस्काउंट

Virtus के दो वेरिएंट पर जून 2025 में डिस्काउंट ऑफर दिया जा रहा है, जो Sports और Chrome है। इसके Sports वेरिएंट के GT Line 1.0L TSI AT पर 1.15 लाख रुपये तक की छूट दी जा रही है। साथ ही इसके 1.5L TSI DSG पर 1.20 लाख रुपये तक की छूट के साथ 20,000 रुपये का स्क्रैपेज बेनिफिट भी मिल रहा है।

Virtus Chrome वेरिएंट के Highline 1.0L TSI AT पर 2.15 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। साथ ही 20,000 रुपये का स्क्रैपेज बेनिफिट भी मिल रहा है। Virtus Topline 1.0L TSI MT पर उसी स्क्रैपेज ऑफर के साथ 2.20 लाख रुपये और GT Plus Chrome 1.5L TSI DSG पर 1.55 लाख रुपये तक की छूट दी जा रही है।

भारत में Volkswagen Virtus की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 10.54 लाख रुपये है।

Volkswagen Taigun पर डिस्काउंट

Taigun Sports वेरिएंट के GT Line 1.0L TSI AT पर 1.15 लाख रुपये की छूट दी जा रही है। इसके GT Plus Sport 1.5L TSI DSG पर 1.85 लाख रुपये तक की छूट के साथ 20,000 रुपये का स्क्रैपेज ऑफर दिया जा रहा है।

Taigun Chrome वेरिएंट के Highline 1.0L TSI AT पर खरीदार 1.40 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। Topline 1.0L TSI AT पर 2.20 लाख रुपये तक की छूट दी जा रही है। सबसे ज्यादा डिस्काउंट ऑफर GT Plus Chrome 1.5L TSI DSG वेरिएंट पर 2.70 लाख रुपये तक का दिया जा रहा है। इसके साथ ही 20,000 रुपये का स्क्रैपेज बेनिफिट भी दिया जा रहा है।

Volkswagen Taigun की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 10.99 लाख रुपये है।

2030 तक टाटा मोटर्स लॉन्च करेगी 30 कारें; सात होंगी एकदम नई गाड़ियां, सिएरा से लेकर अविन्या तक लिस्ट में शामिल

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में आने वाली टाटा कारें टाटा मोटर्स ने 2030 तक 30 नए प्रोडक्ट लॉन्च करने की योजना बनाई है जिसमें 7 बिल्कुल नई गाड़ियां शामिल हैं। कंपनी 2026 से 2030 के बीच पैसेंजर और इलेक्ट्रिक वाहनों में 33000-35000 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। इस निवेश का उद्देश्य सॉफ्टवेयर-डिफाइंड व्हीकल्स और नेक्स्ट जेनरेशन के पावरट्रेन को

डेवलप करना है। कंपनी का फोकस माइक्रो-सेगमेंट्स पर है।

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स ने हाल ही में अपने इनवेस्टर्स डे इवेंट में 2030 तक का प्लान बताया। कंपनी ने अलगे पांच साल में कंपनी 30 नए प्रोडक्ट लाने की प्लानिंग कर रही है। इसमें हाल में आने वाली गाड़ियों को अपडेट करने के साथ ही नई कारें भी शामिल है। 2030 तक कंपनी अपने पोर्टफोलियो में 15 अलग-अलग नाम शामिल करने वाली है, जो हाल में 8 है। टाटा मोटर्स ने यह घोषणा ऐसे समय में की है, जब हुंडई ने भी भारत में 2030 तक 26 मॉडल लॉन्च करने की योजना बनाई है।

टाटा लॉन्च करेगी सात नई गाड़ियां

टाटा मोटर्स के इस प्लान में 2026 से 2030 के बीच अपने पैसेंजर व्हीकल भी शामिल है, जिसमें इलेक्ट्रिक गाड़ियां भी है। इस बीच कंपनी करीब 33,000-35,000 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। यह पैसा सॉफ्टवेयर-डिफाइंड व्हीकल्स (SDVs), और अगली जनरेशन के पावरट्रेन को डेवलप करने के लिए किया जाएगा। कंपनी का ज्यादातक फोकस माइक्रो-सेगमेंट्स पर है ताकि अगले 18-24 महीनों से आगे भी वृद्धि बरकरार रखी जा सके।

सात नई गाड़ियां कौन सी होंगी?

टाटा मोटर्स साल 2030 तक 30 प्रोडक्ट लेकर आने वाला है, जिसमें से 23 तो मौजूदा मॉडल के अपडेट्स होने वाले है। इसमें नेक्सॉन की अलगी जनरेशन, च ICE का फेसलिफ्ट, और हैरियर व सफारी के लिए नया पेट्रोल इंजन तक शामिल है। सबसे ज्यादा ध्यान उन 7 गाड़ियों को लेकर है, जो एकदम नई होने वाली है। कंपनी साल 2025 के अंत तक Sierra का ICE और EV दोनों वेरिएंट लॉन्च कर सकती है। इसके साल 2027 में Avinya रेंज को लॉन्च किया जा सकता है।

इसके अलावा बाकि चार गाड़ियों में से दो इलेक्ट्रिक और दो ICE मॉडल्स होने वाली है। कंपनी की तरफ से अभी तक इनके बारे में किसी तरह की जानकारी नहीं दी गई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, इन दोनों को नेक्सॉन और पंच के नीचे लाया जा सकता है। यह कूपे SUV हो सकती है। एक बात पक्की है कि यह दोनों ही गाड़ियां किसी न किसी रूप में SUV होने वाली है।

क्रिसिल की चेतावनी- 'रेयर अर्थ' संकट है असली, और आगे और बिगड़ सकता है

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। रेयर अर्थ यानी दुर्लभ खनिज, ये शब्द अब सिर्फ साइंस की किताबों तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि अब भारत समेत पूरी दुनिया के ऑटो सेक्टर के लिए ये चिंता का बड़ा कारण बन चुके हैं। क्रिसिल की एक नई रिपोर्ट ने इस खतरे को और गंभीर रूप में सामने रखा है। रिपोर्ट बताती है कि चीन की सख्ती और सप्लाई चेन में आई रुकावटें अब भारत के इलेक्ट्रिक व्हीकल (ईवी) मिशन को तगड़ा झटका दे सकती हैं।

चीन की पकड़ और कस रही है

क्रिसिल की रिपोर्ट के मुताबिक, चीन ने रेयर अर्थ मटेरियल्स के निर्यात पर अपनी प्रक्रिया और सख्त कर दी है। किसी भी एक्सपोर्ट क्लियरेंस में अब कम से कम 45 दिन लग रहे हैं, और लगातार बढ़ती जांच-पड़ताल से मंजूरी में देर हो रही है। इससे ग्लोबल सप्लाई चेन पर दबाव बढ़ गया है। भारत ने पिछले वित्त वर्ष में 540 टन मैग्नेट की जरूरत का 80 प्रतिशत हिस्सा चीन से आयात किया था। लेकिन मई 2025 के अंत तक भारत सरकार ने करीब 30 इंपोर्ट रिक्वेस्ट को मंजूरी दी थी। लेकिन एक भी शिपमेंट को चीन की तरफ से क्लियरेंस नहीं मिल पाया है। इससे भारतीय कंपनियों की शिपमेंट फंसी हुई हैं।

ईवी सेक्टर के लिए खतरे की घंटी

रेयर अर्थ मटेरियल्स, खासतौर पर मैग्नेट, इलेक्ट्रिक मोटर्स जैसे PMSM (परमानेंट मैग्नेट सिंक्रोनस मोटर्स) के लिए बेहद जरूरी होते हैं। ये मोटर्स ईवी टू-व्हीलर से लेकर हाइब्रिड और आईसीई (इंटरनल कंबशन इंजन) गाड़ियों तक में इस्तेमाल होती हैं। इनमें इलेक्ट्रिक पावर स्टीयरिंग जैसे फीचर्स में भी ये मैग्नेट काम आते हैं। भारत सरकार जहां 2026 तक ईवी पैसेंजर व्हीकल्स में 35-40 प्रतिशत ग्रोथ का अनुमान लगा रही थी। वहीं अब सप्लाई चेन में आई रुकावट से इस ग्रोथ पर असर पड़ सकता है। टू-व्हीलर ईवी सेक्टर में 27 प्रतिशत ग्रोथ की उम्मीद जताई गई थी। लेकिन यदि हालात नहीं सुधरे तो टाटा मोटर्स, महिंद्रा, बजाज, टीवीएस और ओला जैसे ब्रांड्स की आने वाली लॉन्च भी टल सकती हैं।

2030 के ईवी लक्ष्य पर भी असर संभव

अगर स्थिति लंबे समय तक यही रही तो भारत सरकार का 2030 तक 30 प्रतिशत फोर-व्हीलर ईवी और 80 प्रतिशत टू या थ्री-व्हीलर ईवी का लक्ष्य भी खटाई में पड़ सकता है। उत्पादन और लॉजिस्टिक दोनों पर बड़ा असर होगा।

क्रिसिल रेटिंग्स के सीनियर डायरेक्टर अनुज सेठी के मुताबिक, ऑटो सेक्टर जैसे ही बड़े पैमाने पर ईवी लॉन्च की तैयारी कर रहा है, वैसा में यह सप्लाई संकट बेहद बुरा समय लेकर आया है। जुलाई 2025 से कई ईवी मॉडल्स की लॉन्चिंग टालनी पड़ सकती है, क्योंकि अभी अधिकांश कंपनियों के पास 4-6 हफ्तों का ही स्टॉक है।

रेयर अर्थ की निर्भरता और विकल्प

कोविड महामारी के दौरान रेयर अर्थ की सप्लाई स्थिर रही थी, जिसकी वजह से कंपनियों ने इसका स्टॉक करने की जगह रजस्ट इन टाइमस्ट मॉडल को फॉलो किया। लेकिन अब जब 90 प्रतिशत प्रोसेसिंग सिर्फ चीन में हो रही है, तब कोई भी विकल्प जल्दी मिल पाना मुश्किल है। क्रिसिल की डायरेक्टर पूनम उपाध्याय ने बताया कि इन मैग्नेट्स की कीमत गाड़ी की कुल लागत का सिर्फ 5 प्रतिशत होती है। लेकिन इनकी जरूरत इतनी ज्यादा है कि इनके बिना ईवी मोटर और इलेक्ट्रिक स्टीयरिंग संभव नहीं। कंपनियां अब वियतनाम, इंडोनेशिया, जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका जैसे देशों में वैकल्पिक सप्लायर्स की तलाश में जुट गई हैं।

2026 में लॉन्च होगी टाटा सिएरा ईवी और आइस मॉडल, कई प्रीमियम और लग्जरी फीचर्स से होगी लैस

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स ने Tata Sierra EV और ICE मॉडल के लॉन्च होने की पुष्टि कर है। जो कार एक समय भारत की सड़को पर राज करती थी, अब उसकी फिर से वापसी होने वाली है। इसके बारे में कंपनी ने एक निवेशकों की बैठक के दौरान बताया है। जिसके मुताबिक, कंपनी पहले 2025 के अंत तक सिएरा ईवी (Sierra EV) लॉन्च करेगी, और फिर 2026 की शुरुआत में सिएरा आईसीई (ICE) मॉडल को लॉन्च करेगी। कुछ ऐसा ही टाटा कर्व के समय भी देखने के लिए मिला था। आइए जानते हैं कि Sierra EV और ICE में क्या कुछ खास देखने के लिए मिल सकता है?

Tata Sierra का डिजाइन

नई Sierra EV का डिजाइन पुराने मॉडल से बहुत ज्यादा अलग है, लेकिन इसमें एक बड़ा ग्लास एरिया और बॉक्सी सिल्हुट दिया गया, जो पुरानी सिएरा की याद दिलाता है। इसे 2025 भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो में पेश किया गया था। वहीं, नई सिएरा का लुक लोगों को काफी पसंद भी आया था। इसके रैप-अराउंड रियर विंडो को शानदार टच देने के साथ ही अलग डिजाइन भी दिया गया है, जो भारतीय बाजार में आने वाली किसी भी कार में देखने के लिए नहीं मिलता है।

Tata Sierra का इंटीरियर

इसका इंटीरियर कई बेहतरीन और प्रीमियम फीचर्स से लैस रहने वाला है। इसमें तीन स्क्रीन सेटअप देखने के लिए मिलेगी, जिसकी कुछ फोटोज हाल ही में वायरल हुई है। इसमें चार-स्पोक डिज़ाइन वाले स्टीयरिंग देखने के लिए मिल सकते है। टाटा की इस कार में ADAS फीचर्स देखने के लिए मिल सकता है।

Tata Sierra का पावरट्रेन

टाटा सिएरा में 1.5-लीटर पेट्रोल और डीजल इंजन देखने के लिए मिल सकता है या फिर हैरियर वाला 2.0-लीटर मल्टीजेट इंजन भी दिया जा सकता है। इसके इलेक्ट्रिक वेरिएंट को दो बैटरी पैक के साथ ऑफर किया जा सकता है। टाटा मोटर्स ने हाल ही में क्वाड व्हील ड्राइव पेश किया है, जो नई हैरियर ईवी में देखने के लिए मिला है। यह फीचर सिएरा में भी देखने के लिए मिल सकता है।

जून 2025 में मारुति कारें पर 1.33 लाख तक की छूट, बैलेनो और ग्रैंड विटारा पर सबसे ज्यादा डिस्काउंट

परिवहन विशेष न्यूज

मारुति सुजुकी के नेक्सा डीलरशिप पर जून 2025 में Grand Vitara Ignis Baleno Fronx Jimny XL6 और Invicto जैसी गाड़ियों पर भारी डिस्काउंट मिल रहा है। इन मॉडलों पर 1.33 लाख रुपये तक की छूट उपलब्ध है। Ignis पर 48100 रुपये तक Baleno पर 1.07 लाख रुपये तक Fronx पर 45000 रुपये तक और Jimny पर 70000 रुपये तक की छूट दी जा रही है।

नई दिल्ली। Maruti Suzuki के Nexa डीलरशिप की गाड़ियों पर जून 2025 में बंपर डिस्काउंट मिल रहा है। इस डिस्काउंट ऑफर का फायदा Maruti Grand Vitara, Ignis, Baleno, Fronx, Jimny, XL6 और Invicto को खरीदने पर मिलेगा। इन गाड़ियों पर 1.33 लाख रुपये तक की छूट दी जा रही है। आइए जानते हैं जून 2025 में Maruti Suzuki के Nexa डीलरशिप पर मिल रही गाड़ियों के डिस्काउंट के बारे में।

Maruti Ignis

जून 2025 में Ignis पर 48,100 रुपये तक का डिस्काउंट मिल रहा है। इसके नुअल ट्रांसमिशन (MT) ट्रिम्स पर 20,000 रुपये की नकद छूट दी जा रही है। इसके सभी वेरिएंट पर 15,000 रुपये का एक्सचेंज बोनस, 30,000 रुपये का स्क्रैपेज बोनस, 2,100 रुपये का कॉर्पोरेट डिस्काउंट और 3,100 रुपये का ग्रामीण डिस्काउंट दिया जा रहा है। Maruti Ignis की एक्स-शोरूम कीमत 5.85 लाख रुपये से 8.12 लाख रुपये के बीच है।

Maruti Baleno

जून 2025 में Baleno पर 1.07 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसके पेट्रोल-मैनुअल वेरिएंट्स पर 25,000 रुपये की कम नकद छूट और एएमटी ट्रिम्स पर 30,000 रुपये की नकद छूट दी जा रही है। इसके सभी वेरिएंट पर 15,000 रुपये का एक्सचेंज बोनस, 25,000 रुपये का स्क्रैपेज बोनस और 2,100 रुपये का ग्रामीण ऑफर दिया जा रहा है। इसके अलावा, 3 साल से अधिक पुरानी नहीं हुई स्विफ्ट या बलेनो एक्सचेंज करने पर 50,000 रुपये का अतिरिक्त एक्सचेंज बोनस दिया जा रहा है। Maruti Baleno की एक्स-शोरूम कीमत 6.70 लाख रुपये से 9.92 लाख रुपये के बीच है।

Maruti Fronx

Fronx पर 45,000 लाख रुपये तक का डिस्काउंट ऑफर है। इसके सभी वेरिएंट पर 10,000 रुपये का एक्सचेंज और 15,000 रुपये का स्क्रैपेज बोनस दिया जा रहा है। इसके पेट्रोल-मैनुअल और सीएनजी वेरिएंट्स पर क्रमशः 17,000 रुपये और 10,000 रुपये की नकद छूट दी जा रही है। Maruti Fronx की एक्स-शोरूम कीमत 7.54 लाख रुपये से 13.04 लाख रुपये के बीच है।

Maruti Jimny

जून 2025 में Jimny पर 70,000 रुपये तक का डिस्काउंट ऑफर मिल रहा है। इसके अल्फा ट्रिम पर 70,000 रुपये की नकद छूट दी जा रही है। इसके लोअर-स्पेक जेटा वेरिएंट पर इस महीने कोई डिस्काउंट नहीं दिया जा रहा है। Maruti Jimny की एक्स-शोरूम कीमत 12.76 लाख रुपये से 14.96 लाख रुपये के बीच है।

Maruti Grand Vitara

Grand Vitara पर 1.33 लाख रुपये तक का डिस्काउंट ऑफर दिया जा रहा है। इसके CNG ट्रिम पर 20,000 रुपये का एक्सचेंज बोनस, 35,000 रुपये का स्क्रैपेज बोनस और 3,100 रुपये का ग्रामीण डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसके बेस-स्पेक सिग्मा वेरिएंट पर 30,000 रुपये का एक्सचेंज बोनस और 3,100 रुपये का ग्रामीण डिस्काउंट मिल रहा है। इसके सभी नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल वेरिएंट्स पर 35,000 रुपये का स्क्रैपेज बोनस भी दिया जा रहा है। डेल्टा, जेटा और अल्फा ट्रिम्स पर 45,000 रुपये का स्क्रैपेज बोनस दिया जा रहा है।

इसके मिड-स्पेक डेल्टा ट्रिम पर 30,000 रुपये की नकद छूट या 11,000 रुपये में डोमिनियन किट एक्सेसरी पैक ऑफर किया जा रहा है। हायर-स्पेक जेटा और अल्फा ट्रिम्स पर 20,000 रुपये की कम नकद छूट या 15,000 रुपये में डोमिनियन किट एक्सेसरी पैक ऑफर दिया जा रहा है। Maruti Grand Vitara एक्स-शोरूम कीमत 11.42 लाख रुपये से 20.68 लाख रुपये के बीच है।

Maruti XL6

जून 2025 में XL6 पर 20,000 रुपये तक का डिस्काउंट मिल रहा है। इसके सभी वेरिएंट पर 20,000 रुपये का एक्सचेंज बोनस और 25,000 रुपये का स्क्रैपेज बोनस दिया जा रहा है। Maruti XL6 की एक्स-शोरूम कीमत 11.84 लाख रुपये से 14.87 लाख रुपये तक है।

Maruti Invicto

Invicto पर 1.25 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसके दोनों वेरिएंट पर 1 लाख रुपये का एक्सचेंज और 1.15 लाख रुपये का स्क्रैपेज बोनस दिया जा रहा है। Maruti Invicto की एक्स-शोरूम कीमत 25.51 लाख रुपये से 29.22 लाख रुपये के बीच है।

विकास के समांतर चुनौतियों की राह

विजय गर्ग

भारत की अर्थव्यवस्था आज तेजी से बढ़ती दिख रही है तो ऐसा आर्थिक नीतियों के कारण संभव हो पाया है। मगर इसके साथ ही कुछ चुनौतियां भी हैं। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के ताजा आंकड़ों के अनुसार हम चार ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था हैं। आज भारत जापान से बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। अब केवल अमेरिका, चीन और जर्मनी ही भारत से बड़ी अर्थव्यवस्थाएं हैं नीति आयोग का मानना है कि यदि हम अपनी आर्थिक योजनाएं सोच-विचार कर बनाते रहें, तो अगले ढाई तीन साल के भीतर हम तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएंगे। देश की अर्थव्यवस्था को इस मुकाम तक पहुंचाने में विगत वर्षों में किए आर्थिक सुधारों की बड़ी भूमिका रही है। वर्ष 1991 में भुगतान संतुलन संकट का सामना करना पड़ रहा था, तब मुद्रा कोष से सहायता लेनी पड़ी। इस दौरान आर्थिक सुधार प्रारंभ किए गए। इन सुधारों का उद्देश्य अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों जैसे उद्योग, व्यापार, वित्त और विदेशी निवेश में सरकारी हस्तक्षेप एवं विनियमन को कम करना था। इन । इन सुधारों में लाइसेंस और र परमिट-कोटा प्रणाली को समाप्त करना भी शामिल था, जो निजी कंपनियों के प्रवेश एवं विस्तार को प्रतिबंधित करती थी। उदारीकरण की इन नीतियों से भारत को उच्च विकास दर प्राप्त करने और वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत होने में मदद मिली। सरकार के स्वामित्व या नियंत्रण में रहे सार्वजनिक उपक्रमों का भी निजीकरण किया गया। वर्ष 1991 के बाद भारत ने 60 से अधिक सार्वजनिक उपक्रमों का निजीकरण किया, जिससे तीन लाख करोड़ रुपए से अधिक राशि प्राप्त हुई। भारत ने उदारीकरण को भी अपनाया, जिसका उद्देश्य विश्व अर्थव्यवस्था के साथ अपने खुलेपन और एकीकरण को देश में कोविड- 19 महामारी और अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव की दृष्टि से वर्ष 2020 में एक नई आर्थिक नीति की घोषणा की गई। इस नीति में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों और खंडों को समर्थन को समर्थन प्रदान करने करने के लिए 20 लाख करोड़ रु रुपए के प्रोत्साहन पैकेज दिए गए, जो पैकेज दिए गए, जो सकल घरेलू उत्पाद के दस फीसद के थे। । इस नीति में कृषि, श्रम, शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा, 'खनन, बिजली और कराधान जैसे क्षेत्रों में सुधारों की एक श्रृंखला भी शामिल की गई। इस नीति का लक्ष्य भारत को महामारी के बाद विश्व में । आत्मनिर्भर बनाना था। आर्थिक सुधारों के अंतर्गत दिवाला एवं शोधन अक्षमता संहिता को लागू किया गया, जिसका उद्देश्य कारपोरेट देनदारों, वित्तीय ऋणदाताओं और परिचालन ऋणदाताओं के दिवाला एवं शोधन के मामल । को हल करने के लिए समयबद्ध एवं बाजार आधारित तंत्र प्रदान करना था।

इसी कड़ी में श्रम सुधार दृष्टि से चार संहिताएं बनाई गई, जिनका उद्देश्य केंद्रीय श्रम कानूनों को चार चार व्यापक श्रेणियों समेकित एवं सरलीकृत करना था, इसके अंतर्गत वेतन, औद्योगिक संबंध, सामाजिक सुरक्षा एवं व्यावसायिक सुरक्षा और स्वास्थ्य से से जुड़े प्रावधानों को सम्मिलित किया गया। ये संहिताएं नियोक्ताओं को कामगारों को नियोजित करने एवं कार्यमुक्त करने में लचीलापन प्रदान करने, व्यवसायों के लिए पंजीकरण एवं अनुपालन की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने, अनौपचारिक कामगारों को सामाजिक सुरक्षा लाभ प्रदान करने और मजदूर संगठनों के माध्यम से सामूहिक सौदेबाजी को बढ़ावा देने की दृष्टि से अहम हैं। इसी प्रकार उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना भी कुछ क्षेत्रों में लागू की गई। आटोमोबाइल, इलेक्ट्रानिक्स, कपड़ा, औषधि और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे प्रमुख क्षेत्रों में विनिर्माण एवं निर्यात को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2020 में यह योजना शुरू की गई। इस योजना के अंतर्गत पात्र निर्माताओं को पांच वर्षों की अवधि में उनकी बिक्री और निवेश के आधार पर वित्तीय प्रोत्साहन दिए गए। इसका कुल परिव्यय 1.46 लाख करोड़ रुपए था। इससे रोजगार सृजन, विदेशी निवेश आकर्षित करने, प्रतिस्पर्धा बढ़ाने और आयात पर निर्भरता कम करने के प्रयास किए गए। इन सभी उपायों के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था में सुधार होता गया और हम चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गए।

आर्थिक विकास के साथ-साथ अब भी कई चुनौतियां बनी हुई हैं जो अर्थव्यवस्था की बढ़ती गति में बाधाएं उत्पन्न कर सकती हैं। निम्न आय वृद्धि, उच्च मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के कारण भारत में वस्तुओं और सेवाओं की मांग उतनी तेजी से नहीं बढ़ रही है जितनी । एक विकसित अर्थव्यवस्था के लिए अपेक्षित है। । इससे । अर्थव्यवस्था में उपभोग और निवेश का स्तर भी प्रभावित हुआ जिससे सरकार के राजस्व में उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हो सकी। तीव्र आर्थिक विकास के बावजूद ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बेरोजगारी आज भी एक गंभीर समस्या है। कोविड-19 महामारी के कारण बंद हुए व्यवसाय अभी तक पूरी तरह संभल नहीं पाए हैं जिससे रोजगार का स्तर सुधर नहीं पाया है 'सेंटर फार मानिटरिंग इंडियन इकानोमी' 'की ओर से जारी आंकड़ों के अनुसार जून 2024 में भारत की बेरोजगारी दर 9.2 फीसद रही, जो मई 2024 में सात फीसद से 'अधिक है अप्रैल 2025 में 15 वर्ष की आयु के युवाओं के लिए सामान्य स्थिति पर बेरोजगारी दर 10.2 फीसद थी। देश में सड़क, रेलवे, बंदरगाह, बिजली, पानी और स्वच्छता जैसी पर्याप्त अवसंरचना का भी अभाव है, जिससे तेज आर्थिक विकास और प्रतिस्पर्धा प्रभावित होती है। विश्व बैंक के अनुसार भारत का अवसंरचनात्मक अंतराल लगभग 1.5 ट्रिलियन डालर होने का अनुमान है। कमजोर अवसंरचना लोगों के जीवन की गुणवत्ता और स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है, ग्रामीण क्षेत्रों में इसका अधिक प्रभाव पड़ता है।

भुगतान संतुलन का बिगड़ना भी बड़ी समस्या है। चालू खाता लगातार घाटे से जूझ रहा है। यह हमारे आयात-निर्यात से अधिक है जिसके कारण यह समस्या है। बढ़ती अर्थव्यवस्था के साथ प्रति व्यक्ति आय देखना भी महत्त्वपूर्ण है। भारत ने जापान को पीछे छोड़ कर चौथी अर्थव्यवस्था का दर्जा हासिल किया है, लेकिन प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से अभी भी पीछे ही हैं। भारत की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 2.44 लाख रुपए हैं। जबकि जापान की प्रति व्यक्ति आय 28.81 लाख रुपए और अमेरिका 75.64 रुपए के साथ सर्वोच्च स्थान पर है।

हम अर्थव्यवस्था को और गति देने की दृष्टि से उपभोग और निवेश मांग को बढ़ावा देना चाहिए। सरकार को सार्वजनिक अवसंरचना, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा में और अधिक निवेश करना चाहिए, जिससे रोजगार सृजित हो सके, उत्पादकता में सुधार हो सके और मानव पूंजी की वृद्धि हो सके। सरकार । सरकार को नए बाजारों तक पहुंच बनाने और अपनी 'निर्यात टोकरी' विविधता लाने के लिए! के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ, जापान और आसियान जैसे रणनीतिक भागीदारों के साथ व्यापार समझौते संपन्न करने चाहिए। बैंकों की गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों की समस्या का समाधान करके, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के पुनर्पूजीकरण, प्रशासन में सुधार और वित्तीय समावेशन एवं नवाचार को प्रोत्साहित कर वित्तीय क्षेत्र को सुदृढ़ करना चाहिए। बैंकों की गैर निष्पादित परिसंपत्तियों की समस्या का समाधान करके, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के पुनर्पूजीकरण, प्रशासन एवं विनियमन में सुधार और वित्तीय समावेशन एवं नवाचार को प्रोत्साहित करने के माध्यम से वित्तीय क्षेत्र को सुदृढ़ करना चाहिए

'मेक इन इंडिया' इलेक्ट्रिक कारों का भविष्य

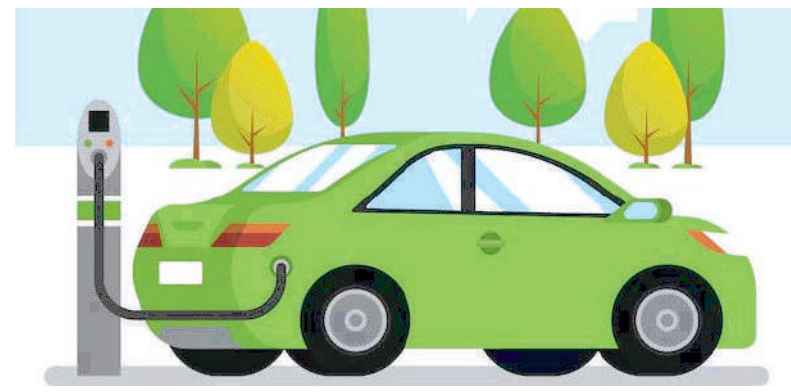

ऐसे में देश में इलेक्ट्रिक वाहनों का घरेलू उत्पादन बढ़ना हर दृष्टि से महत्वपूर्ण है। विदेशी कंपनियां भारत में इलेक्ट्रिक वाहन निर्माण में निवेश करने को लेकर बहुत उत्साहित नहीं हैं, इसका एक और कारण यह है कि टाटा और महिंद्रा जैसी घरेलू कंपनियां अपने विदेशी प्रतिस्पर्धियों की तुलना में बहुत कम लागत पर इलेक्ट्रिक वाहन बना रही हैं'..

इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रयोग से वायु प्रदूषण को बड़ी हद तक कम किया जा सकता है, क्योंकि इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग से ग्रीन हाऊस गैसों का उत्सर्जन लगभग न के बराबर होता है। कई बार यह भी कहा जाता है कि जिस बिजली का उपयोग इलेक्ट्रिक वाहनों की बैटरी को चार्ज करने के लिए किया जाता है, यदि वो कोयले या गैस से बनती है तो अप्रत्यक्ष रूप से इलेक्ट्रिक वाहन कुछ हद तक और भी ग्रीन हाऊस गैसों का उत्सर्जन करते हैं। यह भी सही है कि ईवी वाहनों के निर्माण के समय भी जरूर कुछ हद तक प्रदूषण फैलता है, लकिन यदि ईवी वाहनों के कुल जीवन को देखा जाए तो पेट्रोल, डीजल, गैस आदि से चलने वाले वाहनों के मुकाबले इलेक्ट्रिक वाहनों में कहीं कम ग्रीन हाऊस गैसों का उत्सर्जन होता है। इसीलिए घनी आबादी वाले शहरों में, जहां वाहनों से आने वाला धुआं बड़ी मात्रा में हवा को प्रदूषित करता है, इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग शहरों को अधिक स्वस्थ और रहने योग्य बनाने में सहायक हो सकता है। साथ ही इलेक्ट्रिक वाहनों के उत्पादन के साथ यदि नवीकरणीय स्त्रोतों से भी बिजली का उत्पादन हो, स्मार्ट ग्रिड का विकास हो और स्वच्छ बैटरी उत्पादन और उनकी रीसाईकलिंग की भी व्यवस्था भली भांति की जाए तो शहरों की हवा को ठीक करने में इलेक्ट्रिक वाहनों का बड़ा योगदान हो सकता है। इसलिए दिल्ली और अन्य महानगरों के वातावरण को बेहतर करने और उन्हें रहने योग्य बनाने में इलेक्ट्रिक वाहनों का बड़ा महत्व है। लेकिन इसके साथ ही साथ यह भी जरूरी है कि इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण में देश आत्मनिर्भर भी बने। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार भारत में इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बाजार 2030 तक 250 बिलियन डॉलर का हो सकता है। 2021 में बाजार का मूल्य 1.45 बिलियन डॉलर और 2022 में 3.21 बिलियन डॉलर था।

भारत में इलेक्ट्रिक वाहन बाजार तेजी से बढ़ रहा है। विभिन्न मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, पिछले साल ईवी की बिक्री दस लाख का आंकड़ा पार कर गई और 2030 तक यह संख्या 170 लाख यूनिट तक पहुंचने की उम्मीद है। बाजार में तेजी के रुझान के साथ, देश के अधिकांश कार निर्माताओं ने अपने कुछ सबसे ज्यादा बिकने वाले वर्तमान मॉडल को इलेक्ट्रिक वर्जन में बनाना भी शुरू कर दिया है। काफी समय से इस बात पर विवाद चल रहा था कि अमरीकी कंपनी टेस्ला भारत में इलेक्ट्रिक कारों का निर्माण करेगी या नहीं। टेस्ला उनकी कारों पर भारत में आयात शुल्क में कमी के लिए पैरवी कर रही थी। उनका तर्क था कि वे अपनी इलेक्ट्रिक कारों को लाकर भारतीय बाजारों को परखना चाहते हैं और इसलिए वे भारत में अपनी स्थिति को परखने के लिए आयात शुल्क में छूट की मांग कर रहे हैं। हालांकि, कंपनी के इस ढुलमुल रवैये से भारत में विनिर्माण सुविधाएं शुरू करने के उनके वास्तविक इरादे पर संदेह पैदा हो रहा था। लेकिन अब यह लगभग स्पष्ट हो गया है कि कंपनी भारत में अपनी टेस्ला कार का विनिर्माण शुरू करने में रुचि नहीं रखती है। हाल ही में भारत में ईवी नीति की घोषणा करते हुए सरकार ने भी यह संकेत दिया है कि टेस्ला कंपनी देश में अपनी कारों का विनिर्माण करने में रुचि नहीं रखती है। सरकार ने इस बीच भारत में इलेक्ट्रिक कारों के विनिर्माण को प्रोत्साहित करने वाली नीति पेश की है। हालांकि नई ईवी नीति 15 प्रतिशत की रियायती टैरिफ दर पर इलेक्ट्रिक कारों के आयात की भी अनुमति देती है, लेकिन आयातित कारों की कुल संख्या पर 8000 कारों की सीमा है, जिसके बाद आयात शुल्क 115 प्रतिशत तक जा सकता है। नीति में 35000 डॉलर से अधिक कीमत वाली किसी भी आयातित इलेक्ट्रिक कार पर शुल्क में कटौती की पेशकश की गई है, बशर्ते निर्माता तीन साल के भीतर स्थानीय संयंत्र स्थापित करने के लिए कम से कम 42500 करोड़ रुपए या लगभग 500 मिलियन डॉलर का निवेश करे। 15 प्रतिशत की यह रियायती ड्यूटी 35000 डॉलर से कम कीमत वाली कारों पर लागू नहीं होगी। कुल सीमा शुल्क राहत 6484 करोड़ रुपए तक सीमित होने का अनुमान है। नई ईवी नीति के तहत उद्यमियों को आवेदन जमा करने के लिए जल्द ही एक पोर्टल चालू किया जाएगा। यह पोर्टल कम से कम 120 दिनों तक खुला रहेगा। केवल वे कंपनियां ही आवेदन करने के लिए पात्र होंगी, जिन्होंने वाहन विनिर्माण से कम से कम 10000 करोड़ की बिक्री की है और अचल संपत्ति निवेश में न्यूनतम 3000 करोड़ रखती हैं। इस योजना के तहत भारतीय और विदेशी दोनों कंपनियां आवेदन करने के लिए पात्र होंगी। सरकार के अनुसार, नई नीति 'मेक इन इंडिया' पहल का समर्थन करेगी और ऑटोमोबाइल विनिर्माण में भारत की वैश्विक स्थिति को ऊपर उठाने में मदद करेगी।

विदेशी निवेशक आकर्षित नहीं हैं इस नीति से : इस नीति की खास बात यह है कि विदेशी वाहन निर्माता जैसे अमरीकी कंपनी टेस्ला, चीनी कंपनी बीवाईडी आदि सरकार की ईवी नीति के प्रति बहुत ठंडा रुख अपनाए हुए हैं। जहां तक टेस्ला का सवाल है, हालांकि उसने भारत में अपनी तैयार कार के लिए डीलरों का चयन शुरू किया है, लेकिन वो भारत में कार बनाने के लिए इच्छुक नहीं है। दूसरी तरफ चीन की कंपनी बीवाईडी इसलिए निवेश के प्रति ठंडा रुख रखे हुए है, क्योंकि भारत सरकार सुरक्षा कारणों से चीन जैसे देश की कंपनियों, खास तौर पर इलेक्ट्रॉनिक से जुड़ी कंपनियों को भारत में प्रवेश देने के लिए इच्छुक नहीं है। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि कुछ बड़ी वैश्विक कंपनियां भारत में इलेक्ट्रिक कार उत्पादन हेतु निवेश कर सकती हैं, लेकिन इन कंपनियों की इलेक्ट्रिक कारें अपने देशों में भी कोई विशेष बाजार नहीं बना पाएं। ऐसे में वो भारत जैसे देश में जहां टाटा और महिंद्रा जैसी बड़ी ऑटोमोबाइल कंपनियों, जो इलेक्ट्रिक वाहनों के क्षेत्र में भी काफी आगे बढ़ चुकी हैं, के सामने कैसे टिक पाएंगी, यह एक बड़ा सवाल उनके सामने है।

सेहत के साथ रोजगार सृजन और आर्थिक विकास : विभिन्न राष्ट्रीय अध्ययनों और विश्लेषणों से पता चलता है कि भारत में, पर्यावरण की रक्षा हेतु किए जा रहे प्रयास पर्यावरण ही नहीं, वित्तीय लाभ भी उत्पन्न कर सकते हैं, और रोजगार सृजन का बड़ा स्रोत हो सकते हैं। इस संदर्भ में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी द्वारा एक बड़ा योगदान संभव है। भारत का ईवी क्षेत्र 2030 तक 250 बिलियन डॉलर का उद्योग बन सकता है, जिससे वाहन निर्माण, बैटरी उत्पादन, आपूर्ति श्रृंखला और चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर में पांच करोड़ नौकरियां पैदा होंगी। ऐसे में देश में इलेक्ट्रिक वाहनों का घरेलू उत्पादन बढ़ना हर दृष्टि से महत्वपूर्ण है। विदेशी कंपनियां भारत में इलेक्ट्रिक वाहन निर्माण में निवेश करने को लेकर बहुत उत्साहित नहीं हैं, इसका एक और कारण यह है कि टाटा और महिंद्रा जैसी घरेलू कंपनियां अपने विदेशी प्रतिस्पर्धियों की तुलना में बहुत कम लागत पर इलेक्ट्रिक वाहन बना रही हैं। उदाहरण के लिए, हम देखते हैं कि भारतीय निर्माता 9 लाख रुपए प्रति यूनिट से 20 लाख रुपए प्रति यूनिट के बीच इलेक्ट्रिक कार बेचने में सक्षम हैं, जबकि टेस्ला जैसी कंपनियां अपनी कारों को 35 लाख रुपए से 80 लाख रुपए के बीच की कीमत पर बेच रही हैं। देश में लग्जरी कारों का बाजार बहुत छोटा है। इसलिए, लग्जरी कार वर्ग में बड़े पैमाने पर उत्पादन की ज्यादा गुंजाइश नहीं है। हालांकि, बड़े शहरों में प्रदूषण को कम करने में मदद के लिए इलेक्ट्रिक कारों का उत्पादन बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता है और उस संदर्भ में, 'मेक इन इंडिया' इलेक्ट्रिक वाहन घरेलू उत्पादन, जीडीपी और रोजगार के विस्तार में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं।

आज भारत में यदि किसी संस्था को सबसे बड़ा खतरा है तो वह है संयुक्त परिवार।

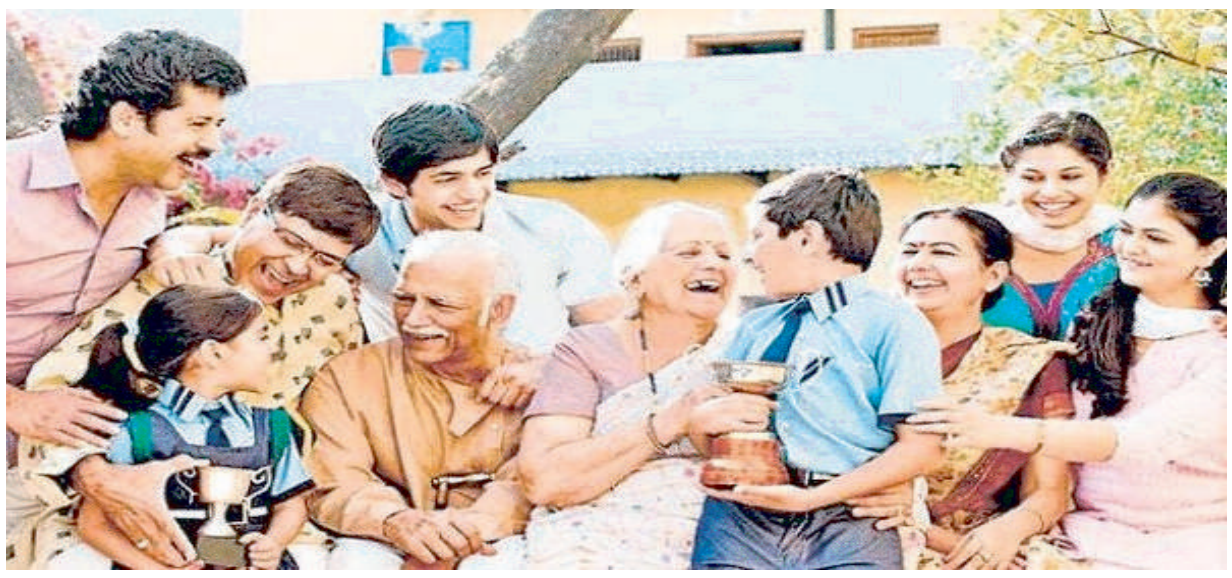

भारतीय संयुक्त परिवारों की पृष्ठभूमि उस मानवीय संवेदना से जुड़ी हुई है जिसमें पूरे विश्व को अपना परिवार माना जाता है। हजारों वर्षों से भारतीय परिवारों की पहचान धन, पद, संपत्ति से नहीं बल्कि उनमें निहित मूल्यों, मान्यताओं, नियमों और अवधारणाओं से होती रही है। राजतंत्र में भी परिवारों का महत्व वैसा ही रहा जैसा आज लोकतंत्र में व्यक्ति ही परिवार की इकाई है। इसलिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति के आपसी संबंध और व्यवहार बेहतर हों। यत्र विश्वं भवति एक आवश्यकताम् अर्थात विश्व एक परिवार के समान है। हमारी परंपरा विश्व से जुड़ने और मानवीय संस्कृतियों के सभी रूपों को अपनाने में उदार रही है। परिवार समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। विश्व के प्रत्येक सभ्य व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह इस इकाई का सम्मान करे और इसका हिस्सा बने तथा परिवार के साथ-साथ अपना महत्व भी बनाए रखे।

हमारी वैदिक सनातन परंपरा में महिलाओं को विशेष महत्व दिया गया है। परिवार की महिला को वह सम्मान दें जिसकी वह हकदार है। दुनिया में महिलाओं के प्रति पुरुषों के नजरिए में बदलाव आया है, लेकिन उसे वह सम्मान नहीं दिया गया जिसकी वह हकदार है। एक आदर्श परिवार के निर्माण से एक आदर्श समाज का निर्माण होता है, इस दृष्टि से भी संयुक्त परिवार महत्वपूर्ण है। सर्वेक्षण बताते हैं कि पारिवारिक समस्याओं में निरंतर वृद्धि हुई है। भारत में, जहां परिवार कभी भी सबसे मजबूत नहीं रहा है। जो कभी एक इकाई थी, उसकी ताकत कई समस्याओं और पारिवारिक मूल्यों के क्षरण के कारण लगातार कमजोर हो रही है। परिवारों में नई समस्याएं सामने आती हैं। यदि आज भारत में कोई एक संस्था है, तो वह संयुक्त परिवार है। संयुक्त परिवारों के लगातार टूटने से न केवल सामाजिक रिश्तों का महत्व प्रभावित हुआ है, बल्कि भारतीय समाज के मूल्य, मानदंड, आचार, व्यवहार और पहचान भी प्रभावित हुई है। समाज में बुजुर्गों के महत्व और सम्मान का कारण संयुक्त परिवार की संरचना, मूल्यों और आपसी विश्वास से जुड़ा था पश्चिम भारत में न केवल अपनी संस्कृति लेकर आया, बल्कि अपनी सामाजिक संरचना और मूल्यों को भी लेकर आया। परिणामस्वरूप भारत में संयुक्त परिवार पश्चिमी मॉडल के छोटे परिवारों का रूप लेने लगे, जहाँ केवल व्यक्तिगत उन्नति को महत्व दिया जाता था। भारत में छोटे परिवारों की स्थिति भी पक्षियों जैसी हो गई। जिस प्रकार पक्षी के बच्चे बड़े होकर अपने परिवार से अलग होकर अपना परिवार बना लेते हैं। ऐसा उन भारतीय परिवारों में भी होने लगा, जिन्होंने संयुक्त परिवार को छोड़कर अपना अलग परिवार बसाना शुरू कर दिया। संयुक्त परिवार की संरचना, कार्य, प्रकृति, संबंध, मूल्य और मजबूती से पूरी तरह अलग इन छोटे नवगठित परिवारों का समाज में योगदान भी लगभग समाप्त हो गया। इससे समाज की व्यापकता, मजबूती और परस्पर पूरकता भी लुप्त होने लगी। यदि व्यक्ति और समाज के बीच संवेदनहीनता और परस्पर विश्वास का अभाव दिखता है, तो इसका बड़ा कारण उन मानवीय और सामाजिक मूल्यों का कमजोर होना है, जो व्यक्ति और आदर्श समाज का निर्माण करते हैं। 'राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण' के अनुसार परिवारों में बहुत कुछ बदल गया है। इस हिसाब से परिवारों में महिलाओं की स्थिति में बदलाव आया है। 2019-2021 के सर्वेक्षण के अनुसार, 18 प्रतिशत घरों में महिलाएं घर की मुखिया थीं। 2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, 11 प्रतिशत घर ऐसे थे जिनमें महिलाएं मुखिया थीं। यानी सात प्रतिशत का अंतर है। उस समय महिला प्रधान घरों की संख्या सबसे अधिक 43.7 प्रतिशत लक्षद्वीप में और 23 प्रतिशत केरल में थी। भारतीय परिवारों में महिलाएं घर की मुखिया होती हैं।

कई देशों में विस्तारित परिवार का प्रचलन है। शोध के अनुसार 38 प्रतिशत परिवार इसी व्यवस्था में रह रहे हैं। ऐसे परिवारों में दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची और बच्चे एक साथ रहते हैं। फिर कुछ छोटे परिवार होते हैं, जहां माता-पिता और नाबालिग बच्चे एक साथ रहते हैं। भारत में 50 प्रतिशत परिवार अब एकल परिवारों में बदल रहे हैं। वहीं भारत में केवल 17 प्रतिशत परिवार संयुक्त परिवार के रूप में रहते हैं, जहां माता-पिता, दादा-दादी और पोते-पोतियां एक साथ रहते हैं। संयुक्त परिवारों का युग धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है। इसका कारण उन देशों की सामाजिक संरचना, उनकी जीवनशैली, परंपराएं और वित्तीय स्थिति है। पश्चिमी देशों का समाज विकासशील देशों के समाज से अधिक समृद्ध है। पारस्परिक वैचारिक पूरकता बहुत कम है। पश्चिम के समृद्ध देश में बहुत कम संयुक्त परिवार बचे हैं। आंकड़े बताते हैं कि दुनिया के अधिकांश देशों में संयुक्त परिवार कम हो रहे हैं। न केवल ईसाई बहुल देशों में, बल्कि भारत जैसे मुस्लिम देशों में भी संयुक्त परिवारों की संख्या लगातार कम हो रही है। पचास साल पहले सभी मुस्लिम देशों में संयुक्त परिवारों की संख्या आज की तुलना में दस गुना अधिक थी। वहां भी पश्चिमी देशों का प्रभाव रहा है। परिवारों को बचाना एक बड़ी चुनौती है। परिवार से जुड़े मुद्दों, समस्याओं और मतभेदों को समझना समय की मांग है। परिवार के महत्व को ठीक से समझने के लिए परिवार की आर्थिक, सामाजिक और जनसांख्यिकीय प्रक्रियाओं को समझना जरूरी है। परिवार की खुशियां उसकी तरक्की की कहानी बयां करती हैं, लेकिन परिवार के बुजुर्गों की उपेक्षा ने परिवारों की स्थिति पर सवाल खड़े कर दिए हैं। ऐसे में पीढ़ियों के बीच के अंतर को समझना और एक-दूसरे के प्रति सम्मान और प्रेम की भावना पैदा करना किसी चुनौती से कम नहीं है। भारत जैसे देश में जहां पूरे विश्व को एक परिवार मानने की संस्कृति है, वहां परिवारों के महत्व को बनाए रखने को लेकर जागरूकता बढ़ी है। एक परिवार में वे लोग होते हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी मूल्यों को आगे बढ़ाते हैं। सर्वेक्षण बताते हैं कि भारत में संयुक्त परिवारों को टूटने से बचाने के लिए कोई प्रयास नहीं किए जा रहे हैं। शहरों और कस्बों की तरह गांवों में भी संयुक्त परिवारों में काफी कमी आई है। इसके पीछे की वजह लोगों का खेती से अलग होना है संयुक्त परिवार मॉडल के कमजोर होने से गांवों में कई समस्याएं पैदा हो गई हैं। इसलिए सामाजिक सुधार के लिए काम करने वाली संस्थाओं को फिर से अधिक सक्रिय होने की जरूरत है। इससे न केवल कृषि बचेगी, बल्कि संयुक्त परिवार और गांव भी बचेंगे।

-विजय गर्ग

उत्सव की तरह जीवन

कई लोग अपनी जिंदगी को किसी बोझ की तरह ढोते नजर आते हैं। न मन में कोई उत्साह, न कोई उमंग। ऐसे लोग दोस्तों, रिश्तेदारों के साथ गपशप और हंसी मजाक भी नहीं करते। जन्मदिन हो या शादी की सालगिरह, कोई जश्न नहीं । पदोन्नति हो या पगार में इजाफा, चेहरे पर मुस्कुराहट तक नहीं। ऐसे लोग हमेशा हैरान परेशान नजर आते हैं। वहीं कुछ लोग बीमार पड़े-पड़े भी हंसते-मुस्कुराते रहते हैं। मुसीबत में भी पूरी ऊर्जा से सक्रिय रहते हैं। दफ्तर में सहकर्मियों के साथ इनकी गपशप चलती रहती है। ऐसे जिंदादिल लोग आए दिन जरा-जरा-सी खुशी पर लड्डू-पेड़े बांटते, केक काटते या लोगों को पार्टी देते नजर आते हैं। असल में जीवन को ऐसे ही लोग जीते हैं। ये जीवन को एक उत्सव की तरह जीते हैं ।

हमारा जीवन विविधताओं से भरा है। इसमें उतार-चढ़ाव, हर्ष विषाद, सफलता-असफलता, मैत्री - दुश्मनी लगी ही रहेगी। इन सारी चीजों के साथ ही हमें जीवन को जीना है। हमें सपनों को साकार करने के वास्ते लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जीना होता है। इस प्रक्रिया को हम जितनी सुगमता, सहजता और सरलता से पूरा करने की तैयारी रखेंगे, उतनी ही सुकूनदेह जिंदगी जी पाएंगे। जो लोग हमेशा चिंता में डूबे रहते हैं, वे ऐसा नहीं कर पाते। ऐसे चिंताजीवी लोग न खुद को कुछ दे पाते हैं, न अपने परिवार, समाज या देश को । हर समय अवसाद, उदासी और चिढ़ में जीने वाले कभी आगे नहीं बढ़ पाते। इसलिए जीवन को एक खेल या उत्सव की तरह जीना चाहिए। इसमें हार-जीत का महत्त्व नहीं, कोशिश का महत्त्व है। मस्तिष्क को व्यर्थ की चिंताओं से मुक्त रखने के लिए एकाग्रता जरूरी है। इसके लिए सुबह-शाम प्राणायाम, ध्यान और योग जरूरी है।

उत्साह और खुशी हमारे जीवन की गहराइयों में छिपे होते हैं। इन्हें बाहर निकालना चाहिए। नील पसरीचा ने अपनी किताब, 'द हैप्पीनेस इक्वेशन' में कहा है कि मन को हल्का रखने और आराम महसूस करने के लिए रात को फोन बंद कर देना चाहिए, अच्छे पलों को दर्ज करना चाहिए, प्रातःकाल दस-पंद्रह मिनट तक एक रजिस्टर में बीते दिन की अच्छी बातें लिखें। हर हफ्ते कम से कम दो अच्छे काम करें, जैसे किसी की मदद, किसी की गौशाला या अनाथालय में दान आदि ।

एक शोध के मुताबिक, तारीफ में कही गई बातें हमें उतना ही प्रोत्साहित करती हैं जितना हाथ में पैसों का आना । इसलिए अपने गहरे दोस्त या परिवार के किसी सदस्य की तारीफ करनी चाहिए। इस तरह खुशी मिलेगी। रोज सुबह कुछ अच्छा पढ़ने और संगीत सुनने की जरूरत है और पार्क में टहलना ।

कठिनाइयों से घबराना नहीं, बल्कि उन्हें गहराई से समझना चाहिए। गली के आवारा कुत्ते जब हम पर भौंकते हैं और हम उन्हें देखकर भागने लगते हैं तो वे और भी तेज भौंकते हुए हमारा पीछा करने लगते हैं। वहीं हम जब एक जगह खड़े होकर उन्हें घूरते हैं। तो वे शांत होकर पीछा छोड़ देते हैं । यही हाल समस्याओं और कठिनाइयों का है। हम उनसे पलायन करके नहीं बच सकते। उन्हें पहचानने और उनका समाधान धैर्यपूर्वक खोजने की जरूरत है।

जीवन में सफल होने के लिए उन्हीं प्रयासों, ऊर्जा और साधनों पर केंद्रित रहना चाहिए जो किसी न किसी तरह हमारे काम आ सकते हैं। हुनर, धैर्य और मेहनत का साथ हो तो इंसान को आगे बढ़ने का कोई

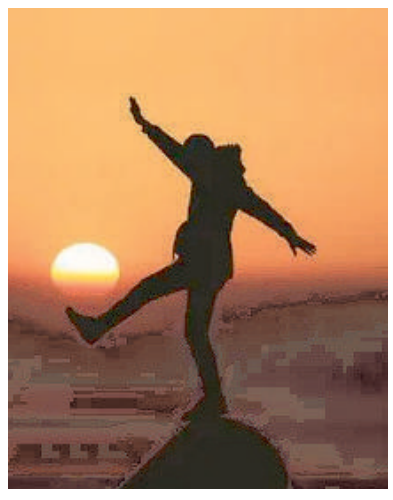

न कोई अवसर मिल ही जाता है। कठिन समय में जो लोग मदद करते हैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना चाहिए, जिससे हमें भी अच्छा लगेगा। मशहूर लेखिका रोंडा बर्न अपनी किताब 'द 'मैजिक' में लिखती हैं कि कृतज्ञता का जादू हमारे समूचे जीवन को बदल देगा। हजारों लोगों ने सबसे बुरी स्थितियों में रहने के बावजूद कृतज्ञता के अभ्यास से अपने जीवन को पूरी तरह बदल लिया।

जीवन को उत्सव की तरह जीना है तो लोगों के प्रति मैत्री भाव रखना चाहिए। यह बात दिमाग से निकाल देनी चाहिए कि दुनिया बहुत खराब है। यह समझने की जरूरत है कि अगर दुनिया खराब है तो हम भी इसी का एक हिस्सा हैं। हम लोगों से मुस्कुरा कर मिलेंगे तो लोग भी हमसे मुस्कुरा कर मिलेंगे। हम किसी के साथ गेम खेलेंगे तो वे हमें क्यों छोड़ेंगे? विनम्रता, मिलनसारिता, जिंदादिली और हंसमुख स्वभाव बहुत ऊर्जा देते हैं। इससे दूसरे का नहीं, हमारा ही भला होगा। ऊर्जा बनी रहेगी, मिजाज अच्छा रहेगा और काम में मन लगेगा। लोगों से हमेशा किसी स्वार्थ के कारण ही बात नहीं करनी चाहिए, व्यवहार के लिए भी प्रेम के धागे बुनना चाहिए, ताकि बात करके हम अपना मन हल्का रख सकें और किसी के साथ सुझावों का आदान-प्रदान कर सकें।

जीवन की गति को नियंत्रण में रखना बेहतर होता है। ज्यादातर दुर्घटनाएं अनियंत्रित गति की वजह से होती हैं। कई बार हम जिंदगी को लेकर एक लीक अपना लेते हैं। वक्त चाहे जितना बदले, पर हमारे विचार नहीं बदलते । पूर्वाग्रहों से हमारे मन में जड़ता आ जाती है। समय- समय पर जीवन से फालतू चीजों को हटाना चाहिए। इस प्रक्रिया के दौरान खुद से कुछ सवाल पूछना चाहिए। मसलन, कि क्या मैं वही कर रहा हूं जो मैं अपने जीवन से चाहता हूं? क्या मैं अपनी जिंदगी से संतुष्ट हूं ? इन सवालों से जो जवाब मिलें, उनसे पता चल जाएगा कि हम आधी से ज्यादा बेकार चीजों के पीछे भागते रहे हैं और इसीलिए हमारी जिंदगी इतनी उलझी हुई और दुश्वार है। 'द लाइफ आडिट' की लेखिका कैरोलीन राइटन कहती हैं, 'इससे आपको अपनी जीवन यात्रा को समझने और अब तक की गई तरक्की या तरक्की में रुकावट बन रहे कारणों का पता चलता है। आपको यह भी पता चलता है कि आप कहां अटके हु हैं। आपको अपनी इच्छाओं का भी पता चलता है।'

-विजय गर्ग

शुभ संकेत नहीं रिश्तों में संशय, अविश्वास, ईर्ष्या !

किसी भी समाज में रिश्तों की अहमियत बहुत ही महत्वपूर्ण होती है, क्यों कि ये रिश्ते ही होते हैं जो हमें भावनात्मक सहारा, विश्वास और सुरक्षा प्रदान करते हैं।कहना ग़लत नहीं होगा कि रिश्ते जीवन में खुशियों और दुखों को साझा करने में हमारी मदद करते हैं।सच तो यह है कि रिश्ते न केवल हमारे व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करते हैं, बल्कि ये हमारे समाज में एकता और सद्भाव भी बनाए रखते हैं। आज यह देखा जा रहा है कि रिश्तों का सरेआम कत्ल हो रहा है।इस संदर्भ में यहां पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में मेघालय में इंदौर के युवक राजा रघुवंशी की हत्या के मामले में पुलिस ने पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। इस मामले में राजा की पत्नी सोनम रघुवंशी को भी गिरफ्तार किया गया है। सोनम को यूपी पुलिस ने गाजीपुर के एक ढाबे से गिरफ्तार किया। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इंदौर से विवाह के तुरंत बाद राजा रघुवंशी और उनकी पत्नी मेघालय हनीमून पर गए थे और राजा रघुवंशी और उनकी पत्नी सोनम अचानक लापता हो गए थे।इस घटना ने पूरे देश का ध्यान अपनी ओर खींचा। 23 मई को लापता होने के बाद राजा का शव हालांकि दो जून को बरामद हो गया था, लेकिन सोनम के लापता होने की घटना निरंतर देशवासियों को परेशान करती रही। यहां पाठकों को बताता चलूं कि 2 जून को पुलिस को वेईसावडॉन्ग वॉटरफॉल के पास एक गहरी खाई में एक शव मिला।इस शव की हालत बुरी तरह खराब थी और उसकी पहचान करना मुश्किल था, लेकिन राजा के हाथ पर गुदे 'राजा' टैटू ने उसकी पहचान पक्की कर दी। पोस्टमार्टम में हत्या की पुष्टि हो गई। जानकारी के अनुसार राजा की मौत सिर में गहरी चोट और धक्का देने से हुई थी। कहना ग़लत नहीं होगा कि राजा रघुवंशी और सोनम रघुवंशी की कहानी ने पूरे देश को हिला कर रख दिया। शादी-ब्याह खुशियों का प्रतीक होते हैं और भारतीय समाज में शादी एक बहुत ही पवित्र रिश्ता माना गया है। बहुत ही दुखद है कि शादी का पवित्र रिश्ता एक भयानक त्रासदी और रहस्यमयी हत्याकांड में बदल गया, तथा इसने हमारे पूरे समाज को झकझोर दिया। घटनाक्रम को लेकर सोशल मीडिया पर अतिरंजित टिप्पणियां तक की जाती रहीं। इंदौर के राजा दंपति का हनीमून मनाने मेघालय जाना, फिर अचानक दोनों का गायब होना, इसके बाद राजा का शव बरामद होना तथा सोनम के लापता होने का घटनाक्रम किसी फिल्मी कहानी की तरह आगे बढ़ता रहा। हाल फिलहाल, इस मामले ने न केवल मेघालय पुलिस बल्कि मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की पुलिस जांच कर रही है। इधर, सोनम के परिजन सोनम को बेगुनाह बता रहे हैं वहीं दूसरी ओर राजा का परिवार दोषियों को सजा देने की मांग कर रहा है। बहरहाल, दिलचस्प बात यह है कि(जैसा कि खबरों में सामने आया है) हनीमून की पूरी प्लानिंग सोनम ने खुद की थी। यहां तक कि टिकट से लेकर होटल बुकिंग तक सब कुछ सोनम के नाम से हुआ।पुलिस के मुताबिक यहीं से साजिश की नींव रखी गई थी।चर्चा यह भी है कि इंदौर के ही रहने वाले राज कुशवाहा से सोनम का अफेयर था। इन दोनों का रिश्ता शादी से पहले से था। जानकारी के अनुसार सोनम को शादी परिवार के दबाव में करनी पड़ी, लेकिन वह राज के संपर्क में बनी रही। फिर दोनों ने मिलकर राजा की हत्या की साजिश रची। हाल फिलहाल, राज कुशवाहा को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि पूरा मामला तो पुलिस की गहन जांच के बाद ही सामने आ पाएगा कि आखिर सोनम को ऐसे कदम क्यों उठाने पड़े ? वास्तव में आज विवाह संस्था पर लगातार खतरे मंडरा रहे हैं। पाठक जानते हैं कि भारतीय समाज में विवाह एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है, जो जीवन के कई पहलुओं जैसे कि परिवार, समाज और संस्कृति को प्रभावित करती है। वास्तव में विवाह परिवार की असली नींव है।विवाह समाज में स्थिरता और व्यवस्था बनाए रखने में तथा हमारी सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं को बनाए रखने में मदद करता है। वास्तव में विवाह केवल एक औपचारिक समारोह का रूप मात्र नहीं है, बल्कि इसे एक पवित्र बंधन, संस्कार माना जाता है।सच तो यह है कि विवाह स्त्री और पुरुष को पारिवारिक जीवन में प्रवेश कराने वाली एक संस्था है। सोनम ने अपने पुराने प्रेम संबंधों के लिये अपने पति राजा को अपनी राह से हटाया। कहना ग़लत नहीं होगा कि पति-पत्नी के जिन रिश्तों को जन्म-जन्मांतर का साथ बताया जाता था, उन्हें हाथ की मेहंदी सूखने से पहले कत्ल किया जाना, हमारे समाज में बढ़ती संवेदनहीनता व अविश्वास को ही उजागर करता है। वास्तव में आज हमारे समाज से नैतिक मूल्यों, आदर्शों और प्रतिमानों का लगातार पतन होता चला जा रहा है और हम पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है। हम हमारी सनातन संस्कृति को लगातार भूलते चले जा रहे हैं और पाश्चात्य संस्कृति में रम-बस से गये हैं। आज रिश्तों का कत्ल हो रहा है और सोनम वाला मामला पहला मामला नहीं है। पाठकों को बताता चलूं कि इस साल मार्च में मेरठ में हुए सौरभ हत्याकांड ने भी पूरे देश को हिलाकर रख दिया था। सौरभ हत्याकांड के आरोपी साहिल ने अपनी प्रेमिका मुस्कान के साथ मिलकर बीते 3 मार्च को सौरभ की हत्या कर दी थी। इतना ही नहीं,

कुछ समय पहले हरियाणा के झज्जर में एक महिला होटल संचालक की उसी के घर में चाकू से गला काटकर हत्या कर दी गई थी। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आए दिन मीडिया की सुर्खियों में हमें रिश्तों के कत्ल के मामले पढ़ने सुनने को मिलते रहते हैं। आज हमारे समाज में अविश्वास की खाई गहराती चली जा रही है। रिश्तों को संशय की दृष्टि से देखा जाने लगा है। वास्तव में, सच तो यह है कि ऐसी घटनाएं हमारे समाज में आपसी विश्वास, संवाद और समझ की ज़रूरत को उजागर करती हैं। परिवार में छोटी-छोटी बातों को समय रहते सुलझाना बेहद जरूरी है, ताकि ऐसी दर्दनाक घटनाएं दोबारा न हों। रिश्तों में संशय, अविश्वास, ईर्ष्या किसी भी स्वस्थ समाज के लिये शुभ व अच्छा संकेत कदापि नहीं कहा जा सकता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

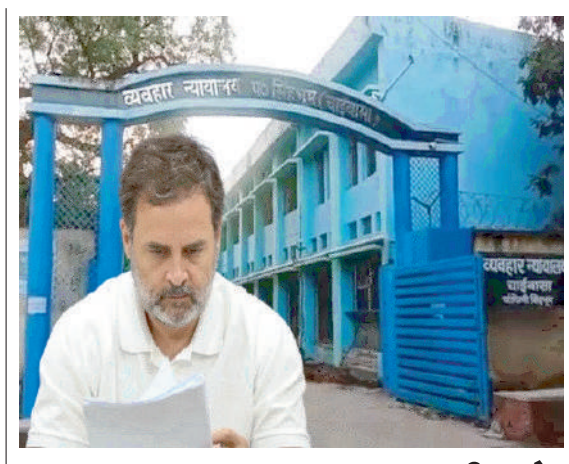

6 अगस्त तक राहुल गांधी को चाईबासा कोर्ट में पेश होने झारखंड हाईकोर्ट का निर्देश

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

चाईबासा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर टिप्पणी मामले में राहुल गांधी को झारखंड हाई कोर्ट ने 6 अगस्त को चाईबासा कोर्ट में पेश होने का आदेश दिया है। शाह पर 2018 में की गई अपमानजनक टिप्पणी मामले में राहुल गांधी ने चाईबासा की विशेष एम पी एम एल ए कोर्ट द्वारा जारी गैर-जमानती वारंट को चुनौती देते हुए झारखंड हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। अपनी याचिका में राहुल गांधी ने कोर्ट से उनके खिलाफ जारी वारंट को रद्द करने का अनुरोध किया था। वादी के वकील विनोद साहू के मुताबिक, कोर्ट ने राहुल गांधी के वकील से पूछा कि क्या उनका अहंकार उन्हें कोर्ट में पेश होने से रोक रहा है। वकील ने जवाब दिया कि राहुल गांधी अपनी पहले की व्यस्तताओं के कारण कोई सही तारीख नहीं ढूंढ पा रहे थे। इसके बाद कोर्ट ने एक सही तारीख मांगी और राहुल गांधी के कार्यालय से सलाह लेने के बाद वकील ने 6 अगस्त की तारीख का प्रस्ताव रखा, जिसे कोर्ट ने मान लिया। अधिवक्ता विनोद साहू ने बताया कि कोर्ट ने चाईबासा कोर्ट द्वारा जारी गैर-जमानती वारंट को 6 अगस्त तक स्थगित कर दिया है और यह सुनिश्चित करने का वचन लिया है कि राहुल गांधी उस तारीख को व्यक्तिगत रूप से कोर्ट में पेश होंगे। उन्होंने आगे कहा कि इस बीच राहुल गांधी के खिलाफ कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं की। 22 मई 2025 को चाईबासा कोर्ट ने राहुल गांधी के खिलाफ एक गैर-जमानती वारंट जारी किया था, जिसमें उन्हें 26 जून को व्यक्तिगत रूप से पेश होने का निर्देश दिया गया था। इससे पहले, उनके वकील ने सी आर पी सी की धारा धारा 205 के तहत व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट की मांग करते हुए एक आवेदन दायर किया था, लेकिन अदालत ने उस याचिका को खारिज कर दिया था और उनकी उपस्थिति पर जोर दिया था। जब उनकी याचिका खारिज हो गई, तो गांधी ने निचली अदालत के आदेश के खिलाफ हाई कोर्ट का रुख किया।

रिश्तों के लाश पर खड़ा आधुनिक प्रेम

इंदौर के राजा और मेघालय की सोनम के हनीमून पर हुई हत्या की घटना न केवल व्यक्तिगत त्रासदी है, बल्कि सामाजिक, नैतिक और मानसिक स्तर पर गहरी चिंता पैदा करती है। यह अपराध आधुनिक प्रेम और विवाह संबंधों में फैलते अविश्वास और स्वार्थ की भयावह तस्वीर पेश करता है। साथ ही, मेघालय जैसे पर्यटन स्थलों की छवि भी प्रभावित होती है। ऐसी घटनाएँ भावनात्मक शिक्षा, रिश्तों में पारदर्शिता और समाज के नैतिक मूल्यों की पुनर्समीक्षा की मांग करती हैं।

डॉ सत्यवान सौरभ

भारत के सामाजिक परिदृश्य में प्रेम, विवाह और रिश्तों को पवित्र बंधन माना जाता रहा है। लेकिन जब हनीमून जैसी कोमल, सुंदर और विश्वास से भरी यात्रा हत्या का मंच बन जाए, तो यह सिर्फ एक अपराध नहीं होता, यह पूरे समाज की अंतरात्मा पर चोट करता है।

इंदौर के राजा और मेघालय की सोनम का हनीमून मर्डर केस केवल एक युवक की जान नहीं ले गया, उसने नॉर्थ ईस्ट की छवि को भी कलंकित किया, टूरिज्म सेक्टर पर प्रश्नचिन्ह खड़े कर दिए और सबसे बड़ी बात — विश्वास की नींव पर टिके रिश्तों को ध्वस्त कर दिया।

इंदौर निवासी युवक राजा की शादी हाल ही में सोनम नामक युवती से हुई। नवविवाहित जोड़ा हनीमून मनाने मेघालय पहुंचा। वहाँ की खूबसूरत वादियों, शांत झीलों और पहाड़ी रास्तों के बीच ऐसा कुछ हुआ जिसकी कल्पना कोई नहीं कर सकता था।

हनीमून के बहाने सोनम ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर अपने पति की हत्या की योजना बनाई और उसे अंजाम भी दे डाला।

शुरुआत में राजा का गायब होना एक दुर्घटना माना गया। लेकिन जब पुलिस ने जांच आगे बढ़ाई, मोबाइल लोकेशन, चैट्स, बैंक ट्रांजैक्शन और सीसीटीवी फुटेज सामने आए, तब जाकर पूरी साजिश बेनकाब हुई।

सवाल यह है कि एक नवविवाहिता ऐसा क्यों करती है ? जवाब आसान नहीं है, पर चिंतन जरूरी है। यह मामला केवल व्यक्तिगत धोखा नहीं, समाज की उस बनती मानसिकता का भी परिणाम है, जिसमें रिश्तों में धैर्य, संवाद और समर्पण की जगह जल्दबाजी, लालच और अवसरवाद ने ले ली है।

सोनम पहले से एक अन्य युवक से प्रेम करती थी, और राजा से विवाह सिर्फ परिवार या आर्थिक मजबूरियों के चलते हुआ। लेकिन विवाह के बाद भी उसने उस प्रेमी को छोड़ा नहीं, बल्कि पति को रास्ते से हटाने की योजना बना डाली।

आज के दौर में रिश्तों की शुरुआत इंस्टाग्राम और स्नैपचैट से होती है, और अंत क्राइम पेट्रोल या पुलिस स्टेशन पर। भावनात्मक गहराई, एक-दूसरे को समझने का समय और परख की प्रक्रिया लगभग न के बराबर रह गई है।

विवाह को लेकर जिस जल्दबाजी और सामाजिक दबाव की संस्कृति बन गई है, उसमें युवक-युवती को खुद की इच्छाओं और संबंधों को

समझने का समय ही नहीं मिलता। भावनात्मक अपरिपक्वता, आत्मकेंद्रित निर्णय और रिश्तों के प्रति गैर-जिम्मेदारी, इन सबका सम्मिलन इस हत्याकांड जैसी घटनाओं को जन्म देता है।

यह घटना मेघालय के खूबसूरत पर्यटन स्थलों जैसे शिलाँग, चेरापूंजी, डावकी, उमगोट नदी आदि की छवि पर भी असर डाल गई। सोशल मीडिया पर कुछ यूजर्स ने इसे "मेघालय हनीमून मर्डर केस" कहना शुरू कर दिया, जिससे नॉर्थ ईस्ट राज्यों के प्रति अनावश्यक संदेह और डर का वातावरण बन रहा है।

लेकिन प्रश्न यह है: क्या एक महिला की निजी आपराधिक साजिश पूरे क्षेत्र को बदनाम कर सकती है ? उत्तर है — नहीं। यह वही मानसिकता है जो किसी मुस्लिम अपराधी को देख पूरे धर्म पर टिप्पणी कर देती है, या किसी एक दलित व्यक्ति के कारण पूरी जाति को दोषी ठहराती है। यह सोच भी उतनी ही खतरनाक है जितनी खुद वह घटना।

शादी अब समझौता नहीं, सौदा बन रही है।

प्रेम अब समर्पण नहीं, स्वार्थ बन गया है।

और भरोसा अब भावना नहीं, बिजनेस जैसा व्यवहार हो गया है।

जिस तरह से सोनम ने योजनाबद्ध तरीके से पति की हत्या की, वह दिखाता है कि क्रूरता अब हथियार से नहीं, रिश्तों के माध्यम से भी हो रही है।

मीडिया ने इस घटना को सनसनीखेज ढंग से दिखाया।

शीर्षक आए —

हनीमून बना हत्याकांड का अड्डा

बेवफा बीवी की खूनी प्लानिंग

राजा गया, सोनम हँसी

लेकिन इन सुर्खियों के पीछे की वास्तविक पीड़ा, राजा के माता-पिता का दुःख, और समाज में बनती विडंबनाओं की चर्चा लगभग नदारद रही।

सोशल मीडिया पर भी मामला जल्दी ही मेमे और चुटकुलों का विषय बन गया —

"पूरा नॉर्थ ईस्ट सोनम की बेवफाई से बदनाम हो गया।"

"हनीमून पर जाने से पहले पुलिस वेरिफिकेशन जरूरी कर लो।"

यह हास्य के नाम पर एक मानवीय त्रासदी का उपहास है।

कुछ लोग कह सकते हैं कि यह एक अलग-थलग मामला है। लेकिन सच यह है कि ऐसे रिश्ते-जनित अपराध बढ़ रहे हैं।

कहीं पति पत्नी को दहेज के लिए मार रहा है।

कहीं पत्नी प्रेमी के साथ मिलकर पति की हत्या कर रही है।

कहीं दोनों मिलकर बच्चों को मार डालते हैं।

यह सब संकेत हैं — कि हमारा समाज कहीं न कहीं भावनात्मक पतन, सामाजिक अस्थिरता और नैतिक विघटन की ओर बढ़ रहा है।

ऐसे में अब सवाल समाधान का है।

स्कूलों और कॉलेजों में सिर्फ करियर या डिग्री की बात न हो, बल्कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता (emotional intelligence), रिश्तों की समझ, संवाद की कला और वैवाहिक जीवन की जिम्मेदारियों की चर्चा हो।

जैसे स्वास्थ्य चेकअप होता है, वैसे ही शादी से पहले मनोवैज्ञानिक काउंसलिंग अनिवार्य हो।

सोशल मीडिया को ऐसी घटनाओं को सनसनी नहीं, संवेदना के साथ पेश करने की जिम्मेदारी निभानी होगी।

परिवारों को संवादशील बनना होगा, ताकि युवा खुलकर अपनी उलझनों को साझा कर सकें।

जब एक युवती अपने पति की हत्या करती है, तो हम उसे ₹डायनर₹, ₹खूनीर₹, ₹बेवफार₹ कह देते हैं — और सही भी है, अगर वह दोषी है। लेकिन क्या हमने कभी उन हज़ारों बेटियों की सुध ली जो दहेज, बलात्कार, या मारपीट में मर जाती हैं ?

क्या हम अपराध को सिर्फ लिंग के आधार पर देखेंगे या सिद्धांतों और संवेदनाओं के आधार पर ?

राजा की हत्या कोई फिल्मी सस्पेंस नहीं, यह हकीकत है।

एक मां का बेटा गया, एक बहन का भाई और एक परिवार की खुशियाँ छिन गईं।

वहीं दूसरी ओर — एक राज्य बदनाम हो गया, और पूरे पर्यटन क्षेत्र पर प्रश्नचिन्ह लग गया।

हम इस घटना को केवल एक अपराध के रूप में न देखें, बल्कि एक सामाजिक चेतावनी के रूप में लें। यह हमें बताती है कि अब वक्त आ गया है — जब हमें केवल रिश्ते जोड़ने की नहीं, उन्हें निभाने की शिक्षा भी देनी होगी।

माता-पिता नहीं, अभिभावक: ट्रांस अधिकारों की नई पहचान

केरल हाई कोर्ट का हालिया फैसला, जिसमें ट्रांसजेंडर दंपती ज़िया और ज़हद को उनकी बेटी के जन्म प्रमाण पत्र में 'माता' और 'पिता' के बजाय 'अभिभावक' के रूप में दर्ज करने की अनुमति दी गई, न केवल एक कानूनी मील का पत्थर है, बल्कि सामाजिक समावेशिता और लैंगिक समानता की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम भी है। यह फैसला भारत में ट्रांसजेंडर समुदाय के अधिकारों को मान्यता देने और उनके परिवार को कानूनी वैधता प्रदान करने की दिशा में एक क्रांतिकारी बदलाव का प्रतीक है। इसने न केवल ज़िया और ज़हद के परिवार को एक नई पहचान दी, बल्कि देश भर में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए सामाजिक और कानूनी स्वीकृति की राह को और प्रशस्त किया।

ज़िया और ज़हद, जो केरल के कोझिकोड के रहने वाले हैं, ने 2023 में उस समय सुर्खियां बटोरीं जब ज़हद, एक ट्रांस पुरुष, ने एक बच्ची को जन्म दिया। यह भारत में पहली बार था जब एक ट्रांसजेंडर दंपती ने जैविक रूप से बच्चे को जन्म दिया। इस जोड़े ने अपनी बेटी के जन्म प्रमाण पत्र में अपनी पहचान को 'माता' और 'पिता' के बजाय 'अभिभावक' के रूप में दर्ज करने की मांग की, ताकि उनकी लैंगिक पहचान और सामाजिक जीवन के साथ यह दस्तावेज़ सुसंगत रहे। कोझिकोड नगर पालिका ने उनके इस अनुरोध को खारिज कर दिया, जिसके बाद उन्होंने केरल हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। जस्टिस ज़ियाद रहमान की अगुवाई वाली बेंच ने उनके पक्ष में फैसला सुनाते हुए निगम को निर्देश दिया कि वह दो महीने के भीतर संशोधित जन्म प्रमाण पत्र जारी करे, जिसमें माता-पिता के कॉलम को हटाकर याचिकाकर्ताओं को बिना लिंग उल्लेख के 'अभिभावक' के रूप में दर्ज किया जाए। यह फैसला कई मायनों में ऐतिहासिक है।

सबसे पहले, इस फैसले ने ट्रांसजेंडर दंपती को एक परिवार के रूप में कानूनी मान्यता दी। परंपरागत रूप से, भारतीय समाज और कानून ने परिवार की परिभाषा को पुरुष और महिला की द्वैधता (बाइनरी) के आधार पर देखा है। लेकिन यह फैसला इस रूढ़िगत धारणा को चुनौती देता है और परिवार की अवधारणा को अधिक समावेशी बनाता है। यह न केवल ज़िया और ज़हद के लिए, बल्कि समस्त ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए एक बड़ी जीत है, जो अब अपने परिवार को कानूनी रूप से स्थापित करने का हक हासिल कर सकते हैं। यह फैसला समाज को यह संदेश देता है कि परिवार की संरचना केवल लिंग पर आधारित नहीं होनी चाहिए, बल्कि प्रेम, देखभाल और जिम्मेदारी पर आधारित होनी चाहिए।

दूसरा, यह फैसला ट्रांसजेंडर समुदाय की उस मांग को और मजबूती देता है, जिसमें वे बच्चों को गोद लेने और पालने के अधिकार की वकालत करते हैं। हालांकि, भारत में गोद लेने के कानून अभी भी ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए जटिल बने हुए हैं, लेकिन केरल हाई कोर्ट का यह फैसला एक उम्मीद की किरण है। यह न केवल जैविक माता-पिता के रूप में उनकी पहचान को मान्यता देता है, बल्कि भविष्य में गोद लिए गए बच्चों के लिए भी उनकी अभिभावक की भूमिका को स्वीकार करने का मार्ग प्रशस्त करता है। जैसा कि केरल की पहली ट्रांसजेंडर वकील पद्मा लक्ष्मी ने कहा, यह फैसला अन्य ट्रांसजेंडर जोड़ों को बिना किसी पूर्वाग्रह के अपने परिवार को बनाने और जीने के लिए प्रेरित करेगा। यह सामाजिक स्वीकृति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को समाज में बराबरी का स्थान देने में मदद करेगा।

इस फैसले की जड़ें 2014 के सुप्रीम कोर्ट के नालसा (नेशनल लीगल सर्विसेज अथॉरिटी बनाम भारत संघ) फैसले में निहित हैं। नालसा फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को तीसरे लिंग के रूप में मान्यता दी थी और उनके अधिकारों को पुरुषों और महिलाओं के समान माना था। इसने अनुच्छेद 14, 15, 16 और 21 के तहत ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को समानता, भेदभाव से मुक्ति, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सम्मान के साथ जीने का अधिकार प्रदान किया। केरल हाई कोर्ट का फैसला नालसा के इस आधार को और विस्तार देता है, खासकर परिवार और अभिभावक की पहचान

के संदर्भ में। यह दर्शाता है कि कानून को बदलते सामाजिक मूल्यों और लैंगिक पहचान की नई समझ के साथ विकसित होना चाहिए। जस्टिस ज़ियाद रहमान ने अपने फैसले में स्पष्ट किया कि कानून स्थिर नहीं रह सकता; उसे समाज और व्यक्तियों के जीवनशैली में आए बदलावों के अनुरूप ढलना होगा।

इसके अलावा, यह फैसला ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए व्यावहारिक समस्याओं को भी संबोधित करता है। ज़िया और ज़हद ने अपनी याचिका में तर्क दिया था कि जन्म प्रमाण पत्र में उनकी लैंगिक पहचान को गलत तरीके से दर्शाने से उनकी बेटी को भविष्य में स्कूल में दाखिले, आधार कार्ड, पासपोर्ट, नौकरी और अन्य दस्तावेजों के लिए आवेदन में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। कोर्ट ने इस चिंता को गंभीरता से लिया और इसे सामाजिक न्याय के दृष्टिकोण से देखा। यह एक ऐसी मिसाल है, जहां अदालत ने केवल कानूनी तकनीकी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय सामाजिक संदर्भ में न्याय को प्राथमिकता दी।

यह फैसला न केवल कानूनी दायरे में, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी गहरा प्रभाव डालेगा। भारत में ट्रांसजेंडर समुदाय को अभी भी व्यापक सामाजिक स्वीकृति की जरूरत है। जैसा कि कोर्ट ने अपने फैसले में उल्लेख किया, भले ही ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को कानूनी मान्यता मिल चुकी हो, लेकिन समाज को इसे पूरी तरह स्वीकार करने में समय लगेगा। यह फैसला उस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो समाज को ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की वास्तविकताओं को समझने और स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है।

ज़िया और ज़हद की कहानी भी अपने आप में प्रेरणादायक है। दो साल पहले सोशल मीडिया पर उनकी प्रेग्नेंसी की तस्वीरों ने लोगों का ध्यान खींचा था। उस समय उन्हें ऑनलाइन ट्रोलिंग का भी सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। उनकी इस कानूनी लड़ाई ने न केवल उनके लिए, बल्कि उन सभी ट्रांसजेंडर जोड़ों के लिए रास्ता खोला है, जो अपने परिवार को बनाने और उसे कानूनी मान्यता दिलाने का सपना देखते हैं। उनकी वकील पद्मा लक्ष्मी, जो स्वयं ट्रांसजेंडर हैं, ने इस मामले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी पैरवी ने न केवल इस जोड़े को न्याय दिलाया, बल्कि ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए एक सशक्त उदाहरण प्रस्तुत किया।

हालांकि, यह फैसला कुछ सीमाओं के साथ आता है। कोर्ट ने इसे एक 'दुर्लभ और असाधारण' मामले के रूप में देखा और जन्म और मृत्यु पंजीकरण नियम, 1999 में व्यापक बदलाव करने से इनकार कर दिया। इसका मतलब है कि भविष्य में ट्रांसजेंडर दंपतियों को इसी तरह की राहत पाने के लिए अलग-अलग मुकदमे लड़ने पड़ सकते हैं। फिर भी, यह फैसला एक मिसाल कायम करता है, जो भविष्य में कानून में संशोधन और अधिक समावेशी नीतियों के लिए आधार तैयार कर सकता है। केरल हाई कोर्ट का यह फैसला न केवल ज़िया और ज़हद के लिए, बल्कि पूरे ट्रांसजेंडर समुदाय और भारतीय समाज के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। यह लैंगिक पहचान, परिवार और सामाजिक न्याय की नई परिभाषा गढ़ता है। यह हमें याद दिलाता है कि कानून और समाज को एक-दूसरे के साथ कदमताल करना होगा, ताकि हर व्यक्ति को सम्मान और समानता के साथ जीने का अधिकार मिले।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

कबीर जयंती (11जून) विशेष- जीवन को समग्रता प्रदान करता कबीर का चिंतन

संदीप सृजन

भारतीय भक्ति आंदोलन के एक महान संत, कवि और समाज सुधारक थे कबीरदास, जिनके विचार और चिंतन आज भी मानव जीवन को प्रेरणा और दिशा प्रदान करते हैं। उनकी रचनाएँ, विशेष रूप से दोहे और साखियाँ, सरल भाषा में गहन दार्शनिक और आध्यात्मिक संदेशों को समेटे हुए हैं। कबीर का चिंतन न केवल आध्यात्मिकता तक सीमित है, बल्कि यह जीवन के हर पहलू सामाजिक, नैतिक, और व्यक्तिगत को समग्रता प्रदान करता है। उनका चिंतन सत्य, प्रेम, समानता, आत्म-जागरूकता, और निष्काम कर्म जैसे मूल्यों पर आधारित है, जो मानव जीवन को संतुलित और सार्थक बनाते हैं।

कबीर का चिंतन मानव जीवन के सभी पहलुओं को एक सूत्र में पिरोता है। वे न तो केवल आध्यात्मिक गुरु थे, न ही केवल समाज सुधारक, बल्कि एक ऐसे दार्शनिक थे, जिन्होंने जीवन को एक समग्र इकाई के रूप में देखा। उनका चिंतन व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को संतुलित करने का मार्ग दिखाता है। कबीर के चिंतन का मूल आधार सत्य की खोज है। वे मानते थे कि सत्य ही जीवन का आधार है, और इसके बिना जीवन अधूरा है। जब कबीर कहते है-

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके जी में सांच है, ताके जी में आप।

इस दोहे में कबीर ने सत्य के समान कोई तपस्या नहीं और झूठ के समान कोई पाप नहीं बताया। सत्य को अपनाने वाला व्यक्ति न केवल अपने जीवन को शुद्ध बनाता है, बल्कि वह परमात्मा के निकट भी पहुँचता है। कबीर का यह चिंतन हमें आत्म-जागरूकता की ओर ले जाता है, क्योंकि सत्य की खोज बाहरी दुनिया से अधिक भीतरी यात्रा है। वे कहते हैं:

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।

यह दोहा आत्म-निरीक्षण का महत्व दर्शाता है। कबीर का मानना था कि दूसरों में दोष ढूंढने से पहले हमें अपने भीतर झाँकना चाहिए। यह आत्म-जागरूकता जीवन को समग्रता प्रदान करती है, क्योंकि यह हमें अपनी कमियों को सुधारने और बेहतर इंसान बनने का अवसर देती है।

कबीर के चिंतन में प्रेम और करुणा का विशेष स्थान है। वे प्रेम को जीवन का सार मानते थे, जो न केवल व्यक्तिगत संबंधों को मजबूत करता है, बल्कि सामाजिक समरसता को भी बढ़ाता है। उनका एक दोहा है:

प्रेम न बारी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
रजा न रंक प्रेम का, सबके हिय समाय।

इस दोहे में कबीर कहते हैं कि प्रेम न तो खेत में उगता है, न बाजार में बिकता है। यह सभी के हृदय में समान रूप से बसता है, चाहे वह राजा हो या रंक। यह चिंतन हमें निष्कपट और निस्वार्थ प्रेम की ओर ले जाता है, जो जीवन को समृद्ध और संपूर्ण बनाता है। कबीर का प्रेम केवल मानव तक सीमित नहीं था, बल्कि यह ईश्वर और समस्त सृष्टि के प्रति था। उनकी भक्ति में प्रेम और करुणा का समन्वय जीवन को समग्रता प्रदान करता है।

कबीर अपने समय के सामाजिक कुरीतियों, जैसे जातिवाद, धार्मिक कट्टरता, और असमानता, के कट्टर विरोधी थे। उनका चिंतन सभी मनुष्यों को समान मानता था, और वे बाहरी रूढ़ियों को महत्व देने के बजाय आंतरिक गुणों पर जोर देते थे। जैसे-

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।

इस दोहे में कबीर कहते हैं कि साधु की जाति नहीं, उसके ज्ञान को पूछना चाहिए। व्यक्ति का मूल्य उसकी बाहरी पहचान से नहीं, बल्कि उसके ज्ञान और गुणों से होता है। यह चिंतन समाज में समानता और एकता को बढ़ावा देता है, जो एक समग्र और संतुलित समाज की नींव रखता है। कबीर का यह दृष्टिकोण आज के समय में भी प्रासंगिक है, जब समाज में भेदभाव और असमानता अभी भी मौजूद हैं।

कबीर का चिंतन समय के मूल्य और कर्म के सिद्धांत पर भी बल देता है। वे मानते थे कि समय क्षणभंगुर है, और इसे व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। कबीर कहते है-

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।

यह दोहा हमें वर्तमान में जीने और अपने कार्यों को समय पर पूरा करने की प्रेरणा देता है। साथ ही, कबीर कर्म के सिद्धांत को भी रेखांकित करते हैं:

करम गति टारे नहिं टरै, जब लगि घट में प्रान।
जैसा बीज बोइए, तैसो ही फल जान।

इस दोहे में कबीर कहते हैं कि कर्म का फल अवश्य मिलता है। जैसा बीज बोया जाता है, वैसा ही फल मिलता है। यह चिंतन हमें अपने कर्मों के प्रति सचेत रहने और अच्छे कार्य करने की प्रेरणा देता है, जो जीवन को संतुलित और सार्थक बनाता है।

कबीर का चिंतन सादगी और संतोष को जीवन का आधार मानता है। वे लालच और माया के भ्रम से बचने की सलाह देते थे। उनका एक प्रसिद्ध दोहा है:

साईं इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।

इस दोहे में कबीर कहते हैं कि हमें उतना ही चाहिए, जितना हमारे और दूसरों के लिए पर्याप्त हो। यह सादगी और संतोष का संदेश जीवन को तनावमुक्त और सुखी बनाता है। कबीर का यह चिंतन हमें यह सिखाता है कि सच्चा सुख भौतिक संपत्ति में नहीं, बल्कि संतुष्टि और दूसरों की मदद में है।

कबीर का चिंतन निर्गुण भक्ति पर आधारित था, जिसमें वे ईश्वर को निराकार और सर्वव्यापी मानते थे। उनका मानना था कि ईश्वर मंदिर-मस्जिद में नहीं, बल्कि हर हृदय में निवास करता है। वे कहते है-

मोको कहाँ ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं मंदिर, ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलास में।

यहाँ कबीर कहते हैं कि ईश्वर को बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं, वह हमारे भीतर ही है। यह चिंतन हमें आध्यात्मिकता के साथ-साथ आत्मिक शांति की ओर ले जाता है। कबीर की भक्ति बाहरी कर्मकांडों से मुक्त थी और प्रेम, सत्य, और आत्म-जागरूकता पर आधारित थी। यह जीवन को एक आध्यात्मिक समग्रता प्रदान करता है।

कबीर ने वाणी के संयम पर विशेष जोर दिया। वे मानते थे कि मधुर और सकारात्मक वाणी जीवन में शांति और सद्भाव लाती है। उनका एक दोहा है:

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।

इसके साथ ही, कबीर सत्संग के महत्व को भी रेखांकित करते थे। वे मानते थे कि सत्संग मनुष्य को सही मार्ग दिखाता है और उसे भ्रम से मुक्त करता है। उनका यह चिंतन जीवन को नैतिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध बनाता है।

कबीर का चिंतन आज के आधुनिक युग में भी उतना ही प्रासंगिक है। आज का मानव भौतिक सुखों की दौड़ में अपनी आंतरिक शांति खो रहा है। कबीर का चिंतन हमें सादगी, संतोष, और आत्म-जागरूकता की ओर ले जाता है। उनकी शिक्षाएँ सामाजिक समानता, प्रेम, और सत्य जैसे मूल्यों को बढ़ावा देती हैं, जो एक बेहतर समाज की नींव रखते हैं। कबीर का यह दृष्टिकोण हमें यह सिखाता है कि जीवन का सच्चा सुख बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आंतरिक शांति और नैतिकता में है।

कबीर का चिंतन जीवन को एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो आध्यात्मिक, नैतिक, और सामाजिक पहलुओं को संतुलित करता है। उनके दोहे और साखियाँ सत्य, प्रेम, समानता, धैर्य, और संतोष जैसे मूल्यों को रेखांकित करते हैं, जो जीवन को सार्थक और पूर्ण बनाते हैं। कबीर का चिंतन हमें यह सिखाता है कि जीवन का असली उद्देश्य बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आत्मिक शांति, प्रेम, और सत्य के मार्ग पर चलने में है। उनके विचार आज भी हमें प्रेरित करते हैं कि हम अपने जीवन को समग्रता के साथ जिएँ, जिसमें न केवल व्यक्तिगत विकास हो, बल्कि समाज और सृष्टि के प्रति भी हमारा योगदान हो।

क्या हो गया है इन औरतों को?

क्या हो गया है इन औरतों को?
अब ये आईना क्यों नहीं झुकातीं?
क्यों चलती हैं तेज़ हवा सी,
क्यों बातों में धार रखती हैं?
कल तक जो आंचल से डर को ढँकती थीं,
अब क्यों प्रश्नों की मशालें थामे हैं?
क्या हो गया है इन औरतों को —
जो रोटी से इंकलाब तक पहुंच गईं?
कोमल थीं, हाँ, थीं नर्म हथेलियाँ,
अब उनमें तलवार क्यों उग आई?
क्या प्रेम मर गया है इनकी धमनियों में,
या समाज की मार ने उसे लहूलुहान किया?
कर्नाटक की उस स्त्री को देखो —
जिसे अब हर चैनल पर नंगा किया गया,
अपराध की खबर कम थी,
उसके चेहरे की लिपस्टिक ज़्यादा दिखी।
कहां चूक हुई परवरिश में?
ये सवाल अक्सर औरतों के लिए होता है,
मगर जब बेटे खंजर बन जाते हैं,
तो माँ की ममता ही ढाल बना दी जाती है।
क्या स्त्री सिर्फ़ सहने को बनी है?
या वो भी ज़िन्दा प्राणी है —
जिसे मोह भी होता है,
और मोहभंग भी।
कोई नहीं पूछता कि क्यों टूटी वो?
किसने उसके सपनों को कुचला था?
क्यों उसका अंत अपराध में हुआ,
शायद वह भी कभी एक गीत थी...
इन औरतों को कुछ नहीं हुआ है,
ये बस अब मौन नहीं रहीं,
अब वे दोषी भी हैं, न्याय की भूखी भी,
अब वे देवी नहीं — मनुष्य बन रही हैं।
क्या हो गया है इन औरतों को?
कुछ नहीं...
बस उन्होंने 'होना' शुरू किया है।

प्रियंका सौरभ

बदायूं नगर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वारा हिन्दू साम्राज्य दिवस का पर्व धूमधाम से मनाया गया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। बदायूं नगर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वारा हिन्दू साम्राज्य दिवस का पर्व शिव देवी सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज सिविल लाइन बदायूं के प्रांगण में धूमधाम से मनाया गया। जिसमें माननीय नगर संघ चालक डॉ शुभेंद्र जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। मुख्य वक्ता नगर बौद्धिक प्रमुख वेद रत्न जी ने छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए माता जीजाबाई के त्याग और समर्पण की चर्चा की।इस अवसर पर जिला कार्यवाह मून जी सह जिला शारीरिक प्रमुख अनुज जी , नगर कार्यवाह अंकित जी,सह नगर कार्यवाह अभिनव जी, डॉ भास्कर जी, सुधीर जी, मुदित जी आदि स्वयंसेवक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन कुशाल जी ने किया।

मुख्यमंत्री ने वार्षिक रिपोर्ट कार्ड दिया

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: राज्य में भाजपा सरकार एक दिन में एक साल पूरा कर लेगी। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने इस एक साल की उपलब्धियां बताई हैं। उन्होंने कहा कि सरकार इस एक साल में लोगों की उम्मीदों पर खरा उतरने में सफल रही है।मुख्यमंत्री ने केंद्र और राज्य सरकार के एक साल के कामकाज का विस्तृत ब्यौरा दिया। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सबसे बड़ी उपलब्धियां अनुच्छेद 370 को हटाना, तीन तलाक बिल, नारी शक्ति बंधन बिल, कोविड के खिलाफ सही लड़ाई और एकल जीएसटी लागू करना है। विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट के अनुसार मोदी सरकार के कार्यकाल में 27 करोड़ लोग घोर गरीबी की गिरफ्त से मुक्त हुए हैं। 13 साल में देश में घोर गरीबी में रहने वाले लोगों की संख्या 27.1 प्रतिशत से घटकर 5.3 प्रतिशत रह गई है।केंद्र की मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला साल पूरा हो गया है। और इसके भीतर लोगों की जीवनशैली बदल गई है। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत गरीबों को पक्के मकान मुहैया कराए जा रहे हैं, आयुष्मान योजना, नई शिक्षा नीति-2020 का क्रियान्वयन, जनधन योजना का क्रियान्वयन, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ और कई अन्य योजनाओं ने आज भारत में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। ऑपरेशन सिंधुरा के जरिए आतंकवाद के खिलाफ भारत सरकार द्वारा उठाए गए सख्त कदमों ने भारत को पूरी दुनिया में सबसे आगे खड़ा कर दिया है। 'मोदी हैं तो मुमकिन हैं आहोगे'। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने केंद्र की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार को बधाई दी है।

इंसान की अंदर ही अंदर टूटनाऔर खामोशी — एक तफ़सीली तसव्वुर

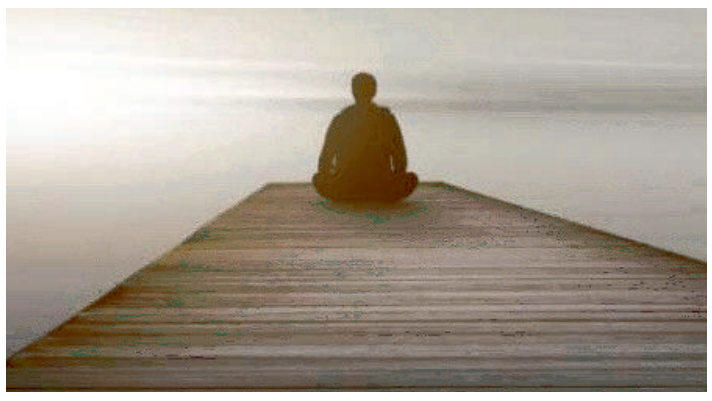

इंसान जब अपनों के रवैयों से टूटता है, तो उसका दर्द लफ़्ज़ों में बयां करना आसान नहीं होता। अपनों से जो उम्मीदें होती हैं, जब वही उम्मीदें चकनाचूर हो जाती हैं, तो दिल की दुनिया वीरान हो जाती है।

इस टूटन का असर सबसे पहले इंसान की रूह पर पड़ता है। वो शख़्स जो कभी हँसता-खिलखिलाता था, अब ख़ामोशी की चादर ओढ़ लेता है। उसकी आँखों में एक अजीब सी उदासी बस जाती है, और उसके लबों पर चुप्पी का ताला लग जाता है।

अपनों का दिया हुआ दर्द सबसे ज़्यादा गहरा और ला-दवा होता है। गैरों के ज़ख्म तो वक्त के साथ भर जाते हैं, मगर अपनों के दिए ज़ख्म उम्र भर रिसते रहते हैं।

इंसान बार-बार सोचता है, ₹आख़िर क्यों?"

उसके सवालों का कोई जवाब नहीं मिलता, और वो अपने ही दिल के अंदर घुटता रहता है।

वो दुनिया से कटने लगता है, महफ़िलों से दूर भागने लगता है, और तन्हाई उसकी सबसे बड़ी हमराज़ बन जाती है।

ख़ामोशी — दर्द की ज़ुबान बन जाती है

जब दर्द हद से बढ़ जाता है, तो इंसान बोलना छोड़ देता है। उसकी ख़ामोशी बहुत कुछ कहती है।

वो ख़ामोशी जिसमें चीखें भी दबी होती हैं,

वो ख़ामोशी जिसमें उम्मीदों की लाशें दबी होती हैं।

लोग समझते हैं कि वो शख़्स ख़ुश है, मगर हक़ीक़त में वो अंदर से टूट चुका होता है।

ऐसे हालात में इंसान एक 'ज़िंदा लाश' बन जाता है।

वो चलता-फिरता है, मगर उसकी रूह मर चुकी होती है।

उसे न कोई ख़ुशी छूती है, न कोई ग़म असर करता है।

वो बस जी रहा होता है, मगर असल में उसकी ज़िंदगी में कोई रंग बाकी नहीं रहता।

अपनों की बेरुख़ी ने इस क़दर तोड़ दिया,

अब दिल में बस ख़ामोशी का आलम रहता है।

मुस्कराहटें भी अब तो अजनबी सी लगती हैं,

हर ख़ुशी से जैसे कोई गिला-शिकवा रहता है।

इंसान की फ़ितरत में मोहब्बत, उम्मीद और अपनापन रचा-बसा होता है। जब यही अपनापन, जिनसे सबसे ज़्यादा उम्मीदें होती हैं, वही लोग अपने रवैयों से दिल तोड़ देते हैं, तो इंसान की रूह तक ज़ख्मी हो जाती है।

ये टूटन कोई आम दर्द नहीं, बल्कि वो कैफ़ियत है जो इंसान को अंदर से खोखला कर देती है।

जिस शख़्स की आँखों में कभी चमक थी, अब वहाँ वीरानी का साया है।

जिसके लबों पर कभी मुस्कान थी, अब वहाँ ख़ामोशी का डेरा है।

अपनों की बेरुख़ी इंसान को ऐसी गहराइयों में धकेल देती है, जहाँ से लौटना आसान नहीं होता।

वो हर रोज़ अपने जज़्बातों से लड़ता है,

हर रात तन्हाई में अपने आंसुओं से बातें करता है। नींद से उसका रिश्ता ख़त्म सा लगता है, और तारे गिनना हर किसी के बस की बात नहीं होती है।

कभी-कभी तो ऐसा महसूस होता है जैसे उसकी मौजूदगी किसी को महसूस ही नहीं होती।

वो अपने ही घर में अजनबी सा महसूस करता है।

ख़ामोशी, दर्द की सबसे मुख़्तसर ज़ुबान बन जाती है।

जब इंसान के पास कोई नहीं रहता,

तो वो अपनी ख़ामोशी से दोस्ती कर लेता है।

उसकी ख़ामोशी में सदियों का दर्द छुपा होता है।

वो बोलता नहीं, मगर उसकी आँखें चीख-चीख कर सब कह देती हैं।

लोग उसकी मुस्कान को देख कर धोखा खा जाते हैं,

मगर उसकी रूह की तन्हाई कोई नहीं समझ पाता।

इंसान बार-बार सोचता है कि,

क्या उसकी ख़ता सिर्फ़ इतनी थी कि उसने अपनों से मोहब्बत की?

क्या उसकी ग़लती ये थी कि उसने किसी से उम्मीदें रखीं?

इन सवालों के जवाब उसे कभी नहीं मिलते,

और वो अपने ही सवालों में उलझा रह जाता है।

उर्दू में एक नज़्म।

रूटूट कर भी मुस्कुराना, ये हुनर किसे आता है,
अपनों की बेरुख़ी में भी वफ़ा निभाना किसे आता है।

हर लम्हा दिल के अंदर इक सदा सी उठती है,
मगर ख़ामोशी में दर्द छुपाना किसे आता है।
ज़िंदा लाश बन कर जीना, ये भी एक फ़न है,
वरना टूटे दिल को संभालना किसे आता है।₹

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह
सहज हरदा मध्य प्रदेश

सपनों के लिए अतीत से फरेब दुखत है।

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

वर्तमान में शिलांग की घटना सबसे दुखत है। यहां कैसा प्यार इश्क व मोहब्बत है जो रिश्तों के सात जन्मों के बंधनों को शर्मसार कर दिया गया। राजा रघुवंशी की हत्या जिस प्रकार शिलांग में की उस कड़ियां जैसे जैसे समाने आ रही है। उसे देखते ऐसा लगता है कि जब शैतानी शक्ति या कहें नाकारात्मकता हावी हो जाती है। तो इस प्रकार एक घटना ने कई परिवारों को नुक्सान पहुंचा दिया है। प्यार इश्क मोहब्बत की झूठी भूमिका के इस चक्रव्यूह ने किस प्रकार साजिश को जन्म दिया गया। इस साज़िश में एक शादीशुदा लडकी ने अपने पति यानि एक बेगुनाह लड़के की हत्या करावा दी ? जो फेरे सोनम ने सात जन्मों के लिए थे , वह खुद उसे चार दिन नहीं चला पाईं और अपने पति के पीठ में खंजर घोंप दिया। यहां कैसा जुनून है युवा पीढ़ी का जो कुछ भी करने से पहले अपने विवेक का पक्ष नहीं देखते और इस प्रकार के शर्मसार करने वाले कृत को अंजाम दे देते हैं। प्यार में इस तरह का पागलपन मानवता के लिए घातक है। इससे बहार निकलने के लिए परिजन भी अपने बच्चों के साथ संवाद लगातार बनायें रखे। नहीं तो इस प्रकार की अनहोनी कहीं भी कैसे भी हो सकती है। समाज की पढ़ी-लिखी युवा पीढ़ी जो अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर मां बाप व परिजनों के आंखों में धूल झोंक रही है वह ग़लत है। जो खुले विचारों से अपने आप को लिव इन रिलेशनशिप या अन्य प्रकार की विकृतियों के रिलेशनशिप में रहते हैं वह सुरक्षित वातावरण में नहीं है। अब तक समाज यही मान रहा था। लेकिन अब सात फेरे में बंधकर जब प्रेमी के साथ मिलकर अपने पति को मर दे, तो फिर रिश्तों का क्या सार है ? जब सात जन्मों के बंधनों को यूं तोड़ा जा रहा है तो फिर विश्वास किस पे किया जाये। इस प्रकार की घटनाएं मानवीय मूल्यों के हनन की जीती-जागती कहानी है। अंधे प्रेम के मायाजाल में कई परिवारों का दिल तोडा जाना समाजिक मार्यदाओ का पूर्ण रुप से झरन ही कहा जा सकता है। शादी का एक पवित्र रिश्ता पति-पत्नी का होता है जो जन्मों के बंधे हुए बंधनों के रिश्ते हैं। जो कुंडली के सभी ग्रहों नक्षत्रों के साथ साथ सभी गुणों का मिलान करा के बंधे गये संबंध आज शिलांग की मर्डर मिस्ट्री बन गई ? सोनम का वह बेवफा वाला स्वरूप उस अंधे प्यार ने सब रिश्तों की बलि चढ़ा दी। किस प्रकार अपने प्रेमी की मदद से जायज़ रिश्तों का दम घोंट दिया गया। किस प्रकार पीछे से कुलडी से मर कर निर्मम तरीके से हत्या की गई। जिसे देखकर दिलदहला जायें , पर उन हत्या में शामिल सभी लोग और सोनम के हाथ नहीं कांपे। वह तो अपने सपनों के चक्कर में अतीत को भूल गई। उसने तो सोच लिया था कि विधवा बन कर फिर दुसरी शादी अपने प्रेमी के साथ करेंगी। आज उन सभी लोगों ने जो राजा रघुवंशी की हत्या में शामिल थे उन्होंने रिश्तों के साथ आदमी से आदमी के व्यवहार व स्नेह और मैत्री के संबंधों को भी ज़रा सी लालच के चक्कर में तार तार कर दिया। इतना शातिर व चालक इंसान हो गया है आज बदल गया है। कवि प्रदीप जी ने बरसों पहले लिखा था कि देख तेरे संसार की हालात क्या हो गई भगवान कितना बदल गया इंसान, सूरज ना बदला चांद ना बदला पर बदल गया इंसान। युवा पीढ़ी का ऐसा बदलाव किस का है जो मानवीय मूल्यों व रिश्तों हत्या कर रहे हैं। प्यार इश्क मोहब्बत के साथ साथ रिश्ते संस्कार व संस्कृति आज सभी कलंकित हो रहीं हैं । इस घटना से समय के इस बदलाते चक्रव्यूह में समाज में आज बहुत गुस्सा है। इस के प्रति अब जागृक रहने की आवश्यकता है। वर्तमान में ऐसा बदलता कल्चर हमारे लिए व समाज के लिए भी ठीक नहीं है। युवा पीढ़ी अपने सपनों के लिए अतीत से फरेब ना करें तो ही अच्छा होगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023